ग्रान्त महासागर

वह शि...
धर्माचरण
के कारण
रहित था।
में ...

लेखक :

स्वरूप पाठक एम० ए०

प्रकाशक—

पुस्तक मन्दिर, मथुरा। मू० २॥)

प्रकाशक—
पुस्तक मन्दिर
मथुरा।

मुद्रक—
आलोक प्रिन्टर्स
गुड़हाई बाजार,
मथुरा।

दृष्टान्त महासागर

१—सफलता का मार्ग

एक महात्माजी अपने शिष्य को साथ लेकर तीर्थाटनको निकले वह शिष्य बड़ा गुरुभक्त एवं सुयोग्य था। गुरुजी की सेवा करना तथा धर्माचरण करना ही एक मात्र उसका एक कार्य था। गुरुजी के सतसंग के कारण उसका हृदय अत्यन्त पवित्र एवं सारे सांसारिक व्यसनों से रहित था। एक दिन घूमते घूमते वह गुरुजी के साथ एक सुन्दर नगर में पहुंचा। नगर के पास ही एक अत्यन्त रमणीक बगीचा देख गुरुजी ने शिष्य से कहा पुत्र! यहीं पर अपना पड़ाव डाल देना चाहिये क्यों- कि यह स्थान नगरके समीप भी है तथा नगरसे अलग भी। गुरुभक्त शिष्य ने गुरूजी की आज्ञा को मानकर उसी स्थान पर अपना डेरा जमा दिया। इसके पश्चात् गुरूजीने कहा पुत्र जाओ और कुछ भोजन के लिए नगरमें जाकर भिक्षा मांग लाओ। शिष्य गुरूजी की आज्ञा का पालन कर भिक्षा लेने के लिए नगर की ओर चल पड़ा।

शिष्य सुन्दर सुगठित शरीर वाला, विशाल वक्षस्थल युक्त एवं सुन्दर, सुस्वरूप गोरे रंग का नवयुवक था। ब्रह्मचर्य के कारण उसका चेहरा चमक रहा था। जिस समय वह नगर में भिक्षा मांगने गया तो अचानक उसकी दृष्टि एक नवयुवती पर पड़ी जो बहुत सुन्दर थी तथा उम्र २० वर्ष से अधिक नहीं थी। उस युवती ने ब्रह्मचारी को भीख मांगते देखकर बुलाया और कहा महात्माजी! भीख ले जाइये। ब्रह्मचारी शुद्ध मन का व्यक्ति होने के कारण उनके मना- भावों को नहीं पहिचान पाया। भिक्षा देने के पश्चात् युवती ने कहा महाराज! आप कल भी यहीं से भिक्षा ले जाइयेगा। अपनो तथा गुरूजी दोनों को तृप्ति लायक पर्याप्त सामिग्री प्राप्त कर शिष्य गुरूजी के पास लौट गया।

गुरूजी ने शिष्य को शीघ्र ही वापिस लौट कर आया हुआ देख कर प्रश्न किया—पुत्र ! बड़ी जल्दी लौट आये। शिष्य ने उत्तर दिया महाराज, यह नगर बड़ा सुन्दर है। यहाँ बड़े धर्मात्मा मनुष्य रहते हैं। एक मां ने मुझे बुलाकर हमारी तृप्ति लायक पर्याप्त सामिग्री दे दी है और इसे ही लेकर मैं आगया हूँ।

दूसरे दिन शिष्य जब भिक्षा के लिए गया तो देखा कि वह युवती दरवाजे पर खड़ी हुई उसकी प्रतीक्षा कर रही है। उसने ब्रह्मचारी को बुलाकर उसे बना बनाया बहुत सुन्दर भोजन दे दिया और कहा कि कल भी आप यहीं से भोजन ले जाइयेगा। जब भिक्षा की सामिग्रीं शिष्य ने गुरूजी के सामने रखीं तो गुरूजी अत्यन्त प्रसन्न होकर बोले--बेटा, आज तो बहुत अच्छा सामान लाये हो।

तीसरे दिन जब भिक्षा मांगने के हेतु शिष्य नगर में गया तो पुनः उस सुन्दरी को प्रतीक्षा करते हुए देखा। ब्रह्मचारी को देखकर वह सुन्दरी बोली-महाराज, आप आ गये मैं आपकी ही बाट देखरही थी। ब्रह्मचारी को अन्दर बुलाकर उसने कहा महाराज मैंने आज आपके लिए खीर इत्यादि मिष्ठान्न बनाये हैं। आप यहीं भोजन कर लीजिए। शिष्य ने उत्तर दिया—देवी,मेरे गुरूजी जो कुछ मुझे अपने हाथ से देते हैं उसी को ही मैं ग्रहण करता हूँ। सुन्दरी ने कहा कि आप गुरूजी के लिए भोजन ले जाइये और आप यहाँ भोजन कर लीजिये। परन्तु शिष्य ने मना ही किया और कहा कि गुरूजी के हाथ का ही दिया हुआ भोजन करता हूं। हारकर युवती, ने खाना उस ब्रह्मचारी को दे दिया और कहा महाराज, आपके नेत्र बहुत सुन्दर हैं। ब्रह्मचारी शान्त भाव से भिक्षा लेकर चला गया गुरूजी ने सुन्दर भोजन सामिग्री को देखकर शिष्य की प्रशंसा करते हुए उसे खाना दिया परन्तु शिष्य के हृदय में इस समय एक विष से बुझा हुआ तीर लग चुका था। वह व्याकुल था। उसने उत्तर दिया महाराज इस समय मेरी तबियत ठीक नहीं है अतः मैं भोजन नहीं करूँगा। शिष्य के इस उत्तर को सुनकर गुरूजी ने भी विशेष आग्रह नहीं किया

दूसरे दिन गुरूजी से भिक्षा मांगने के हेतु आज्ञा प्राप्त कर शिष्य ने एक एकांत स्थान में जाकर चाकू से अपनी आंखें निकाल कर एक लाठी का सहारा लेकर अपने भक्त के यहाँ का रास्ता सँभाला युवती भी ब्रह्मचारी की प्रतीक्षा कर रही थी परन्तु सारा दिन बीत गया ब्रह्मचारी के दर्शन उसे प्राप्त न हो सके। साँयकाल के समय अचानक उसे एक अन्धा एक हाथ में लाठी लिए दीवालों का सहारा लेते हुए आता हुआ दिखलाई दिया जो कि रंग रूप में उसी ब्रह्मचारी से मिल रहा था परन्तु उसके सारे मुँह पर एवं कपड़ों पर खून बह रहा था। धीरे धीरे वह महात्मा अपने भक्त के द्वार तक आ पहुँचे। युवती ने घबड़ाकर ब्रह्मचारी को देखकर पूछा—महाराज यह क्या हुआ। ब्रह्मचारी ने कहा—मां, तुम्ही ने तो कहा कि यह नेत्र बड़े सुन्दर हैं तथा आपको अच्छे लगते हैं। लीजिए, इन शब्दों के साथ में उसने अपने हाथ को आगे बढ़ाया। युवती ने हथेली पर दोनों नेत्रों को रखे हुए देखकर ब्रह्मचारी के चरण पकड़ लिए और भगवान की भक्त बन गई।

(सभी प्रकार के आकर्षणों से चित्त को अलिप्त रख कर केवल ध्येय मार्ग को दृष्टिमें रखने वाला और उसे प्राप्त करने का निरन्तर प्रयत्न करने वाला मनुष्य ही सफलता प्राप्त कर सकता है।)

२—ठीक रास्ता

एक दिन एक बुड्ढा और उसका बेटा एक टट्टू को साथ में लिए हुए बाजार की ओर जा रहे थे। जब वे अपने गांव से कुछ दूर आगे निकले तो कुछ आदमी आपस में खड़े हुए वार्तालाप कर रहे थे। जब उन्होंने इस बुड्ढे और उसके लड़के को टट्टू के साथ में देखा तो देखकर बोले—देखो, यह कितने बेवकूफ़ है कि घोड़े के साथ होते हुए भी पैदल चल रहे हैं। बूढ़े ने उस बात को सुनकर अपने लड़के

को टट्टू पर बिठा दिया और आप पैदल चलने लगा। आगे कुछ आदमी और मिले उन्होंने कहा कि यह देखो अब तो पूर्ण कलियुग आगया। यह जवान लड़का तो घोड़े पर बैठा जा रहा है और बेचारा बूढ़ा पैदल घिसट रहा है, इसे शर्म नहीं आती। लड़के को यह शब्द बहुत चुभे और उसने अपने बूढ़े बाप से कहा—पिताजी, आप बैठ जाइये, मैं पैदल चला चलूंगा। अब बूढ़ा घोड़े पर बैठ गया और लड़का पैदल चलने लगा। जब वे कुछ दूर आगे निकल गये तो कुछ आदमियों ने उन्हें देखकर कहा—देखो यह बूढ़ा किसान निर्दयी है कि बेचारा लड़का तो पैदल चल रहा है और यह घोड़े पर बैठा हुआ है। बूढ़े ने विचार किया कि अब दोनों को ही बैठ कर चलना चाहिए। अब दोनों बाप और बेटे घोड़े पर बैठ कर चलने लगे। जब वे शहर के पास पहुँचे तो आदमियों ने कहना शुरू किया कि यह कितने बेरहम हैं। बेचारा टट्टू बोझ के कारण दबा जा रहा और यह दोनों बड़े आराम से बैठे हुए हैं। इन्हें तनिक मात्र भी दया नहीं है। जब बाप बेटे ने यह सुना तो दोनों ने पैदल चलना आरम्भ कर दिया। यह संसार ऐसा स्थान है जहाँ मनुष्य को किसी भी प्रकार चैन नहीं है। जैसा भी वह कार्य करता है संसार उसी में मीन मेख निकालना प्रारम्भ कर देता है। अत. संसार में जो अपनी बुद्धि के अनुसार ठीक बैठता हो और अच्छा हो वही मार्ग निश्चय करके उसी का अनुकरण करना चाहिये।

(संसार की आलोचना से घबड़ाने वाला मनुष्य न किसी निर्णय पर पहुँच सकता है न कोई लाभ ही उठा सकता है।)

३—संत

तुलसी संत सुअम्ब तरु फूल फलहिं पर हेत।
इतते वे पाहन हनै उतते वे फल देत॥

गङ्गाजीके किनारे एक ऋषि बैठे हुए अपना नित्यकर्म पूजा पाठ

कर रहे थे। जब कि पूजा पाठ में संलग्न थे अचानक एक बिच्छू आया और उसने महात्माजी के डंक मार दिया। महात्माजी ने उसे थोड़ा सा जल डालकर हटा दिया और अपने पूजा पाठ में पहिले की भांति पुनः मग्न हो गये बिच्छू फिर महात्माजी के पाँव पर चढ़ आया तथा उनकी जंघा पर ,डंक मार दिया। महात्माजी का ध्यान भंग हुआ। उन्होंने फिर बिच्छू को शरीर से हटा दिया और पूर्व-वत अपने ध्यान में लग गये। परन्तु बिच्छू पुनः महात्मा जी के शरीर पर चढ़ आया और पहिले की भांति डंक भी मार दिया। फिर भी महात्माजी ने उस बिच्छू को अपने शरीर से दूर कर दिया। इस सम्पूर्ण घटना को एक पुरुष बड़े कौतूहल से देख रहा था। उसने महात्मा जी से प्रश्न किया—महाराज ! महाराज ! जब यह आपको बार बार कष्ट दे रहा है। फिर भी आपने उसे नहीं मारा। शास्त्रों में भी तो लिखा है–'शठं प्रति शाठ्य समाचरेत्'—हनते को हनिये और पाप दोष न गिनिये ! महात्माजी ने उत्तर दिया—नहीं, यह बात नहीं है । वह यह सब कुछ समझ सोच कर नहीं कर रहा है। यह तो उसका स्वभाव ही है । जब वह अपने स्वभाव को नहीं छोड़ता तो फिर हमारा स्वभाव क्षमा करना है उसे हम कैसे छोड़ सकते हैं।

४—नासमझी

लखनऊ शहर में एक लालाजी व्यापार के लिए कुछ सामान खरीदने गये उन्होंने विचार किया कि एक पन्थ दो काज यहाँ सिद्ध हो सकते हैं। पहिले तो व्यापारका काम हो जायगा और दूसरे में गोमती जी में भी स्नान कर लूंगा। उन्होंने अपना सामान एक सुन्दरी धर्म-शाला ढूंढ़कर रखदिया और गोमतीजी को स्नान करने चलदिये जब लालाजी गोमती नदी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने एक नाई को हजामत बनाते हुए देखकर सोचा कि उससे हजामत ही बनवालूं। अगर कहीं

किसी सैलून बगैरह में फँस गया तो वह लखनऊ है न जाने क्या देना पड़े। लालाजी ने लखनऊ की नजाकत और नफासत से के बारे में भी बहुत कुछ सुन रखा था। सोचा कि मैं तो वह तरीके भी नहीं जानता हूं अच्छा यहीं है कि मैं यहीं हजामत बनवा लूँ। उन्होंने नाई से कहा—अरे भाई हमारी हजामत बनादो हम तुम्हें कुछ देदेंगे। नाई ने लाला को सामने बिठाकर उनकी हजामत बना दी। जब हजामत बन चुकी तो नाई को लालाजी ने निकालकर एक चवन्नी दी। नाई भी पूरा लखनवी था। उसने लालाजी से कहा—आपने तो कहा था कि कुछ देंगे। मैं तो यह नहीं लेता। मैं तो कुछ लूँगा। लालाजी ने सिटपिटा कर उसे आठ आने निकालकर दिये। परंतु वहतो पूरा बनाहुआ था। उसने सोचरखा या कि बाद में लालाजी से दस पाँच रुपये में फैसला कर लूँगा। आठ आने पैसे देखकर नाई ने कहा लालाजी! 'कुछ' लाइये 'कुछ' मैं आपके पैसे वैसे नहीं लूंगा। अब लालाजी घबड़ाने लगे। परन्तु उन्हें इतनी देर में एक अक्ल सूझ पड़ी और नाई से कहा कि हम उस धर्मशाला में ठहरे हुए हैं हमारे साथ चलो और हमारे रहने की जगह देखलो। कल आकर हमारे पास से, 'कुछ, ले आना नाई लालाजी के साथ गया और स्थान देखकर चला आया। दूसरे दिन लालाजी के पास जब नाई कुछ लेने के लिए गए तो लालाजीने कहा-अरेभाई लेना देना तो बाद में होता रहेगा। गर्मी के दिन हैं बर्फ रक्खी हुई है और चींनी भी रक्खी है।। उस अलमारी में से दही निकालकर लस्सी बना कर तो पीलो। जब तुम हमारे रहने के स्थान पर आये हो तो कम से कम इतनी खातिर तो करनी चाहिये। नाई भी अकड़ करके अलमारी में से दही का बर्तन उठा लाया। उस दही के बर्तनमें लालाजी ने कुछ पिसा हुआ कोयला और मिट्टी मिला कर डाल दी थी। नाई ने दही देखकर कहा कि यह दही तो खराब है इसमें कुछ पड़ा हुआ है। लालाजी ने उत्तर दिया—भाई दही को उसी अलमारी में रखदो और 'कुछ' को तुम निकाल कर लेजाओ। नाई ने जब देखा कि अरे यहां पर आठ आने क्या चार आने भी नहीं मिल रहे हैं तब उसने

लालाजी से क्षमा मांगी और कहा कि मेरी मजदूरी के चार आने पैसे ही मुझे दे दीजिये । लालाजी ने समझा कर कि बाद में कभी किसी से ऐसी जिद मत करना उसे चार आने पैसे दे दिये ।

(संसार में प्रत्येक बात सोच समझ कर ही कहनी चाहिये। बिना सोचे जो कह देता है उसे बड़ी आपत्ति उठानी पड़ती है।

५—चुगलखोर

नारदो कलहः प्रिय । इस बात को सभी जानते हैं कि महात्मा नारद को कलह बड़ी अच्छी लगती है । नारद लड़ाई करवाने की कला में बहुत ही निपुण हैं । एक दिन जब वे घूमते २ एक नगर में पहुँचे तो उन्हें मालूम हुआ कि अमुक सेठ और उसकी स्त्री में बड़ा प्रेम रहता है । सम्पूर्ण जीवन में अभी तक उनमें कभी लड़ाई नहीं हुई है नारद महात्मा ने विचार किया कि यहां पर अपनी चतुराई की परीक्षा करनी चाहिए। उन्होंने सेठ जी के घर का पता पूछा और उनकी घर की राह ली । जब नारद महात्मा सेठजी के घर पर पहुँचे तो उन्होंने सेठानी जी के दर्शन किये सेठानी से साधू वेषधारी नारदजी ने भिक्षा मांगी । जब सेठानी ने भिक्षा डाली तभी नारदजी ने कहना प्रारंभ किया ! बच्चा तुम बड़ी भागवान हो तुम्हारे मस्तक से मालूम पड़ता है ला तेरा हाथ देखूं । सेठानी जी ने हाथ आगे बड़ा दिया नारदजी ने दस-बीस इधर उधर की बातें बतला कर कहा कि एक बात है तुम्हारे सेठजी नुनखुरे हैं सेठानीजी बोलीं बाबा नुनखुरा किसे कहते है । नारदजी कहने लगे कि भाई, तुम नुनखुरा भी नहीं जानती । जिसके चाटने से नमक का जैसा स्वाद आये । अगर तुम्हें इसमें विश्वास न हो तो रात्रि को जभी सेठजी सो जांय । तब उनकी पीठ चाटकर देख लेना कि महात्मा झूठ, कहते थे या सचकहते थे । इतना कहकर नारदजी ने सेठजी की दूकान की ओर कदम बढ़ाये । सेठजी को देखकर नारदजी ने एकदम कहना प्रारम्भ

किया वाह लाला, तुम तो बड़े ही भाग्यशाली हो। तुम्हारी और तुम्हारी स्त्री की तो खूब पटती होगी। पटे भी क्यों नहीं तुम वैश्य वर्ण के ठहरे और वह अगले जन्म की कुतिया। इस बात को सुनकर लालाजी आपे से बाहर होगये और बोले अरे महात्मा, बड़ा तू मक्कार है। नारदजीने कहा—ठीक है लालाजी परन्तु मैं आपसे कुछ मांग तो नहीं रहा हूँ अगर तुम्हें विश्वास न हो आप रात्रि को जागते रहिये देखिये वह रोजाना तुम्हें चाटती है या नहीं अगर वह तुम्हें चाटती होगी तब तो उसे कुतिया मानोगे।

रात्रि को दुकान बन्द करने के पश्चात् लालाजी घर पर पहुंचे और भोजन कर सोगये। परंतु महात्मा के शब्द अभी लालाके कानों में गूँज रहे थे इसलिए उन्हें नींद नहीं आई उन्होंने नींद का बहाना बनाया। सेठानी ने यह जाना कि लालाजी सोगये हैं उनके पीठ को चाटना प्रारम्भ किया जैसे सेठानी ने लालाजी की पीठ को चाटा वैसे ही लालाजी ने पास में रक्खे हुए डण्डे से उसकी मरम्मत प्रारम्भ कर दी और उस दिन से दोनों में इतना मनमुटाव हो गया कि जीवन भर एक दूसरे से बातें भी नहीं की।

चुगलखोर व्यक्तियों का कभी विश्वास नहीं करना चाहिये। प्रेम में कलह उत्पन्न करना उसके लिये सहज सा कार्य है।)

६— समझ

एक बार एक बुढ़िया बीमार पड़ी। उसके दोनों बेटों ने उसे बीमार देखकर सोचा कि माँ को अब डाक्टर के पास जाकर दवाई लानी चाहिये। क्योंकि बूढ़ा शरीर है न जाने हाल ही में क्या हो जाय ऐसा सोच कर उन दोनों लड़कों ने डाक्टर की दुकान का रास्ता नापा। जब वे दोनों डाक्टर के पास पहुंचे तो उन्होंने डाक्टर से कहा डाक्टर साहब हमारी माताजी बीमार पड़ी हैं। आप औषधि दे दीजिये। डाक्टर ने औषधि एक शीशी में भरके दे दी और कहा कि

दवाई खूब अच्छी तरह जोर से हिलाकर पिलाय। लड़कों ने पूछा—डाक्टर साहब क्या चारों खुराकों पर ही हिलाना पड़ेगा, हां और क्या एक पर। दवाई बड़ी सच्ची है इसके पिलाते ही बुखार उतर जायगा। अगर एक खुराक से न उतरे तो आधे २ घण्टे बाद सभी खुराकें दे देना। घर पर जाकर लड़कों ने पहिली खुराक तो तभी दे छोटे लड़के ने कहा भाई, तुम्हें इस बात का भी ख्याल है कि डाक्टर साहब ने क्या कहा था। डाक्टर साहब ने चलते २ कहा था कि दवाई हिला कर पिलाना। बस अब क्या था, बड़े भाई ने झट से मां के दोनों हाथ पकड़ लिये और दूसरे ने मां की दोनों टांगों को कस कर पकड़ लिया और बड़े जोर से हिलाने लगे। मां ने चीखना शुरू किया कि अरे, मर जाऊंगी, मुझे मत हिलाओ। पर दोनों भाई अच्छी तरह से जानते थे कि दवाई पीने को तो मरीज मना करते ही हैं। हम भी तो दवाई नहीं पीते थे। परन्तु बड़ी बीमारियों में मरीज की नहीं सुनी जाती है। उन दोनों ने मां को अच्छी प्रकार से हिलाना प्रारम्भ किया और जब देखा कि यह तो बेहोश होने लगी तब रुक कर दवा पिलादी। मां के अन्दर अभी थोड़ी सी सांस बाकी रह गई थी अतः फिर थोड़ी देर में जब वह होश में आई, तो लड़कों ने सोचा कि इस की दवाई का असर उतर गया इसे फिर दवाई देनी चाहिये। दोनों भाइयों ने फिर माँ को पकड़ा अबकी चार झटकों में खतम कर दिया।

(प्रत्येक बात को भली भांति समझ कर फिर उसके अनुसार काम करना चाहिये।)

७—स्वर्ग नरक सब एक समाना

चार कहार पालकी ढोने का काम किया करते थे। उनको एक दिन उत्सव में भगवानकी मूर्तिको उठाने का अवसर प्राप्त हुआ। जब वे भगवान के डोले को ले जा रहे थे तो अचानक भगवान के चरणोंका जल उनके ऊपर आगया। जब वे चारों मरे तो उन्हेंस्वर्ग मिला। चारों

को स्वर्ग में जाकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। उन्होंने कहा कि एक दिन भगवान के डोले को उठाने से मोक्ष मिल गई और उस बोझा उठाने से पीछा छूटा। जब वह यह बातें कर ही रहे थे कि इतने में एक भगवान का सेवक बुलाने आया और पूछने लगा क्या तुम ही कहार हो जो अभी यहां आये हो। कहारों ने उत्तर दिया—जी हमी हैं। उसने कहा आपको भगवान ने बुलाया है क्योंकि भगवान का डोला जा रहा है। उसे उठाने के लिये चार कहारों की आवश्यकता है। कहार सोचने लगे कि इससे तो हमारा वही लोक अच्छा जहाँ पर कि हमें सब घरवालों के साथ में तो रहना मिलता था बोझा तो यहाँ भी उठाना पड़ता है और वहां भी उठाना पड़ता है। जैसा स्वर्ग वैसा ही हमारे लिये नरक।

८—आसार संसार

न वारे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवत्या-
त्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवंति !

एक धनी का पुत्र बड़ा ही भक्त था। उसका सारा समय साधु सेवा में ही व्यतीत होता था। एक दिन एक माहात्माजी उसे उपदेश दे रहे थे तो उसी बीच में उन्होंने कहा—बेटा संसार में कोई किसीका नहीं है सारा संसार व्यर्थ है यह सभी नाते झूठे हैं।। सभी का स्वार्थ मय प्रेम होताहै उस धनी के पुत्र ने कहा-महाराज मैं नहीं विश्वास कर सकता। मेरे माता पिता और मेरी स्त्री सभी का मेरे प्रति अटूट सम्बन्ध और निस्वार्थ प्रेम है। महात्माजी बोले—बेटा हम तुम्हें प्राणायाम चढ़ाने की क्रिया बतलाते हैं तुम इसे सीखलो और अपने घर पर यह कहना प्रारम्भ कर दो कि जब मैं मरूँ तो उस महात्मा को बुला लेना। तब आठ दिन पश्चात हम तुम्हें सभी का सम्बन्ध दिखलावेंगे उसने ऐसा ही किया। आठवें दिन उसने अपने घर पर जाकर प्रणायाम चढ़ा लिया। जब घर वालों ने उसकी यह

हालत देखी तो वे बड़े घबड़ाये। मां कहने-लगी अरे मुझसे चाहे कोई मेरी जान लेने पर इसकी जान बचा दे। पिता और स्त्री कहते थे मैं अपनी जान इसकी जान के बदले में देदू। इसी बीच में माँ को उस महात्मा का ध्यान आया लड़के का पिता उस महात्मा को बुलाकर लाया महात्माजी ने सभी को इस प्रकार बिलाप करते हुए देखा और सुना कि इनमें से प्रत्येक जान देने को तैयार है। उन्होंनें कहा कि भाई गिलास जल लाओ। उस जल में महात्मा जी ने कुछ बूरा घोलकर कहा भाई जो इसे अपनी उम्र दे सकता हो वह इसे पीले इसे पीने वाला आदमी मर जायगा और यह जिन्दा हो जायगा। पहिले उसने माता पिता से पूछा कि आप पी लीजीये। वे कहने लगे महाराज पहले आप हमारी जन्म पत्री देख लीजिये कि हमारे और पुत्र होंगे या नहीं। हमारी तो अभी ऐसी उम्र है कि पुत्र इत्यादि हो सकते हैं। माँ बाप का उत्तर प्राप्त कर महात्मा जीने उसकी स्त्री से पुछा कि तुम्हारा क्या विचार है। उसने उत्तर दिया कि मेरे माँ बाप धनी हैं मैं तो वहां अपना जीवन अच्छी प्रकार से बिता सकती हूँ लड़के ने जब यह सारा वृतान्त सुना तो उसकी समझ में आ गया कि यह सारा संसार झूंठा है।

६—अकल अकल का फेर और लाख टके का सेर

एक दिन एक वैश्य का पुत्रकथा सुनने गया वहां उसने सुनाकि सुखाद गिरजापत अर्थात ब्राह्मण अग्नि मुख हैं। इसका उसने आशय निकाला कि ब्राह्मण के मुख से अग्न पैदा होती है जब वह एक कार्य वश गाँव से शहर जा रहा था तो रास्ते में उसे चिलम पीने को आग की आवश्यकता पड़ी और बिचार किया कि क्या किया जाय।

इतनी ही देर में उसकी निगाह मन्दिर में लेटे हुए एक ब्राह्मण पर पड़ी। उसको कथावाली बात ध्यान में आगई तथा पास में रखा एक उपला (कंडा) हाथ में उठाकर ब्राह्मण महाराज के मुंह में ठूंस दिया ब्राह्मण महाराज ने क्रोधित होकर वैश्य पुत्र को उसकी उद्दंडता पर पीटना आरम्भ किया थोड़ी देर में कुछ आदमी इकट्ठे हुए उन्होंने इस गुस्ताखी का कारण पूछा तो वैश्यने सब स्पष्ट बतला दिया। सभी उसकी मूर्खता पर हंसने लगे और कहने लगे कि अकल अकल का फेर और लाख टके का सेर।

(प्रत्येक बात को तर्क की कसौटी पर कस लेना चाहिये)

१०—अति लोभ

अति लोभो न कर्त्तव्य।

पारस पत्थर की बटिया के स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है एक महात्माजी ने अपने शिष्य को यह पारस की बटिया आठ दिन के लिये दी और कहा कि इससे तू लोहा से सोना बनाले ताकि तुझे फिर मुझसे कुछ मांगने की आवश्यकता न पड़े। इस बटिया को लेकर जब शिष्य घर में आया तो विचार किया कि मैं बाहर से काफी लोहा मंगालूं ताकि मेरे पास खूब सोना होजायगा। ऐसा विचार कर उसने लोहा मंगाने के लिये बाहर आदमी भेज दिए। किसी कारण से सात दिन तक लोहा न आ सका। आठवें दिन जब बाबाजी १२ बजे आये तो उन्होंने अपनी बटिया को मांगा। उसी समय आदमी आकर बोला लालाजी आपके लोहे की गाड़ियां अगई हैं। लालाजी ने कहा महाराज अभी एक घन्टे भर में मैं आपको दे दूंगा। महात्मा ने मनाकर दिया। फिर लालाजी ने सोचा कि घर के ही लोहे को सोना बना लिया जाय परन्तु महात्माजी ने तुरन्त ही उसके हाथ से पारस की बाटिका छीन ली और बेचारे लालाजी भी सोचने लगे कि अब पछिताये क्या होता है जब चिड़िया चुग गई खेत।

इस दृष्टान्त का आशय यह है कि परमात्मा स्वरूप महात्मा ने आत्मा स्वरूप शिष्य को आठ दिन के लिए अर्थात् इस जीवन के अल्प काल के लिए देह स्वरूप यह पारस की बटिया दी है। उसका सद्प्रयोग कर इस सांसारिक माया मोह के चक्कर से दूर कर अपने जीवन को निभाना चाहिये ऐसा करने के पश्चात् मनुष्य सुवर्ण रूप मोक्ष को प्राप्त कर सकता है अन्यथा दृष्टांत में बतलाए हुए शिष्य भली भांति अधिक लोभ में फँसने से डूब ही जाता। वह इस संसार सागर से पार नहीं हो सकता। लोभ बहुत ही बुरी वस्तु है कहा भी है।

लोभो न कर्तव्यं लौभं नैव परित्यजेत्

११—दाता ✓

जाको राखे साइयां मार सके नहिं कोय।
बाल न बांका करि सके जो जग बैरी होय॥

एक बहेलिया जंगल में शिकार के लिए गया वहाँ पर उसे एक कबूतर और कबूतरी का जोड़ा घोंसले में बैठा अपने बच्चों के साथ आनन्द मनाता हुआ दिखाई दिया। बहेलिये ने देखा कि यहां तो बहुत शिकार मिल जायेंगे। अब उसने अपना तीर संभाला और निशाना बांध लिया। इतने में कबूतर की निगाह ऊपर की ओर गई और देखा कि एक बाज चक्कर लगा रहा था जब उसने नीचे देखा तो शिकारी तीर संभाले हुए खड़ा था। अब बेचारे कबूतर कबूतरी दोनों बड़ी आपत्ति में फँस गये। उन्होंने ईश्वर की प्रार्थना करना आरम्भ किया कि हे प्रभु आपही हमें इस आपत्ति से बचा सकते हैं। ईश्वर ने उनकी प्रार्थना सुनली। अचानक एक सांपने आकर बहेलिये के पांव में काट लिया और बहेलिये के हाथ से तीर छूट कर बाज के जा लगा। इस प्रकारसे ईश्वरकी कृपासे उसके दोनों शत्रु नष्ट होगये।

अरिक्षितं तिष्टति दैव रक्षितं
रिसुक्षतं देवहतं विनश्यां। (पंच तंत्र)

१२—शक्ति

अप्रकटी कृत शक्तिः शक्तोपि जनस्तिरस्क्रियां लभते ।

द्वितीय विश्वयुद्ध का समय था, फौजियों की धाक थी, रेल गाड़ियों में तो फौजियों के सिवाय किसी की चलती ही नहीं थी। एक दिन हिन्दुस्तान के प्रधान न्यायाधीश को कहीं जाना था। जैसे ही फर्स्ट क्लास के डब्बे में उनके नौकर ने सामान रक्खा एक फौजी ने आकर उनका सभी सामान फेंक दिया। जब नौकर ने जाकर न्याया धीश महोदय से कहा तो वे स्वयं वहाँ पर आये। फौजी ने वैसा ही असभ्य व्यवहार उनके साथ किया। उन्होंने वापिस लौटकर स्टेशन मास्टर को अपनी सूचना देकर वहीं पर अपनी अदालत लगा कर और उस फौजी को नौकरी से अलग कर दिया। ठीक भी है जलती हुई अग्नि यदि ढकी हुई होती है तो उसे सभी लांघने का साहस कर सकते हैं। परन्तु जब उसका ढकन अलग कर दिया जाता है तो उसे लांघने की किसी की हिम्मत नहीं होती।

१३—संगति

कविरा संगति साधु की हरै और की व्याधि।
संगत बुरी असाधु की आठों पहर उपाधि॥

किसी पेड़ पर एक गिद्ध रहा करता था। बुढ़ापेके कारण उसके सम्पूर्ण अंग शिथिल हो गये थे और वह भोजन तक प्राप्त करने में असमर्थ था। वृक्ष पर रहने वाले पक्षियोंने उसकी इस दयनीय अवस्था को देखकर उसे अपने भोजनमें से थोड़ा-थोड़ा देने का विचार किया। उनके द्वारा दिये गये भोजन से वह अपना जीवन चलाया करता था और उनके बच्चों की रक्षा किया करता था। एक दिन एक बिल्ली पक्षियों के बच्चों को खाने के लिये आई। पक्षियों के बच्चों ने बिल्ली को देखकर शोर मचाया। गिद्ध भी उनकी आवाज से चौकन्ना हो गया। बिल्ली भी गिद्ध को देख कर डर गई उसने गिद्ध से वार्तालाप

करना प्रारम्भ किया और कहा कि आप वृद्ध हैं अतः मैं आपके अनुभवों से लाभ उठाना चाहती हूँ। मैंने धर्माचरण करना प्रारम्भ कर दिया है। अतः आपसे मैं धर्म की बातें सुनने के लिए आया करूँगी। गिद्ध उसकी चिकनी चुपड़ी बातों में आगया। वह बिल्ली प्रति दिन धर्म कथा सुनने के लिए वहां आती और दो चार पक्षियों के बच्चों को चटकर उनके पंखों को उस पेड़ की खोंतर में रख देती थी। पक्षियों ने इसका पता लगाना प्रारम्भ किया। जब उन्होंने पंखों को खोंतर में रखा पाया तो समझ लिया कि यह सब इसी की करतूत हैं अतः उन पक्षियों ने क्रोधित हो उस गिद्ध को मार डाला।

दुष्टों की संगतिसे सदैव दुख ही मिलता है अतः दुष्टों की संगति से निवृति और सज्जनों की संगति में प्रवृत्त होनी चाहिए।

(सज्जन व्यक्तियों के साथ से मनुष्य की उन्नति होती है और दुर्गुणों के समावेष नहीं हो पाता। दुष्टों के संग से दुर्गुण उत्पन्न होते और चित्त अशांत रहता है।

१४—म्लेच्छ और देवता

बकरी पाती खात है ताकी खींची खाल।
जो बकरी को खात है ताको कौन हवाल ॥

मथुराजीके पण्डे बड़े धार्मिक होते हैं। एक दिन एक पण्डाजी एक मुसलमान रईस के यहाँ बैठे हुए गपें उड़ा रहे थे। खाँ साहब ने पूछा पण्डाजी आप मुसलमान को म्लेच्छ क्यों कहा करते हैं। पण्डाजी ने उत्तर दिया अजी खाँ साहब, आप तो ऐसी बातें पूछा करते हैं बिलकुल ही अजब हो। आप गोश्त खाते हैं इस कारण से हम आपको म्लेच्छ कहते हैं। मियांजी ने पण्डाजी से पूछा—अच्छा तो आप एक बात बतलाइए कि पेड़ों में प्राण होता है या नहीं। पण्डाजी ने उत्तर दिया जी हां होता है। अब खाँ साहब की चढ़ बनी और वह बोले कि तुम पेड़ोंका गोश्त खातेहो तो हम जानवरोंका गोश्त खातेहैं।

फिर हममें और तुममें क्या अन्तर है। पण्डाजी भी उस समय भंग की तरंग में बैठे थे। उन्होंने उत्तर दिया कि खाँ साहब पेड़ जल से पैदा होते हैं और पशु पक्षी मूल से। जो भेद जल और मल में है वही भेद म्लेछ और देवता में है।

-✱-

१५—या खुदा

एक पण्डितजी की एक मियां जी से दोस्ती थी। जब वह पण्डितजी से भोजन की बातें सुना करता था तो उसके मुँह में पानी भर आता था। एक दिन पण्डितजी से मियां जी ने कहा—महाराज, किसी दिन आप मुझे भी भोजन में ले चलिये। पण्डितजी ने कहा— आज ही चलेंगे। मियांजी को पण्डितजी ने खूब चन्दन लगाया गले में माला डाली बातें करने को मना कर दिया और कहा कि अगर तुमसे कोई पूछे कि तुम कौन हो तुम कहना ब्राह्मण फिर पूछे कौन ब्राह्मण हो तो कहना गौड़।

मियांजी पण्डित जी के साथ भोजन करने के लिए गये वहाँ पर वे शांत बैठे रहे। अब उनके पास आलू का रसादार साग समाप्त होगया तो उन्होंने एक आदमी से कहा जरा सा शोरुआ ले आओ। आदमी ताड़ गया कि यह पण्डित नहीं है। जब सभी उठने लगे तो उन्होंने मियांजी को अलग बुलाकर पूछा आप कौन हैं मियाँजी ने कहा—ब्राह्मण। उन्होंने फिर पूछा कौन ब्राह्मण मियाँजी ने बड़े तपाक से उत्तर दिया—गौड़। उन्होंने पूछा—कौन गौड़? मियांजी चकरा गये बोल उठे—या खुदा गौड़ों में भी और।

(वास्तविकता थोड़े समय तक ही छिपाई जा सकती है अन्त में वह स्पष्ट हो ही जाता है।

१६—विचार

बिना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपुनो जग में होत हसाय ॥

रात्रि को एक लालाजी ने सपना देखा के प्रातःकाल एक बौद्ध सन्यासी आयेगा और तुम उसके सर पर डंडा मार देना वह सोना हो जायगा। यह स्वप्न झूठा नहीं है मैं लक्ष्मी देवी हूँ तुमने मेरी बहुत पूजा की है अतः यह तुम्हें उसका प्रसाद मिलेगा। प्रातः उसी वेषवाला साधू आया। उसको देख कर लालाजी को स्वप्न की याद आ गई और उन्होंने उसके डण्डा जमा दिया। स्वप्न के अनुसार वह संन्यासी सोना हो गया। इस किस्से को एक नाई बैठा हुआ देख रहा था। उसने सोचा कि यह सभी बौद्ध सन्यासी मारने से सोना हो जाते हैं अतएव वह बौद्ध चैत्य (मठ) में गया। वहाँ के प्रधान भिक्षु से भोजन के लिये प्रार्थना की। उसने उत्तर दिया हम ब्राह्मण नहीं हैं जो किसी के यहाँ भोजन करने जांय। हम तो केवल भिक्षा मांगने जाते हैं। नाई बड़ा चंट था उसने कहा—महाराज मैंने आपकी धार्मिक पुस्तकें लिखवा कर अच्छे कपड़ों में बाँध कर आप लोगों के लिये रक्खी हैं अब आप भिक्षा के बहाने ही उन्हें ले आइये। वह भी इस लोभ में आकर बात को मान गए। जब वे घर पर पहुँचे तो नाई ने दरवाजा बन्द करके उनके सर पर डण्डे मारना प्रारम्भ किया। बेचारे सन्यासियों ने चीखना प्रारम्भ किया। इतने में पुलिस के लोग आगए और इस दुष्ट नाई को ले गये।

(प्रत्येक कार्य को अच्छी प्रकार से विचार कर करना चाहिये)

१७—विश्वास

एक दिन एक ब्राह्मण को कहीं से दान में एक गाय का बछड़ा मिला। बछड़े के छोटा होने के कारण ब्राह्मण महाराज उसे कन्धे पर लेकर अपने गाँव जा रहे थे। कुछ ठगों ने ब्राह्मण के बछड़े को देखा

उसे देखकर उनका मन ललचा आया और उन्होंने उसे छीनने का जाल भी रच लिया। थोड़ी सी दूर पर एक ठग बैठ गया और जब ब्राह्मण महाराज पास में आये तो कहा—महाराज यह कुत्ता तो बड़ा सुन्दर है ब्राह्मण ने कहा-यह कुत्ता है या बछड़ा। ठग ने कहा—बछड़ा होगा महाराज ? परन्तु ब्राह्मणों को कुत्ता सर पर रखते शोभा नहीं देता। कुछ आगे दूसरा ठग बैठा था उस ठग ने पूछा महाराज कुत्ता बेचोगे। ब्राह्मण को शक हुआ कि यह कुत्ता तो नहीं है उसे देख कर ब्राह्मण बोला नहीं और आगे चल दिया। तीसरे ठग ने ब्राह्मण को देखकर कहा—महाराज, यह तो पागल कुत्ता है आपको खा जायगा यह कहकर भागने लगा और ब्राह्मण भी बछड़ा छोड़ कर भाग खड़े हुए।

(अपने ऊपर दृढ़ विश्वास रखकर ही संसार में चलना चाहिये क्योंकि प्रत्येक स्थान पर धोखा मिल सकता है।)

१८—भ्रम

कामक्रोधौ महा शत्रू देहिनां सहजावुभौ।

यमुनाजीके किनारे एक तपस्वी तपश्चर्या करते थे वे बड़े ज्ञानी और संयमी थे। परन्तु एक दिन एक नवयुवती उसके निवास स्थान के पास से निकल कर गई। तपस्वी उसको देखकर उस पर आसक्त हो गया। भाग्यवश वह स्त्री उसी के पास के घर में ही आई थी। तपस्वी को उसके पास जाने की उत्कंठा हुई। परन्तु शादी के पश्चात् दूसरी बार आने के कारण तथा अधिक स्वरूपवती होने के कारण वह घर से नहीं निकलती थी तपस्वी मौका देखकर घर पर गए। और किवाड़ें खोलने को कुन्डा खट खटाया स्त्री ने अपना पति जानकर किवाड़ें खोलदी। जब ब्राह्मण ने उस स्त्री को देखा तो अपने कामातुर होने का वृतांत कहा स्त्री ने उससे बचने के लिए किवाड़ बन्द करने का प्रयत्न किया और तपस्वी ने अन्दर जाने, इसी झगड़े में दोनों

किवाड़ों के बीच में उस तपस्वी की गर्दन फँस गई और वह मर गया।

वास्तव में कामुकता सबसे बड़ा शत्रु है। मनुष्य को इस पर संयम रखना चाहिए। इन्द्रिय निग्रह अत्यन्त कठिन है गीता में भी कहा है कि इस चंचल मन पर काबू रखना चाहिए।

चञ्चलं हि मनः कृष्ण। प्रमाथि बलवद्दृढम्,
तस्याहं निग्रहं मन्ये वायोरिव सुदुष्करम्।

१६—काम

पिता पुत्रौ महावीर्यो काम क्रोधौ दुरासहै।
विजत्य सकलं विश्वं वर्तते जय काशिनै॥

एक राजा चढ़ाई करने के लिए किसी बहुत दूर स्थित देश पर गया। युद्ध में अधिक समय लगने के कारण उसे कई वर्ष व्यतीत हो गये। एक दिन उसकी एक कामातुर रानी ने एक सुन्दर से साहूकार के लड़के को अपनी खिड़की से देखा। तब उसने अपनी बांदी को बुला कर उस साहूकार के लड़के को बुलाया। बांदी ने जाकर कहा कि आपको रानी साहब ने कुछ जवाहिरात खरीदने को बुलाया है। साहूकार का बेटा उस बाँदी के साथ महलों में आया। रानी ने उससे अपने मन की इच्छा कही। इतने में खबर मिली राजासाहब महल के दरवाजे पर आ गये हैं। रानी ने चुपके से उसे पाखाने में छिपा दिया राजा साहब ज्योंही आकर बैठे तैसे ही उन्होंने कहा—मुझे पाखाने जाना है। अब उसे नीचे पाखाने में छिपा दिया राजा साहब ने अच्छी प्रकार से उसके ऊपर पाखाना फिरा। बाद में वह वहाँ से निकल कर घर जाकर नहाया और अपनी शुद्धि की। दूसरे दिन फिर रानी ने उसे बुलाया तो उसने उत्तर दिया कि पर-स्त्री से प्रेम करने की इच्छा करने का तो फल मैंने पालिया है यदि प्रेम करूँगा तो न जाने क्या होगा।

(काम और क्रोध को जीतकर मनुष्य संसार में अपनी कीर्ति की पताका फहरा सकता है।

२०—झूठे बन्धन

एक लाला जी ने जो निपुत्री थे बड़े प्रयत्न किए कि उनके कोई पुत्र हो, परन्तु वे सभी असफल हुए। एक रात्रि को पलंग पर बैठे २ वह अपनी स्त्री से प्रेम की वार्तालाप कर रहे थे तब स्त्री ने कहा कि अगर ईश्वर हमें पुत्र दे दे तो हम कहाँ सुलावेंगे। लालाजी ने कहा कि बीच में इशारा करके कहा कि बीच में और थोड़ा सा खिसक गए। स्त्री ने कहा कि यदि दूसरा पुत्र हुआ तो लालाजी थोड़ा सा खिसके और कहने वाले थे कि यहाँ पर वे धड़ाम से नीचे आ गिरे और टांग टूट गई। वे समझ गए कि संसार के झूठे बन्धन हैं जब झूँठा बेटा इतना कष्ट देता है तो सच्चा न जाने प्राण ही लेलेगा।

(संसार से ममता रखना अपने को आपत्ति में डालना है।)

२१—भारत का विद्वान्

एक बार यूनानी विद्वान् अरस्तू भारत में आया। उसने भारत के दार्शनिकों के बारे में काफी सुन रखा था। एक दिन उसने एक महात्मा के बारे में पता पाया जो यूनानी सेना के पड़ाव से कुछ ही दूर जंगल में धूनी रमाये पड़ा रहता था। अरस्तू को अपनी योग्यता का बड़ा गर्व था। उसने एक चाँदी के कटोरे में लबालब मक्खन भर कर उस साधू के पास भेजा। साधू ने उस कटोरे को देख कर कुछ सुइयां मगवाई और सब मक्खन में लगाकर उसके पास लौटा दिया। अरस्तू इसे देखकर बड़ा प्रभावित हुआ और कहा कि मैं अब स्वयं उस साधू से मिलने जाऊँगा। नौकर ने पूछा—महाराज आपने यह क्या किया था। अरस्तू ने उत्तर दिया कि मैंने घमण्ड के कारण कटोरा मक्खन से भरकर भेजा था। जिसका आशय था कि मेरे दिमाग में बहुत चीजें भरी हुई हैं जिसमें हिन्दुस्तान की एक भी चीज नहीं समा सकती परन्तु उसने सुइऐं लगाकर बता दिया कि हिन्दुस्तान आपके दिमाग में भी काफी चीजें रख सकता है।

२२—टाँग फसाना

अव्या पारेष व्यापारः योऽनः कतु मिच्छति ।
सखलु निधन याति कीलोत्पाटीप बानरः । (पंचतन्त्र)

दोपहर के समय भोजन करनेके लिये बढ़ई लोग पेड़ का आधा चिरा हुआ छोड़कर चले गये। वे उसके बीच-बीच में काठ के खूंटे लगा गये थे, ताकि वह मिल न जाय। एक बन्दर ने आकर उसके ऊपर बैठ कर खूंटे उखाड़ना शुरू किया। भाग्यवश उसके अंडकोष तख्तों के बीच में आगये और दोनों पेड़ के पल्ले मिल गये और बन्दर मर गया।

(हर एक बात में टाँग फँसाने वालों की यही दशा होती है।)

२३—बुढ़ापा

एक साहूकार बड़ा मालदार था। उसके कई बेटे थे। जब वह वृद्ध हुआ तो बेटों ने कहा-पिताजी आप कुछ काम मत किया करिये। सिर्फ आप दरवाजे पर रहा करिये और अन्दर जाकर चौके में भोजन कर आया करिये। साहूकार ने यही किया। इससे बहूओं की स्वतंत्रता में बाधा पड़ती थी। अतः उन्होंने कहा कि इनके भीतर बाहर जाने में हमें बड़ी दिक्कत रहती है और ये सारा दरवाजा थूक थूक कर गन्दा कर देते हैं। बेटों ने बात मानली और पिताजी से कहा—आपको बड़ा कष्ट रहता होगा यहाँ अतः आप ऊपर के कमरे में रहा करिये। वहाँ हम एक रस्सी बाँध देंगे और नीचे घन्टी बाँध देंगे। जब आपको किसी वस्तु की आवश्यकता हो तभी उसे हिला दिया करिये। बेचारा बुड्ढा पिता इसी प्रकार से अपने दिन काटने लगा एक दिन छोटे पोते ने खेलते खेलते उस घण्टी को तोड़ दिया। बेचारे बूढ़े ने बहुत रस्सा खींची पर कोई न आया। फलतः भूखा प्यासा वह बूढ़ा मर गया।

(सत्य है संसार में सभी का प्रेम स्वार्थमय होता है किसी का

निस्वार्थ प्रेम नहीं होता। जिसका निस्वार्थ प्रेम होता है वह मनुष्य मनुष्य नहीं देवता है।

२४—धन

चार दोस्तों को एक धन की एक थैली मिली। थैली को लेकर वे एक बगीचे में आये। एक साथी ने कहा यार—भूख लगी है, चार रुपये की मिठाई मँगालो। दो साथी मिठाई लेने गए उन्होंने सोचा कि इस मिठाई में विष मिला ले चलो वे मर जायेंगे और धन हम दोनों को ही मिल जावेगा। उधर दोनों ने सोचा कि इन्हें आते ही बन्दूक से मार दो। हम दोनों धन बाँट लेंगे। जैसे उन्होंने लाकर मिठाई रखी उन दोनों ने उन्हें बन्दूक से मार दिया। जब वे रुपया बाँटने वाले थे उन्होंने सोचा कि पहले मिठाई को खालें जैसे उन्होंने मिठाई खाई विष के प्रभाव से वे भी मर गये।

(धन बड़ी बुरी वस्तु है इससे मित्र शत्रु बन जाते हैं)

२५—जैसा नाच नाचे, तैसा काछ काछे

एक बहुरूपिये ने आकर एक राजा को नर्तकी का स्वरूप बना कर दिखलाया तथा बड़ा सुन्दर नृत्य भी किया। राजा ने कहा—भाई किसी दिन एक वैरागी का स्वांग और दिखलाओ। बहुरूपिये ने कहा अच्छा छः मास बाद दिखलायेंगे। छः मास बाद वह बहुरूपिया महात्मा का रूप धारण कर उसी नगर में आकर बैठ गया। सभी उसकी ओर देखते बातें करते और कुछ न कुछ देते थे! परन्तु उसे किसी चीज से मतलब नहीं था। इस बात की खबर सुनकर राजा भी सम्पूर्ण कुटुम्ब के साथ उसके दर्शन करनेके लिए आया और १०थैलियाँ भेंट की परन्तु महात्मा ने कुछ भी स्वीकार नहीं किया। दूसरे दिन वह बहुरूपिया अपने कपड़े पहिन कर राजा के पास आकर इनाम माँगने

लगा। राजा ने कहा कैसा इनाम बहुरुपिये ने सारा किस्सा कह दिया। राजा बोला--तो तुमने वह १० थैली भेंट क्यों नहीं ली। बहुरुपिया बोला महाराज फिर वैरागी का रूप आधा रह जाता।

(किसी काम को ठीक ठीक रूप से करना ही कार्य करना है)

२६--बुराई

एक राजा तथा एक महात्मा का इस बात पर झगड़ा चलता था कि राजा कहता था गृहस्थाश्रम में कोई बुराई नहीं है और महात्मा जी कहते थे कि यह बुरी वस्तु है। एक दिन राजा को महात्माजी एक ऐसे रास्ते पर ले गये जहाँ के रहने वाले चमड़े का काम करते थे। राजा ने चमड़े की दुर्गन्ध के कारण नाक बन्द करली और कहने लगे कि यहाँ के रहने वाले कैसे रहते होंगे। महात्माजी ने उत्तर दिया कि जिस प्रकार आपको गृहस्थाश्रम में रहने का कारण वहाँ की बुराइयाँ नहीं मालूम पड़ती वैसे ही इन्हें दुर्गन्ध में रहने के कारण दुर्गन्ध का अनुभाव नहीं होता। वे भी आपकी भांति दुर्गन्ध के आदी हो गये हैं।

(अपनी बुराई अपने द्वारा नहीं दिखाई पड़ती है)

२७--सांच को आँच नहीं

एक स्कूल में एक राजा की लड़की जिसका नाम लैला था और एक मजनूं नाम का लड़का पढ़ने जाते थे। उनमें प्रेम हो गया राजा ने यह वार्ता सुनकर लड़की का पढ़ना बन्द कर दिया। परन्तु राजा ने मजनूं की बुरी हालत देखी तो लैला के आग्रह से यह आज्ञा कर दी कि मजनूं जहाँ भी जिस किसी दूकान पर खाना चाहे खा सकता है उसका खर्च राज्य से मिलेगा। इस बात को सुनकर सभी भूखे आदमी मजनूं बनकर चाहे किसी दूकानदार की दूकान पर खाना खाने लगे। अब तो हजारों मजनूं बन गये। राजा ने अपनी पुत्री लैला

से पूछा कि तुम्हारे कितने मजनूं हैं उसने उत्तर दिया केवल एक राजा ने सभी हाल लैला को बतलाया। लैला ने कहा सांचे झूठे की पहिचान तब होगी जब आप एक लोहे के खम्भे के ऊपर मेरा सिंहासन रखवा कर उसके चारों ओर आग लगवा दें। सच्चा मजनूं होगा वह आग की चिन्ता न कर मेरे पास आ जायगा। राजा ने यही किया। असली मजनूं आग की चिन्ता न कर लैला के पास चला गया लैला ने उसे हाथों में उठा लिया। सभी झूठे मजनूं भाग गये।

(सत्य की जय होती है)

—o—

२८—बनावट

एक गुरू और चेला दोनों गंगा स्नान को जा रहे थे। अचानक उपदेश करते करते गुरू ने चेले से कहा—बेटा बनना नहीं चाहिए वास्तविकता में ही आनन्द है। जब वे चलते चलते एक बगीचे में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक राजा का बगीचा है वहाँ पर पलंग इत्यादि सभी की सामिग्री मौजूद है। गुरू और चेले दोनों भिन्न २ कमरों में आकर पलंग पर सो गये। कुछ समय पश्चात् जब राजा आया और उसने चेले को पलंग पर सोते देखा तो उसे उठाया। चेला राजा को देखते कहने लगा कि हम तो साधू हैं राजा ने क्रोधित होकर उसे वहाँ से निकाल बाहर किया। जब वह दूसरे कमरे में गया तो गुरूजी दिखलाई पड़े। गुरूजी को नौकर ने जगाया तो गुरूजी बड़े अलसाये हुये से लापरवाही से उठे उन्होंने चेले की भाँति उठते हुए यह नहीं कहा कि मैं साधू हूँ वरन् शांत ही रहे। राजा ने उन्हें देखकर कहा यह साधू मालूम पड़ते हैं। अतः इन्हें बाहर का मार्ग बतलादो और कह दो कि यह हमारे साधुओं के रहने के स्थान में आकर रहें। वहीं इनके भोजन का भी इन्तजाम हो जायगा।

(बनने से आदमी समझते हैं कि यह वास्तव में है नहीं य

बनने की कोशिश कर रहा है। अतः वे विश्वास नहीं करते। प्रत्येक को अपनी वास्तविकता में ही रहना चाहिये।)

—×—

२९--सन्यासी

वैराग्य होने के कारण एक राजा ने अपना राज पाट त्याग कर सन्यास ले लिया। एक दूसरे राजा को जब यह वृतान्त ज्ञात हुआ तो वह उस धर्मात्मा राजाके दर्शन करने आया। वहाँ उसने देखा कि वह साधु राजा बड़े ठाठ के साथ में अपना जीवन व्यतीत करता है राज्य के त्यागने के पश्चात भी वह साधुओं का राजा बना हुआ है। इसे देखकर दूसरे राजा ने कहा महाराज कृपया कल मेरे यहाँ भोजन करने चलिये। दूसरे दिन जब वह राजा साधु दूसरे राजा के यहां भोजन करने गया तो वहाँ उसने देखा कि साधारण कलई के थालों में चने की रोटियाँ और दाल रखी हुई है साधु राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ और बोला—यह क्या है ? क्या आप प्रतिदिन यही भोजन करते हैं। राजा ने उत्तर दिया महाराज मैं राज्य से कुछ नहीं लेता बल्कि स्वयं कुछ किताबें इत्यादि लिखकर जो रुपया पैदा करता हूँ उसी से अपना काम चलाता हूँ। इस बात को सुनकर वह साधू राजा बड़ा लज्जित हुआ और उसने राज्य से धन लेना छोड़ दिया तथा तपस्वियों का जैसा जीवन चलाना आरंभ किया।

(सांसारिक वस्तुओं को छोड़ देने वाला पुरुष ही सन्यासी है चाहे वह गृहस्थ में ही क्यों न रहे सांसारिक वस्तुओं को न छोड़ने वाला चाहे बन में ही क्यों न रहे वह सन्यासी नहीं हो सकता।)

३०-आत्मा परमात्मा

ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

एक शिष्य ने गुरू से बहस करना आरंभ किया कि आत्मा परमात्मा एक नहीं हो सकते हैं। तब गुरू ने उसे थोड़ा सा गङ्गाजल लाने

को कहा। वह शिष्य कमंडल में जल ले आया और बोला लीजिये गुरूजी; यह जल मैं आपके लिये लाया हूँ। गुरूजी ने कहा—पुत्र मैंने तो तुमसे गंगाजल मंगाया था। शिष्य बोला गुरूजी यह गंगाजल ही तो है। गुरूजी ने पुनः प्रश्न किया–अरे, इसमें न कछुए, मगर इत्यादि जन्तु हैं न नाव है न मनुष्य ही स्नान कर रहे हैं यह गंगाजल नहीं हो सकता। शिष्य ने उत्तर दिया महाराज यह तो गंगाजल का थोड़ा सा अंश है इसमें यह सभी बातें कैसे हो सकती है। गुरूजी ने अब समझा कर कहा जैसे इसमें यह सभी गुण नहीं हो सकते हैं वैसे ही परमात्मा के सभी गुण और शक्तियां आत्मा में नहीं हो सकती परंतु जैसे यह बात सत्य है कि यह गंगाजल ही है वैसा यह भी सत्य है कि आत्मा परमात्मा ही है।

३१—सत्संग

महानुभाव संसर्ग कस्य नोन्नति कारकः।
पद्मपत्र स्थितं वरि धत्ते मुक्ताफल श्रियमः॥

वर्षा के कारण एक महात्मा एक मकान के नीचे आकर खड़े हो गये। वह मकान एक वेश्या का था। ठंड के कारण महात्मा को कांपता देख उस वेश्या ने उन्हें ऊपर बुलाकर दुशाला दे दिया। रात्रि को खाना इत्यादि खिलाकर वेश्या महात्मा जी के पांव दाबने लगी महात्माजी सो गये। प्रातः महात्मा जी उठकर चल दिये। वेश्या जब उठी तो उसने अपनी नौकरानी से पूछा कि महात्माजी कहाँ हैं उसने उत्तर दिया कि वह तो चले गये। वह इस बात से बड़ी प्रभावित हुई और महात्मा बन गई। एक राजा ने जो उससे प्रेम करता था पूछा कि यह तुमने क्या किया? राजा को उसने उत्तर दिया कि मैं अब वह नीच नहीं हूँ जो संसार की बुरी वस्तुओं में कीड़े की तरह लगी रहूँ।

३२—परोपकार

परोपकारः कर्त्तव्यः प्रणाैरपि धनैरपि ।
परोपकारमं पुण्य न स्यात्क्रतु शतैरपि ।।

धन से दुखी एक ब्राह्मण अपने यज्ञों का फल बेचने के लिये एक राजा के पास जा रहा था। मार्ग में खाने के लिये उसकी स्त्री ने कुछ रोटियां उसके लिये बांध दी थीं। मार्ग में जब वह कुए के पास खाना खाने बैठा तो एक प्रसविनी कुतिया को बहुत भूखा देखकर सब खाना उसने कुतिया को दे दिया। जब राजा के पास आकर उसने यज्ञ का फल बेचने को कहा तो राजा ने एक ज्योतिषी से पूछा महाराज इसने सबसे बड़ा कौन-सा यज्ञ किया है। ज्योतिषी जी ने उत्तर दिया इसने एक अत्यन्त भूखी कुतिया को खाना दिया है वह सबसे महान यज्ञ है ! राजा ने इस यज्ञ का मूल्य ब्राह्मण से पूछा ब्राह्मण बोला कि मैं इस यज्ञ को नहीं बेचूंगा। अन्य कोई यज्ञ का आप फल ले लीजिये राजा ने प्रसन्न होकर उसे काफी धन दे दिया।

सत्य है :—

परोपकारार्थं यजीवति स जीवित।
(परहित के लिये जो जीता है उसी का जीवन जीवन है।)

३३—मन की अच्छाई

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयोः।
बन्धाय विषयासक्तं मुक्तो निर्विषयं स्मृतम्।

एक साहूकार ने मरते समय अपने कुकर्मी बेटे से कहा कि बेटा जब तुम्हारा धन समाप्त हो जाय तो दिवालशाह से ले लेना। जब उस कुकर्मी पुत्र का धन समाप्त हो गया तो उसने दिवालशाह की तलाश की परन्तु सभी प्रयत्न व्यर्थ रहा। एक दिन महात्मा ने उससे रहने का कारण पूछा उसने सारा वृतान्त कह सुनाया। महात्माजी ने उसे उपदेश देकर कहा बेटा यदि मन को ठीक रखो तो हम तुम्हें उस शाह से धन दिलवा सकते हैं। उस कुकर्मी ने महात्मा जी के

आगे प्रतिज्ञा की। महात्मा जी ने जाकर दीवाल बतला दी। जब साहुकार के बेटे ने दीवाल खोली तो उसमें काफी धन उसे मिला। अब सादा वृत्ति होने के कारण उसका धन स्थिर हो गया और वह सत्कर्मों में लग गया।

३४—मूर्खता

एक किसान अपने बूढ़े बैल को मार कर गाली दे देकर चला रहा था पास में ही एक पंडितजी बैठे कथा बाँच रहे थे। जब किसान ने बैल को गाली दी कि तेरा खसम मर जाय बधिया चलती क्यों नहीं। तब पंडितजी ने पूछाकि उसके खसम कौन हैं। किसान ने कहा कि हम हैं। पंडितजी ने फिर पूछा कि यह गाली किसे लगी किसान ने उत्तर दिया कि जो इसे समझे उसे लगी।

(मूर्खों की मूर्खता का प्रभाव दूसरों पर ही पड़ता है)

—×—

३५—क्षमा

क्षमा बड़ेन को चाहिये छोटेन को उत्पात।

एक बाजीगर ने खेल दिखाते २ एक महात्मा की आँखों में पट्टी बाँध दी और उनके सिर पर जूता घुमाने लगा तथा लोगों के हंसाने के लिये उसने बेचारे महात्माजी के दो चार जूते जमा भी दिये। जब महात्मा जी की आँखों से पट्टी खुली तो आदमियों ने महात्माजी को बतलाया कि महाराज इसने आपके सर में जूते मारे थे। महात्माजी ने उत्तर दिया—बेटा ठीक ही किया है। मेरा सर घमंड के कारण झुकता ही नहीं था। अतः यह ठीक दंड उसे मिला है सभी लोग इस बात को सुनकर बहुत प्रभावित हुए।

३६—महानतर

एक राजा के महल बनवाने के स्थान के नाप में एक बुढ़िया की झोंपड़ी आती थी। मंत्रियों ने बुढ़िया से झोंपड़ी बेचने की प्रार्थना की परन्तु बुढ़िया ने मना कर दिया। विवश होकर राजा स्वयं बुढ़िया के पास मकान बेचने के लिए कहने को आया। बुढ़िया ने बातों के बीच में ही अचानक राजा से एक मिट्टी के बोरे की ओर इशारा करते हुए कहा महाराज इसे उठाकर मेरी झोंपड़ी में रख दीजिये राजा ने कहाकि यह तो मुझ से नहीं उठ सकता। उस बुद्धिमान बूढ़िया ने उत्तर दिया महाराज तब मृत्यु के समय आप इतनी जमीन को कैसे उठाकर अपने साथ ले जाँयगे जिससे आपको इतना प्रेम है तथा जिसका आप इतना मूल्य देने को तैयार हैं। राजा अत्यन्त लज्जित हुआ तथा उसने अपना महल बिना झोंपड़ी लिए टेढ़ा ही बनवा लिया।

(महानता महान कार्य करने से होता है न कि अपने कार्यों को सिद्ध करने से।)

३७—ईश्वर ठीक ही करता है

शस्त्र के लग जाने के कारण से एक राजा की उंगली कट गई मंत्री जो इस बात में विश्वास करता था कि ईश्वर जो कुछ करता है वह ठीक ही करता है वहाँ राजा के पास आया। राजा ने अपनी कटी उंगली दिखाई। मन्त्री बोला-भगवान जो कुछ करता है ठीक ही करता है। इस को सुनकर राजा ने क्रोधित हो उसे कैदी बना लिआ।

एक दिन राजा बन में शिकार करते हुए घूम रहे थे तो भीलों ने उसे पकड़ लिया। वे देवी की बलि के लिये एक मनुष्यकी तलाश में थे। उन्होंने राजा को बलि वेदी पर बैठा दिया। राजा घबड़ा रहा था इतने में उनके पुरोहितजी ने राजा की कटी हुई उंगली को देखकर कहा

कि अंग भंग बली देवता पर नहीं दी जाती। उन्होंने राजा को मुक्त कर दिया। राजा ने लौट कर मन्त्री को मुक्त कर दिया और क्षमा मांगी।

३८—ज्ञान का सन्देश

एक राजा के दरबार में एक नट अपनी कला दिखलाने को आया। राजा बड़ा कंजूस था। न बेटे को कुछ देता था न लोभ के कारण लड़की की शादी ही करता था। अतः उसने कहा दो दिन बाद देखेंगे। फिर वह नट आया तो राजा ने फिर बहाना लगाकर कह दिया कि दो दिन बाद देखेंगे। नट ने तंग आकर वजीर से कहा कि यदि राजा साहब नहीं देखना चाहते तो हमसे मना ही करदें। यह बात वजीर ने राजा से कही और साथ ही यह भी कह दिया महाराज आप कुछ मत दीजिये हम लोगों का इनाम ही उसे काफी हो जायगा। राजा ने कहा अच्छा तो उसे आप ही बुला लो।

नटनी ने आकर अपना नाच करना, प्रारंभ किया और नट ने बजाना। जब रात बीतने को आई तब नटनी ने देखा कि अभी तक कुछ भी इनाम नहीं मिला तो उसने कहा कि ताल अच्छा लगाओ, ताकि कुछ मिले। नट ने उत्तर दिया।

बहुत गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय।

इस बात को सुनकर एक महात्माजी कम्बल ओढ़े बैठे थे, उन्होंने अपना कम्बल दे दिया। राजा के बेटे ने अपनी अँगूठी दे दी और राजा की लड़की ने अपना हार दे दिया। राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ उसने साधू से पूछा कि तुम जाड़े मर रहे हो तो भी तुमने अपना कम्बल उसे क्यों दे दिया। साधू बोला महाराज ! मेरी इच्छा अब विषय वासनाओं में लगने की थी, मैं साधू वृत्ति को न छोड़ना चाहता था। परन्तु इसके कहने से मुझे ज्ञान होगया कि बहुत गई थोड़ी

रही। बेटे से जब राजा ने पूछा तो उसने कहा—पिताजी आप मुझे खर्च करने के लिए कुछ नहीं देते हो अतः मैंने सोचा था कि मैं आपको मार कर राजा बन बैठूं परन्तु इसने मुझे ज्ञान करा दिया इस कारण मैंने इसे अंगूठी देदी। अब लड़की का नम्बर आया राजा ने उससे कारण पूछा उसने उत्तर दिया कि मेरी सारी उम्र बीती जा रही है तो भी आप शादी नहीं करते। अतः मैंने भी आपको मारने को सोच लिया था परन्तु इसके इस दोहे ने मुझे ज्ञान करा कर पितृ-हत्या से बचाया है। अतः मैंने इसे यह इनाम दिया है। राजा को ज्ञान हुआ और कंजूसी का परित्याग कर उसने भी नट को धन दिया।

(ज्ञान केवल पढ़े लिखे व्यक्तियों से ही नहीं लिया जाता बल्कि संसार की प्रत्येक वस्तु ज्ञान सन्देश होती है)

३६—न्याय

भारतवर्ष की ईमानदारी सर्व प्रसिद्ध है। एक बार सिकंदर का दूत यहाँ के एक राजा की राज सभा में बैठा था। उसने देखा कि दो किसान लड़ते लड़ते राजा के दरबार में आये। राजा ने पूछा—भाई क्या बात है। एक किसान धन की एक हंडिया को दिखाकर कहने लगा कि महाराज यह धन मेरे मकान में निकला है जो मकान मैंने इससे खरीदा था। धन इसका है। दूसरा किसान बोला महाराज मकान जब मैंने इसे बेच दिया तो धन तो इसी का ही हुआ। इसमें मेरा कोई हक नहीं है। तब राजा ने पूछा कि तुम्हारे कोई पुत्र पुत्री हैं। एक किसान के एक लड़का था और दूसरे के एक लड़की राजा ने कहा अच्छा तुम उन दोनों की शादी करदो और धन उन्हें दे दो। इस न्याय को देखकर सिकन्दर बड़े अचम्भे में पड़ा।

(जिसमें दोनों पक्षों की आत्मा को सन्तोष हो ऐसी धर्म संगत आज्ञा ही न्याय है।)

—×—

४०—पश्चाताप

अब पछिताये कहा होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।

एक किसान को खेत के पास नदी के किनारे एक रत्नों की हंडिया मिली। उन्हें पत्थर समझकर वह खेत पर ले आया और उनसे जानवर पक्षी आदि को उड़ाने लगा। एक एक करके वह सभी रत्न नदी में उसने इस प्रकार से फेंक दिये।

भाग्यवश एक रत्न उसके बच्चे ने खेलने को उठा लिया। बाद में जब वह लड़का मां के पास घर गया तो माँ नें वह रत्न उससे ले लिया और बनिये के पास नमक लेने गई। उसने लालाजी से कहा—लालाजी आप इस पत्थर के बदले हमें थोड़ा नमक दे दीजिये। लाला जी के पास एक जौहरी बैठा था उसने उससे वह रत्न लेकर कहा कि हम तुम्हें कल इसकी कीमत भेज देंगे। वह रत्न बड़ा कीमती था दूसरे दिन जौहरी ने २ लाख रुपया उस किसान के यहाँ भेज दिया जब वह रुपया किसान की स्त्री ने किसान को दिखलाया तब किसान अत्यंत दुखी हुआ और कहने लगा कि ऐसे तो मैंने सैकड़ों रत्न फेंक दिये। स्त्री ने कहा अब व्यर्थ में रोने से क्या लाभ।

४१—संगठन

अल्पनामपि वस्तूना संहतिः कार्य स्पधिका।
तृण गुणत्वमापन्नै वध्यन्ते मत्त दन्तिनः॥

एक किसान ने मरते समय अपने चारों बेटों को बुला कर एक लकड़ी का गट्ठर दिया और कहा कि इसे तोड़ो। लड़कों ने भरसक प्रयत्न किया परन्तु असफल रहे। अन्त में उसने कहा कि एक २ लकड़ी को तोड़ो। तब तो वह लड़के बड़े आराम से लकड़ी तोड़ने लगे। तब बाप बेटों से बोला यदि तुम भी इसी प्रकार मिलकर रहोगे तो तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता है। यदि मेल से न रहे तो लकड़ियों की तरह ही तुम्हारी हालत होगी। एक २ कर तुम भी नष्ट हो जाओगे।

४२—मेल

संघे शक्ति युगे युगे।

एक गाँव में आग लग गई। वहाँ के सारे लोग भाग निकले। केवल एक अन्धा और एक लंगड़ा रह गये। लंगड़े ने अन्धे से कहा भाई तुम मुझे कंधे पर बैठा कर ले चलो। तुम्हारे आँख नहीं हैं अतः तुम्हें मैं रास्ता बतलाता चलूंगा, इस प्रकार से हम दोनों की जान बच जायगी। उन्होंने ऐसा ही किया। जब वे जिन्दा गाँव वालों के पासमें भाग आये तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। अन्धे और लंगड़े ने अपना सारा किस्सा सुनाया तब गाँव वालों की समझ में आया कि संगठन में कितनी शक्ति होती है।

४३—सर्वजीत

इंद्रियाणां जये शूरो धर्मं चरति पण्डितः।

एक राजा ने सारे संसार पर विजय प्राप्त करली थी इस कारण से सभी प्रजाजन उसे सर्वजीत कहने लगे। परन्तु घर में उसकी केवल माँ ही ऐसी थी जो कि उसे सर्वजीत नहीं कहती थी। बेटे ने एक दिन विचार किया कि मेरी माँ ही मुझको सर्वजीत नहीं कहती। अतःइसका कारण पूछना चाहिये। ऐसा विचारकर उसने माँ सेपूछा माताजी क्या कारण है कि आप मुझको सर्वजीत नहीं कहती। मां ने उत्तर दिया बेटा, तुमने बाहरी सारे संसार के अपने विरोधियों को जीत लिया है जब तुम आन्तरिक शरीर में रहने वाले सारे विरोधियों को जीत लोगे तभी सच्चे सर्वजीत हो सकोगे और तभी मैं तुम्हें सर्वजीत कहूँगी।

४४—सत्य

एक दुष्ट राजा का पुत्र घूमते २ शिकार खेलने के हेतु बन में गया। वहाँ उसे प्यास लगी। जब वह पानी की तलाश में निकला तो उसे एक महात्माजी का अत्यन्त रमणीक आश्रम दिखलाई दिया। वह वहां पर

गया तो महात्मा को समाधि में निमग्न देखकर हाथ जोड़ कर बैठ गया। जब महात्मा जी की ध्यान मुद्रा भंग हुई तो उन्होंने आने का कारण पूछा। राजकुमार ने जल पीने को मांगा तथा साथ ही कहा महाराज हमें कुछ उपदेश दीजिये। महात्माजी ने कहा – बेटा, सत्य बोला करो। राजकुमार ने दृढ़ प्रतिज्ञा करली कि आज से अवश्य सत्य बोलूँगा। एक दिन वह शराब पीने के लिये जारहा था उसके पिता ने पूछा बेटा कहाँ जा रहे हो। वह झूंठ बोल नहीं सकता था। सत्य पिता के सामने कह नहीं सकता था अतः लौटकर घर चला गया। एक बार जब वेश्या के यहाँ जा रहा था तब फिर पिताजी मिल गये और पूछा बेटा, कहाँ जारहे हो यह बिना उत्तर दिये लौट गया। इस प्रकार से उसके सारे दुर्गुण दूर हो गये।

सत्य से प्रत्येक काम सिद्ध हो सकता है। शास्त्रों में तो लिखा है कि सत्यस्तु भगवानः स्वयं।

सत्यता साक्षात् भगवान हैं।

साँच बरोबर तप नहीं झूंठ बरोबर पाप।
जाके हृदय साँच है ताके हृदय आप॥

(सत्य बोलने मे मनुष्य संसार के घोर पापों से बच सकता है और अच्छे मार्ग का पथिक हो सकता है।)

४५–फायदा

शादी के लिये एक साहूकार के यहाँ से एक आदमी बर्तन माँगने गया। साहूकार ने कहा कि आप किसी से जमानत दिलवाइयें। उसने साहूकार को जमानत तो दिलवा दी परन्तु सोचा कि अभी तो मुझे कई शादियाँ करनी हैं ऐसे कहाँ तक जमानतें दिलवाऊंगा। उसने उपाय सोच लिया। जब वह बर्तन वापिस करने गया तो उसके साथ में पांच बर्तन छोटे और ले गया और लालाजी से कहा कि महाराज, यह इसके बच्चे हुये हैं। लालाजी ने सोचा कि यह तो खूब बेवकूफ

फँसा। लालाजी ने सभी बर्तन रख लिये। अगली शादी के लिये जब वह बर्तन लेने गया तो साहूकार ने बिना जमानत के काफी बर्तन दे दिया। बर्तन लौटाने के समय वह आदमी फिर थोड़े से छोटे छोटे बर्तन दे आया और कहा कि लालाजी इसके बच्चे जो पैदा हुए थे वह भी मैं दे चला हूँ। अब के जब वह आदमी लालाजी के यहाँ शादी के लिये बर्तन मांगने गया तो बोला—लालाजी अब मैं बड़ी शान की शादी करूँगा पीतल तांबे के बर्तनों से काम न चलेगा। लालाजी ने बर्तनों के लोभ से सारे साने चांदी के बर्तन दे दिये। दो चार दिन के बाद वह आदमी लालाजी के सामने जाकर रोने लगा कि लालाजी सभी बर्तन मर गये। लालाजी ने क्रोधित होकर उन पर मुकदमा चलाया। जब हाकिमने पूछा कि इनके बर्तन कैसे मर गये उस आदमी ने पूरा क़िस्सा हाकिम को सुना दिया। हाकिम बोला कि जो बर्तन बच्चे दे सकते हैं वह बर्तन मर भी सकते हैं।

४६—बेईमानी ✓

यस्मिन यथा बर्तते यो मनुष्यस्तस्मिन तथा वर्तिन स धर्मः।
मायाचारो मायया वर्तितव्यः साध्वाचारः साधुना प्रत्युपेयः॥

एक ठाकुर साहब अपनी दो सोने की ईंटें एक लालाजी के पास रखकर गंगा स्नान को गये। जब वह वापिस लौटकर आये तो उन्होंने अपनी सोने की ईंट मांगी। लालाजी ने कहा—भाई उन्हें तो चूहे खा गये। ठाकुर साहब ने कहा लालाजी आप चिन्ता मत करिये कोई बात नहीं है। थोड़ी देर में लालाजीका लड़का आया। ठाकुर साहब ने कहा बेटा हमारे साथ कुए पर स्नान करने चलोगे लड़का ठाकुर साहबकेसाथ चला गया। ठाकुर साहब लड़के को एक गुफा में बन्द कर वापस आ गये। लालाजी ने ठाकुर साहब से पूछा कि मेरा पुत्र कहां है। ठाकुर साहब बोले अरे भाई,उसे तो गिद्ध उठा ले गया। लालाजी ने क्रोधित होकर राज्य दरबार में शिकायत कर दी न्यायाधीश ने पूछा ठाकुर

साहब लड़के को गिद्ध कैसे ले जा सकता है। ठाकुर साहब ने उत्तर दिया जिस तरह कि सोने को चूहे खा सकते हैं। न्यायाधीश ने सारा किस्सा पूछा और दोनों की चीजें वापिस करवा दी। इससे लालाजी को बड़ा अपयश हुआ।

(बेईमानी से कोई लाभ नहीं होता किन्तु अपयश अवश्य हो जाता।)

४७--संसार

एक दिन ब्राह्मण बन में से जा रहा था। रास्ते में उसे एक हाथी दिखलाई पड़ा वह डर से भागते २ एक कुए में गिर पड़ा। परन्तु बीच में ही उसके हाथ एक बेल आ गई उसे उसने पकड़ लिया। जब ब्राह्मण की निगाह नीचे गई तो उसे एक साँप दिखलाई दिया ऊपर देखा तो हाथी खड़ा हुआ था। बेल बड़ी कच्चीथी। वह बड़ी आपत्ति में फंस गया और सोचने लगा कि क्या किया जाय।

(इसका दृष्टांत यह है कि इस संसार में आपत्तियां हाथी की भांति आदमी का पीछा करती हैं उनके डर के कारण आदमी कुए रूपी अवनतिमें गिरने लगता है तथा उसके लिए जो सहारा मिलता है वह बेल की भांति कच्चा होता है और सदैव उसे यह डर रहता है कि इस सहारे रूपी बेल के छूटने से सांप रूपी भय उसे डस जायगा। अतः संसार में इन सभी से डर कर ईश्वर के ऊपर भरोसा रख कर चलना चाहिये।)

४८—डर

एक किसान अपने बेटों से बोला—बेटा खेत कट चुका है अब दिन की रखवाली की तो इतनी चिन्ता नहींहै। डर तो असल में संध्या का है। इस वाक्य को पासमें ही छिपे हुए एक सिंह ने सुना। इस बात से सिंह बड़ा भयभीत हुआ क्योंकि वह संध्या जैसे जानवर का नाम भी

नहीं जानता था। उसी दिन रात्रि को एक धोबी अपने गदहे की तलाश करता हुआ वहाँ आ पहुँचा तथा उसने सिंहको गदहा समझा और उसे दो डंडे जमा कर घर की ओर घेरकर ले चला तथा रास्ते में घाट पर से उसने अपनी लादी सिंह पर लाद दी। सिंह की मारे डरके जान निकली जा रही थी। अचानक रास्ते में उसे एक लोमड़ी मिली लोमड़ी ने सिंह की यह दशा देखकर उससे कहा कि यह क्या बात है जो आप आज धोबीकी लादी लाद रहे हैं। सिंह बोला—यह तो संध्या की लादी है। लोमड़ी ने कहा कि हम तुम्हें छुटकारा दिलवाते हैं तुम जरा एक दहाड़ तो मार दो। सिंह के दहाड़ मारते ही धोबी वहां से भाग गया और सिंह मुक्त हो गया।

(यदि हृदय में डर बैठ जाता है तो शेर भी डरने लगता है।)

—०—

४६—झूठा सन्यासी

एक भक्त ने घोर जंगल में नदी के किनारे एक दूकान करली थी वह प्रत्येक साधु महात्मा को जो वहां से गुजरता था भर पेट भोजन देता था। एक दिन एक महात्मा जो रसायन बनाना जानते थे उसकी दूकान पर आये। दूकानदार ने उसे भोजन दिया। महात्मा ने उस दूकान की ओर देखा तो महात्माजी को उसमें बहुत कम माल दिखाई दिया। फलतः महात्मा जी ने दूकानदार से कुछ लोहा लाने को कहा। दूकानदार ने कारण पूछा। महात्माजी ने कहाकि मेरे पास पारस पत्थर की बटिया है उससे मैं तुम्हारे लिये सोना बना दूंगा। दूकानदार ने पूछा कि आप फिर उस बटिया को क्या करेंगे। महात्मा ने उत्तर दिया कि बाद में मुझे भी तो धन की आवश्यकता पड़ती रहती है। इस बात को सुनकर उस दूकानदार ने अपना एक डंडा उठाया और उस डण्डे से लोहे को पीटना आरम्भ किया वह लोहा सोने में परिणित हो गया। तब वह महात्मा से कहने लगा महात्माजी मुझे आपके सुवर्ण की आवश्यकता नहीं है परन्तु मुझे एक दुख है संसार को त्यागने के पश्चात

भी आप धन का लाभ नहीं त्याग सके। यह आपका सन्यास नहीं है किन्तु आपका जीवन एक लोभी जीवन है।

५०—ब्राह्मण

एक राजा अपने पिता के श्राद्ध के समय बहुत बड़ा ब्रह्म भोज किया करता था। श्रद्धा के कारण ब्राह्मणों के चरण भी स्वयं ही धोया करता था। अचानक एक ब्राह्मण के मिट्टी से युक्त पांवों को देख कर बोला—महाराज आपके पांव तो बड़े मैले हो रहे हैं। वह ब्राह्मण महाराज बोले ब्राह्मणों के चरण तो ऐसे ही होते हैं। राजा चुप हो गया। तत्पश्चात् जब सभी भोजन करने बैठे तो वह मैले पांवों वाले ब्राह्मण भी साथ में बैठे। सभी के भोजन समाप्त करने के पश्चात् राजा बोला कि जो ब्राह्मण एक लड्डू खायेगा उसे एकरुपया मिलेगा काफी ब्राह्मणों ने लड्डू खाये। राजा फिर बोला कि जो अब एक लड्डू खायेगा उसे दो रु० मिलेंगे। इसी प्रकार से राजा ने एक लड्डू खाने के लिये दस रुपये तक बोल दिये परन्तु इस गंदे पांवों वाले ब्राह्मण ने कुछ भी नहीं लिया। राजा ने भोजन समाप्ति के अनन्तर ब्राह्मण देव से रुपये न लेने और लड्डू न खाने का कारण पूछा। ब्राह्मण ने कहा-महाराज ब्राह्मणका धर्म तो संतोष रखना है हम पेटू नहीं हैं। जो पेटू होते हैं वे ही ज्यादा भोजन और रुपये के लोभ में फंसते हैं। ब्राह्मण तो संतोषी होता है।

(सन्तोषी ही ब्राह्मण होता है पेटू नहीं।)

५१-आत्मतीर्थ

इदं तीर्थं इदं तीर्थं भ्रमंति रामसा जनाः
आत्म तीर्थं न जानन्ति कथं मोक्ष श्रृथ प्रिये ॥

(कपिल गीता)

एक दिन एक वेदान्ती महात्मा प्रातः उषा काल में जब मल त्याग

के लिए गये तो उन्हें वहां पर एक हंडिया में रत्न भरे हुए मिले। महात्मा जी ने पाँव से उस हंडिया को हटा दिया और वह हंडिया उल्टी हो गई। सूर्योदय पर जब गांव के आदमियों ने धन देखा तो भीड़ इकट्ठी होगई तथा एक हाकिम भी वहीं पर आ गये। उन्होंने पास में पखाना पड़ा देखकर पूछा कि यहां कोई रहता भी है। गांव के आदमी बोले हां एक महात्मा रहते हैं। हाकिम ने महात्मा से पूछा कि आपने यह धन देखा था। महात्माजीने उत्तर दिया हां हाकिम ने पूछा कि आपने लिया क्यों नहीं। महात्मा जी ने कहा कि हमारे तो कोई काम की चीज नहीं थी हम क्या करते।

एक दिन भक्त ने आकर कहा महाराज मथुरा जी की परिक्रमा देने चलिये। महात्मा जी बोले हमारे लिये जूते मगा दो तब चलेंगे भक्त ने कहा महाराज मथुराजी की परिक्रमा तो जूते बिना पहिने हुये दी जाती है। महात्मा जी ने कहा कि मुझे तीर्थ से मोक्ष नहीं मांगनी है। मैं तो आत्मतीर्थ से मोक्ष मांगता हूं।

५२—ज्ञान

एक लालाजी भैयादूज के दिन यमुना स्नान के लिये मथुरा आये। उनका बच्चा रेती में बैठकर रेती का एक किला बनाने लगा। लालाजी ने बेटे से घर चलने को कहा परन्तु वह अपना किला बनाने में निमग्न रहा। इसके बाद बनाते में जब वह किला फूट गया तब वह बेटा पिता पर झुँझलाने लगा कि तुमने मेरा किला फूड़वा दिया ऐसा कह कर वह पुत्र लालाजी के साथ में चल दिया। बाप को ज्ञान हुआ कि जब वह झूठा किला बना रहा था तब तो मुझसे बोलना भी पसन्द नही करता था और जब यह सच्चा किला बन जायेगा तो मेरी शक्ल भी नहीं देखेगा।

(जीवन की छोटी छोटी घटनायें सत्य का ज्ञान करातीं हैं।)

—०—

५३—आत्मा का मूल्य

एक भक्त ने गणेश जी की तथा उनके वाहन मूसक (चूहा) की पांच तोले की मूर्तियां बनवाई और पूजा करना आरम्भ कर दिया देव वश उसका सारा धन नष्ट हो गया। एक दिन विवश होकर उसने यह विचार किया कि इस गणेश जी की तथा मूसक की मूर्ति को ही बेच कर धन प्राप्त किया जाय। जब धन इकट्ठा हो जायगा तब फिर बनवा लेंगे यह विचार कर उन मूर्तियों को बेचने चला। सुनार ने दोनों मूर्तियों को तोलकर दोनों का मूल्य बराबर बतलाया भक्त बड़ा क्रोधित हुआ और बोला कि गणेश भगवान का और चूहे जानवर का दोनों का ही बराबर मूल्य ? इस पर सुनार ने उत्तर दिया—महाराज आप इनका देवतापन तो अपने पास रख लीजिये। हमें तो सोने से मतलब है। इसका दृष्टांत यह है कि जैसे वह मूर्तियां पांच २ तोले की थी उसी प्रकार यह शरीर भी पृथ्वी, जल, तेज, वायु आकाश इन्हीं पंच तत्वों से निर्मित हैं। जैसे मूसक और गणेश जी दोनों मेल के थे वैसे यह सभी प्राणी पंच तत्व से बने हैं। सोना दोनों में था। सोने का ही वास्तव में मूल्य था। इसी प्रकार आत्मा सभी में होती है आत्मा का ही मूल्य होता है। सभी आत्माओं का बराबर मूल्य है। अतः किसी भी आत्मा को दुःख नहीं देना चाहिये।

———

५४—इधर कुंआ उधर खाई

भांटा एक को पित करे, करे एक को वाय।

एक किसान के दो लड़कियां थीं। उसने एक लड़की की शादी एक किसान से और दूसरी एक कुम्हार से करदी। जब दोनों लड़कियां पिता के यहां आई तो पिता ने कुशल पूछा। पहिली बेटी जो किसान के यहाँ ब्याही थी बोली—पिताजी सभी ईश्वर की कृपा है। आप केवल भजन करिये कि मेह खूब अच्छा बरसे। दूसरी बेटी से जब

किसान ने बातें की तो बेटी ने कहा पिता जी आप ईश्वर से यह प्राथना कीजिये जिससे मेह न बरसे। नहीं तो मेरा आंवा नष्ट हो जायगा। पिता असमंजस में पड़ गया कि ईश्वर से क्या प्रार्थना करूँ।

संसार में प्रत्येक कार्य करने से एक का लाभ और दूसरे की हानि होती है अतः जिसमें आपको अधिक लाभ हो वही पक्ष वरण करने योग्य है।

५५—गोरस बेचत हरि मिले

गणेशजी के एक भक्त ने एक बार गणेशजी की पूजा में से एक चूहे को मिठाई ले जाते देखकर बिचार किया कि गणेशजी से तो चूहा ही बलवान है अतः चूहे की ही पूजा की जाय। ऐसा विचार कर उसने चूहे की एक टाँग बांध कर उसकी पूजा करने लगा। एक दिन एक बिल्ली को देखकर चूहा भाग निकला भक्त ने सोचा कि बिल्ली चूहे से ज्यादा शक्ति शाली है। अतः इसी की पूजा करनी चाहिये। उसने बिल्ली को बांध कर उसकी पूजा करना आरम्भ कर दी। एक कुत्ते ने बिल्ली को डरा दिया तब उसने कुत्ते की पूजा करना प्रारम्भ कर दी। कुत्ता रोटी के लोभ से उसके चौके में घुस गया तो उसकी स्त्री ने उसे खूब पीटा। अब उसने सबसे शक्ति शाला अपनी स्त्री को जानकर उसकी पूजा करना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन स्त्री ने सब्जी ठीक नहीं बनाई इस कारण उसने क्रोधित होकर स्त्री की अच्छी प्रकार से मरम्मत कर दी। बाद में उसे ज्ञान हुआ कि स्त्री से अधिक तो मैं ही शक्तिशाली हूँ। तब उसने आत्मा की पूजा करना प्रारम्भ कर दिया जिसके फलस्वरूप उसकी मुक्ति हो गई।

(मनुष्य उत्तरोत्तर यदि बढ़ता चला जाय तो अन्त में उसे कुछ न कुछ तो मिल ही जाता है परन्तु भिन्न भिन्न रास्तों पर चलने वाला मनुष्य कुछ नहीं प्राप्त कर सकता है।)

५६—वज्रमूर्ख

मातृवत परदारेषु. पर द्रव्येषु लोष्ठ ।त ।
आत्मवत सर्व भूतेषु, यः पश्यति स पण्डितः ।

एक शास्त्री जी अपने पुत्र को उपरोक्त श्लोक पढ़ा रहे थे और कह रहे थे । बेटा, पराई स्त्री को माँ समझना चाहिये, पराई वस्तु को मिट्टी समझना चाहिए तथा सम्पूर्ण प्राणियों को अपना जैसा समझना चाहिये । वह लड़का बड़ा उद्दण्ड था । जब वह पाठ पढ़कर जा रहा था तो रास्ते में उसे एक स्त्री दिखलाई पड़ी । पहिला पढ़ा हुआ पाठ याद आया और सोचने लगा कि मैं अपनी मां को पीटता हूँ बस फिर क्या था उसने स्त्री के चार डण्डे जमा दिये । जब वह आगे गया तो एक हलवाई की दूकान पर मिठाई खाई और ध्यान आया कि पर 'द्रव्येषु लोष्ठवत्' दूसरे की वस्तु मिट्टी की तरह होती है सोचाकि मिट्टी के व्यर्थ में इसे दाम क्यों दिये जांय । अतः हलवाई के हजार बार मांगने पर भी उसने उसे कुछ नहीं दिया । वह स्वयं शराब पिया करता था तो बिचार किया कि आत्मवत् सर्वभूतेषु कि सभी प्राणियों को अपनी भांति समझना चाहिये अतः जैसे मैं पीता हूं वैसेही पिताजी को पिलाऊंगा । जैसा मैं वैसे ही पिताजी । उसने शराब खाने से बोतल लाकर पिताजी को पीने के लिये कहना प्रारम्भ किया । पिताजी ने कहा कि मूर्ख यह क्या करता है अभी पिताजी आपने ही तो पढ़ाया कि आत्मवत् सर्व भूतेष । पिताजी बोले तू तो मूर्ख ही रहा इसका मतलब यह थोड़ा ही होता है इतने में वह स्त्री तथा हलवाई शिकायत करने आ गये । पिताजी ने फिर पुत्र से कारण पूछा पुत्र ने वही श्लोक दुहरा दिया पिताजी समझ गये कि यह तो बज्र मूर्ख है ।

(दूसरे मनुष्यों की स्त्रियों को मां की तरह, दूसरे की वस्तु को मिट्टी की तरह तथा सम्पूर्ण प्राणियों को अपनी तरह जो मनुष्य समझता है वही पण्डित है ।)

५७-मियाँ की जूती मियां का सिर

एक आदमी के कत्ल करने पर एक नाई को फांसी की सजा होने वाली थी। नाई ने एक वकील साहब के पास जाकर सलाह ली! वकील साहब ने कहा कि हम तुम्हें तरकीब तो बतला सकते हैं परन्तु रुपये तुम्हें ५ हजार देने होंगे। जान सभी को प्यारी होती है। नाई ने कह दिया हाँ वकील साहब मैं अवश्य तुम्हें रुपये दे दूंगा। वकील साहब ने नाई से कहा कि जब हाकिम तुमसे कोई भी प्रश्न पूछे तुम मैं कह दिया करना और कोई उत्तर मत देना। उसने ऐसा ही किया। हाकिम ने पूछा कि तुम ने इसी आदमी को मारा नाई ने कहा मैं फिर हाकिम ने पूछा कि तुम इसे जानते थे। नाई बोला मैं इसी प्रकार से प्रत्येक सवाल के उत्तर में उसने मैं उत्तर दिया। हाकिम नाराज होकर बोला यह क्या बदतमीजी है तब वकील बोला—महाराज यह तो पागल है यह क्या मार सकता है। फलतः हाकिम ने उसे मुक्त कर दिया। बाहर आकर वकील ने अपने रुपये मांगे तब नाई बोला मैं वकील साहब कहने लगे हमसे ही मैं। नाई ने उत्तर दिया महाराज जो मैं फांसी से बचा सकती है वह ५ हजार रुपयों से भी।

—(०)—

५८—अनुमान

'खीर बढ़िया होती है' जब यह शब्द एक अन्धे ने सुने तो वह कहने वाले महाशय से पूछने लगा— भाई यह खीर क्या बला है इसका रंग कैसा होता है। महाशयजी ने उत्तर दिया—सफेद सफेद। अन्धा को फिर भी यह उत्तर संतोष जनक प्रतीत नहीं हुआ और बोला श्रीमान जी सफेद कैसी। महाशय जी ने कहा-अरे भाई बगुले जैसी। अन्धे ने पुनः प्रश्न किया कि बगुला कैसा होता है? महाशय जी ने हाथ टेढ़ा करके जिससे बगुले की गर्दन का आकार बन जाय कहा— ऐसी। अन्धे ने हाथ से टटोल कर कहा अरे भाई यह तो बेकार है गले में ही अटक जायगी। हम से तो ऐसी टेढ़ी खीर नहीं चलेगी।

५६—काल करे सो आज कर

एक आलसी साहूकार की स्त्री उससे सदैव भजन करने का आग्रह किया करती थी परन्तु साहूकार सदैव यह कह कर कि कल से प्रारम्भ करूँगा। टाल दिया करता था। जब वह साहूकार बीमार पड़ा तो वैद्य जी की दवा उस साहूकार की स्त्री ने साहूकार को नहीं दी। साहूकार ने जब दवाई माँगी तो स्त्री ने कहा आज नहीं कल देंगे। साहूकार अत्यन्त क्रोधित होकर बोला बीमार तो हम आज हैं आप कल दवाई देंगी। स्त्री ने उत्तर दिया कि आवश्यकता तो भजन करने की आज है और आप कल करेंगे ? कल का क्या भरोसा यह शरीर आज ही नष्ट हो जाय।

६०—बुरा

बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न मुझसा कोय।

एक धनिक साहूकार ने जिसे अपने योग्य होने का बड़ा घमंड था एक रमते योगी महात्मा को एक शीशा दिया और कहा महात्माजी जो मूर्खों में भी श्रेष्ठ मूर्खराज मिले उसे आप दे दीजिये उस शीशे में एक आदमी की अनेकों प्रतिमाऐं दृष्टिगत होती थीं। जब महात्मा योगी पर्यटन के पश्चात लौटकर आये तो उन्होंने साहूकार को मृत्यु शैय्या पर देखा। साहूकार योगी महात्मा को पहिचान कर बोले महाराज मेरा शीशा ! योगी ने साहूकार से पूछा—साहूकार तू कोई ऐसी विद्या जानता है जो तुझे बचा सकती हो। साहूकार ने उत्तर नहीं दिया। फिर महात्मा जी ने पूछा अच्छा तेरे धन में यह सामर्थ्य है कि मुझे बचा सकता है साहूकार ने उत्तर दिया—नहीं। तब योगी महात्मा ने वह दर्पण उसे ही दे दिया और कहा कि आप से बड़ा मूर्खराज मुझे संसार में नहीं मिला जो सभी वस्तु की निस्सारता को जानते हुए उसी में जीवन भर लगा रहता है।

(आत्मावलोकन की उन्नति का साधन।)

६१—स्वार्थी

एक स्वार्थी लालाजी ने शिवजी की पूजा करना आरम्भ किया। फलतः शिवजी उस पर प्रसन्न हो गये शिवजी ने प्रसन्न होकर कहा कि लो यह घण्टा ले जाओ और जब तुम्हें आवश्यकता पड़े तभी इसे बजा देना तुम जो कुछ माँगोगे वह मिल जायगा। परन्तु यही बड़ा परोपकारी घटा है। आपसे दुगुना आपके पड़ौसियों को मिल जायगा। लालाजी ने बरदान का घंटा ले तो लिया परन्तु पड़ौसियों का लाभ होने के कारण उसे कभी काम में नहीं लाए। एक दिन जब वह अत्यन्त गरीब हो गये तो अपनी स्त्री से घंटे के न छूने को कह कर परदेश पैसा पैदा करने चल दिये। स्त्री ने अपने कुछ दिन दुख में व्यतीत किए एक दिन जब उसके पास कुछ न रहा तो उसने विचार किया कि इसे बाजार में बेच ही दिया जाय जैसे ही उसने घन्टे को उठाया और वह जो आशा कर रही थी वह घंटे में से टपक पड़ा। इस बात से प्रसन्न होकर अब उसने प्रतिदिन उससे मांगना आरम्भ कर दिया, और फल स्वरूप वह बड़ी भाग्यशालिनी बन गई। परन्तु पड़ौसी उससे दुगुने भाग्यशाली बन गए अब उसका पति लौटकर आया और उसने यह ढंग देखा तो बहुत दुखी हुआ क्योंकि वह तो स्वार्थी था अब उसने घण्टे से प्रार्थना की कि मेरी एक आँख फूट जाय पड़ोसियों की दोनों फूँट गईं। मेरे घर के दरवाजे के सामने एक कूआ खुद जाय पड़ौसियों के यहां दो कुए बन गए। अब वे पड़ौसी अन्धे हो गये और उनके दरवाजे के सामने कुए हो गये तो वे सभी कुओं में गिर गिर कर मरने लगे।

६२--व्यावहारिक जीवन

तीन शास्त्री काशी से अध्ययन समाप्त कर अपने घर के लिए चले। रास्ते में उन्हें एक चौराहा मिला। विचार किया कि अब किधर

चला जाय। उनमें से एक ने तुरन्त ही शास्त्र खोले और पढ़ा कि महाजनी येन गतः स पन्था अर्थात् महाराज (बड़े आदमी) जिस मार्ग से जांय वही मार्ग उचित है। उसी समय कुछ बनिये। महाजन एक मुर्दे को लिए जा रहे थे अतः शास्त्र के अनुसार शास्त्रियों ने उधर ही चलना आरम्भ किया। जब वे मरघट पर पहुंचे तो दूसरे शास्त्री ने पुस्तक खोलकर देखा तो उसे यह श्लोक दिखाई पड़ा राजद्वारे श्मशाने च यो तिष्टति स पण्डितः। अर्थात् कचहरी और श्मशान में जो मौजूद हो वही भाई है। उन्होंने जब इधर उधर देखा तो एक गदहा दिखलाई पड़ा। भाई की तरह सभी शास्त्रियों ने उसका स्वागत किया उसे नदी में स्नान कराये। इसी बीच में एक शास्त्री की दृष्टि एक ऊँट पर पड़ी। उस ऊँट को देखकर शास्त्री जी ने पुनः किताब खोलकर देखा तो उसमें उन्हें एक श्लोक मिला धर्मस्य त्वरिता गतिः धर्म की चाल तेज होती है। अतः उन्होंने ऊंट की चाल देखकर उसे धर्म मान लिया। दूसरे शास्त्रीजी ने अपने शास्त्र में से एक दूसरा श्लोक निकालकर महा भाई इष्ट धर्मेण यो जयेत। मित्र को धर्म में लगाना चाहिए। अतः उन्होंने गदहे को ऊंट की गर्दन में बांध दिया। ऊंटके खड़े होने पर वह गदहा ऊंट के गर्दन में लटक गया और भौं भौं करने लगा। इसी समय गदहे का मालिक धोबी आ गया और उसने उन सभी शास्त्रीजी की अच्छी प्रकार से मरम्मत बनाई।

(पढ़े लिखे विद्वान होने पर भी मनुष्य यदि सांसारिक कार्य में कुशल नहीं हैं तो उनकी हंसी ही होती है।)

६३-पात

नवदुर्गा पूजा के अवसर पर एक लालाजी ने पण्डित जी को दुर्गा देवी का पाठ करने के लिये बुलाया तथा अपनी सेठानी से यह कह कर दूकान चले गये कि जो कुछ पण्डित जी कहें वह उसका काम कर देना। पाठ करते करते पंडित जी ने पढ़ा इति श्री मार कण्डे पुराणे

स्त्री समझी कि पुराने कण्डे (उपले) मारने चाहिये। अब उसने पुराने कण्डे इकट्ठे करके रख लिए तथा जब दूसरी बार पंडितजी ने मारकंडे पुराने कहा तो उसने पंडितजी को पुराने कंडे मारना प्रारम्भ कर दिया पंडितजी भी उसी दिन से समझ गये कि सदैव पैसे का ही लोभ नहीं करना चाहिए। योग्य और अयोग्य का भी ख्याल रखना चाहिये।

८४—पहले ही कह देते ✓

एक नवयुवक अपनी ससुराल गये थे। सास के बीमार होने के कारण खीचड़ी का प्रयोग खाने में होता था। लालाजी के लिए उन्होंने विशेष खाद्य सामिग्री बनाई। इस पर लालाजी ने पूछा कि हमारी माताजी क्या खाती हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि वे तो खीचड़ी खाती हैं। लालाजी ने कहा कि वही फिर हमें खिलाइये। हम कौन घर से अलग हैं। ससुराल वालोंने वाध्य होकर लालाजीको खिचड़ी खिलादी। खिचड़ी लालाजी को बहुत स्वादिष्ट लगी। जब लालाजी अपने घर को चले तो उन्होंने खीचड़ी का नाम पूछा और रास्ते भर रटना प्रारम्भ किया। भाग्यवश खीचड़ी २ कहते कहते उनके मुँह से खाचिड़ी खाचिड़ी निकलने लगा। रास्ते में एक किसान ने जो चिड़ियों से खेत की रक्षा करते करते परेशान हो गया था इस खाचिड़ी-खाचिड़ी शब्द को सुनकर इस नवयुवक को पीटा और बोला मूर्ख खाचिड़ी नहीं उड़ चिड़ी कह। तब इस बेचारे नवयुवक ने उड़ चिड़ी-उड़ चिड़ी कहना प्रारम्भ किया। आगे एक चिड़ीमार जाल बिछाये बैठा था। इन शब्दों को सुनकर उसने इसे पीटना शुरू किया और कहा सुबह से तो यह समय हो गया अभी तो एक भी चिड़िया नहीं फँसी है और तू कहता है कि उड़ चिड़ी। युवक बोला तो महाराज मैं क्या कहूँ चिड़ीमार ने उसे समझाया और कहा कि फन्दे में आ चिड़ी कहा कर। अब युवक इसी बात को रटते चलने लगा। आगे जाने पर उसे कुछ चोर जो कि

चोरी करने जा रहे थे। दिखलाई दिये। चोरों ने जब यह सुना कि फन्दे में आ चिड़ी तो उन्होंने देखा कि यह तो हमारा शकुन बिगाड़ता है अतः उन्होंने इसे खूब पीटा और कहा कि यह कहो कि ले ले आओ और धर धर जाओ। बेचारे नवयुवक ने यह रट लगाना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु अभाग्यवश एक वैश्य का जवान पुत्र मर गया था। लोग बाग उसके पीछे रोते पीटते जा रहे थे। इस युवक के यह शब्द उन्हें सभी को बुरे लगे तथा सभी ने इसकी अच्छी तरह से मरम्मत की। कुछ समझदार लोगों ने उसे बुला कर कहा ऐसा नहीं कहा करते यह कहा करो कि ऐसा 'किसी के न हो' इसको रटते रटते युवक ने फिर आगे की राह ली आगे एक राजा के पुत्र का राज्यभिषेक होरहा था जब यह शब्द राज्य कर्मचारियों ने सुने तो उन्होंने उसे पकड़कर पीटना शुरू किया और राजा के सामने उपस्थित किया। राजा ने उदारता वश उसे मुक्त कर दिया। और कहा भाई यह कहा करो कि ऐसा सभी के हो। जब यह युवक अपने घर पर गया तो उसने अपनी स्त्री से कहा कि मेरे लिये 'ऐसा सभी के हो' बनादो। स्त्री ने कहाकि मैं तो नहीं जानती। रुष्ट होकर उस युवक ने स्त्री की अच्छी तरह पिटाई की। शाम को रोते-रोते स्त्री ने कहा कि तुमने तो मारते-मारते मेरी खिचड़ी बनादी है। पति ने कहा भगवान यदि जब से ही यह खिचड़ी याद आ जाती तो मेरी इतनी मरम्मत ही क्यों होती।

६६—नीम हकीम खतरे जान

एक दिन एक वैद्यजी अपने पुत्र के साथ में एक मरीज को देखने गये। मरीज की नाड़ी देखते-देखते वैद्यजी की निगाह उसकी खाट के नीचे पड़े हुए शन्तरे के छिलकों पर पड़ी। उन्होंने मरीज से कहा—क्यों तुमने आज शन्तरे खाये हैं। वैद्यजी की बात को मरीज ने मान लिया तब सभी देखने वाले बड़े आश्चर्य में हुए तथा वैद्यजी की योग्यता की प्रशंसा करने लगे। बेटे ने वैद्यजी से पूछा कि 'पिताजी

आपने यह कैसे समझ लिया कि इसने शंतरे खाये हैं। वैद्य ने उत्तर दिया बेटा उसकी खाट के नीचे शंतरे के छिलके पड़े हुए थे। एक बार वैद्यजी की अनुपस्थितिमें जब उनका लड़का एक मरीज को देखने गया तो उसने उस मरीज की शय्या के नीचे घोड़े की जीन देखकर कहा कि इसने घोड़ा खाया। सभी व्यक्तियों ने उसे मूर्ख जानकर निकाल दिया। जब घर पर पुत्र ने यह सारा वृत्तान्त वैद्यजी को सुनाया तो वैद्यजी ने कहा कि मूर्ख, कहीं घोड़ा भी खाया जाता होगा।

६७—भेड़ चाल

एक बदमास को राजा ने उसकी नाक काटी जाने की सजादी। नाक के कटने के पश्चात् उस बदमाश ने राधेश्याम २ कहकर नाचना प्रारम्भ कर दिया। जब वह रोने के स्थान पर नाचने लगा तो लोगों ने कारण पूछा कि भाई तुम रोते तो नहीं हो किन्तु नाच रहे हो। बदमाश बोला कि भाई मुझे भगवान के दर्शन होरहे हैं। अब पूछने वालों की भी इच्छा हुई कि मैं भी क्यों न भगवान के दर्शन करलूं। उसने भी अपनी नाक काटली परन्तु उसे दर्शन नहीं हुए। उसने उस अपने बदमाश गुरु से कहा। गुरू ने उसके कान में कह दिया कि भाई नाक तो अब कट ही गई अब व्यर्थ में अपना मजाक क्यों बनवाते हो तुम भी नाचना प्रारम्भ कर दो तथा यही शब्द कहो कि मुझे भगवान के दर्शन हो रहे हैं। इसी प्रकार से उसके हजारों शिष्य होगये राजा भी बड़ा भगवान का भक्त था जब उसके कानों तक यह खबर पहुंची तो उसने भी स्वयं अपनी नाक कटवाने का प्रस्ताव मन्त्रियों के सामने रक्खा मन्त्रियों ने जब यह सुना तो एक मन्त्री बोला महाराज पहिले मुझे परीक्षा कर लेने दीजिए। मन्त्री की जब नाक कट गई तो गुरुजी ने वही शब्द मन्त्री से कहे कि अब आपकी तो नाक कट गई। आप भी यही कहना प्रारम्भ कर दीजिए। मन्त्री ने यह सभी वृत्तान्त राजा को कह सुनाया और फलतः उन सभी भक्तों को फाँसी हुई।

६८—धर्मान्धता

एक पण्डितजी जिस समय पूजा करते थे और आरती के लिए शंख बजाते थे तभी पीछे रहने वाले कुम्हारों का गदहा भी रेंकना प्रारम्भ कर दिया करता था। पडित जी ने विचार किया कि निश्चय ही यह गदहा पूर्व जन्म में कोई महात्मा होगा जो कि भगवान की आरती में इतना श्रद्धापूर्वक सहयोग देता है। कुछ दिन के बाद यह आवाज आना बन्द हो गई। तब पंडित जी ने कुम्हार से इस गधे के बारे में पूछा कुम्हार ने सोचा कि पंडितजी वह बेचारा गधा तो मर गया। पंडितजी ने सोचा कि महात्मा संखेश्वर मर जाँय और हम सर भी न मुड़वायें यह ठीक नहीं है। अतः उन्होंने अपना सर मुड़वा दिया। जब वे शाम को अपने एक शिष्य बनिये की दूकान पर गये तो शिष्य ने पूछा कि पंडितजी आपका यह सर आज क्यों मुड़ा हुआ है। पंडितजी ने कहा कि महात्मा संखेश्वर मर गये हैं इस कारण से मैंने सर मुड़ाया है। तब शिष्य ने भी गुरूजी का अनुकरण कर अपनी खोपड़ी घुटवा ली। बाजार वालों ने सेठजी की खोपड़ी साफ करने का कारण पूछा तो सेठजी बोले तुम्हें पता भी नहीं है कि महात्मा संखेश्वर मर गये हैं। सभी बाजार वालों ने अब अपनी अपनी खोपड़ी साफ़ करवाना शुरू कर दिया। इतवार के दिन जब फौज के सिपाही बाजार सामान खरीदने आये तो सारे बाजार के दुकानदारों के सर पर साफ होने का कारण पूछा उन्होंने उत्तर दियाकि महात्मा संखेश्वर की मृत्यु हो गई है। यह समाचार सुनकर सारी फौज ने अपना सर मुड़वा लिया। एक दिन जब कप्तान फौज देखने आया तो उसने सारी फौज की घुटी खोपड़ी होने का कारण पूछा। सभी ने उत्तर दिया कि महात्मा संखेश्वर की मौत हो गई है आज अब कप्तान को भी जानने की उत्सुकता बढ़ी कि यह कौन इतने बड़े महात्मा थे। जब उसने खोज की तो मालूम पड़ा कि यह संखेश्वर महाराज गधेश्वर महाराज थे।

(धर्म की प्रत्येक बात को समझ सोचकर तर्क की कसौटी पर कस कर ही माननी चाहिये।)

६९—बङ्गाली बुलबुल

कुम्भ के मेले में सफाई का खास तौर से ध्यान रखा जाता है। एक बार एक मालिन के पेट में बहुत दर्द होने के कारण पास में ही पाखाना फिर लिया। इतने में ही एक सिपाही उधर से आ निकला मालिन ने चालान होने के डर से उस पर अपनी एक डलिया रख दी। सिपाही ने पूछा कि यह क्या है। मालिन ने उत्तर दिया। सरकार इसमें बंगाली बुलबुल है। अभी अचानक आ बैठी है। यह हजारों रुपये खर्च करने पर भी नहीं मिलती है। जिसके यहाँ यह चली जाती है उसके यहाँ धन की कमी नहीं रहती है। आप कृपया इस डले को पकड़े रखिये थोड़ी देर में मैं एक पिंजड़ा लेकर आती हूँ। यह कहकर मालिन तो रफूचक्कर हो गई सिपाही उसे दाबे हुए बैठा रहा। उन्होंने इस सिपाही से डलिया दाबकर बैठने का कारण पूछा। सिपाही ने कहा सरकार इसमें बंगाली बुलबुल है जो हजारों रुपयों की होती है। वे सभी इसके पास में खड़े हो गये। जनता के बहुत से लोगों ने तमाशा बना लिया और फलतः बड़ी भीड़ हो गई। भीड़ को देखकर सुपरिण्टेन्डेन्ड ने आकर भीड़ का कारण पूछा सभी ने बतलाया कि बङ्गाली बुलबुल है। सुपरिण्टेन्डेन्ट ने डले के पास जाकर सभी को बुलबुल पकड़ने को तैयार कर डले को हटाया तो पखाना पड़ा मिला। सभी पुलिस कर्मचारी अपनी मूर्खता पर बड़े लज्जित हुए।

—×—

७०—भेड़ चाल

गतानुगति के लोकोः न लोकः परमार्थिकः।

तीर्थ यात्रा जाते समय एक महात्माजी ने अपने कमण्डल इत्यादि बरतन एक स्थान पर गाड़ दिये और उसके ऊपर एक छोटा सा चबू-

तरा बनाकर तुलसी का पेड़ लगाकर अपनी यात्रा को चले गये। ग्राम-वासियों ने जब यह देखा कि महात्मा जी तीर्थ यात्रा जाते समय एक चबूतरा और तुलसी का पेड़ लगा गये हैं तो उन्होंने भी यही धार्मिक बात समझ कर जब कभी वे तीर्थ यात्रा को जाने लगे एक इसी प्रकार चबूतरा तथा तुलसी लगाना प्रारम्भ कर दिया। जब महात्माजी वापिस लौटकर आये तो उन्होंने यह परम्परा देखकर अपना माथा ठोका और कहने लगे कि वास्तव में यह संसार भेड़ चाल ही चलता है दूसरे के हानि लाभ का तो तनिक भी ध्यान नहीं रखता है।

—(०)—

७१—मूर्ति पूजा

दुनियां ऐसी बावरी पत्थर पूजन जाय।
घर की चाकी कोई न पूजे जाको पीसो खाय॥

एक नई रोशनी की पढ़ी लिखी बहू जब ससुराल गई तो उसकी सास उसे अपने इष्टदेव के मन्दिर में पूजा करने के लिये ले गई। वह मूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखती थी। विचार करने लगी कि क्या किया जाय। यदि मैं मना करती हूँ तो यह सभी मुझे बुरी बतलाने लगेंगे और ब्याह पर ही मेरी बुराई शुरू हो जायगी। सोचते सोचते एक तरकीब उसके दिमाग में आई ज्योंही वह मन्दिर के दरवाजे पर गई तो वहाँ दरवाजे पर पत्थर के बने हुये पहरेदारों को देखकर झिझकने लगी। सास ने पूछा क्यों बेटी क्या बात है। बहू बड़ी इज्जत के साथ बोली—माताजी इन पहरेदारों से डर लगता है यह मुझे अन्दर नहीं जाने देंगे। सास बोली बहूरानी, तू बहुत पगली है। कहीं पत्थर के पहरेदार भी कुछ कर सकते हैं। आगे मन्दिर के दूसरे दरवाजे पर बने हुए पत्थर के सिंहों को देख कर वह फिर डरने लगी। सास ने फिर डरने का कारण पूछा। बहू ने कहा इन सिंहों से डर लगता है कहीं यह मुझे खा न जाँय। सास ने उत्तर दिया—बेटी

पत्थर में कौन जान होती है जोतुझे खा जाँयगे। यह तो झूठे शेर हैं जब वह सभी मन्दिर में मूर्ति के पास पहुँचे तो सास ने बहू से कहा बेटी भगवान के हाथ जोड़ो और वरदान मांगो। यह तुम्हें सन्तान देंगे। बहू ने कहा—माताजी, जो पत्थर आदमी को अन्दर आने से रोक नहीं सकता है जो पत्थर शेर होने पर आदमी को खा नहीं सकता है वह पत्थर आदमी को सन्तान क्या दे सकता है।

७२—अधिक समझ

एक मूर्ख किसान खेत में घास काट रहा था। भोजन आ जाने के कारण उसने खुरपी को घास में पड़ा छोड़कर भोजन करने लगा जब वह भोजन करके उठा तो उसकी खुरपी धूप के कारण बहुत गरम हो गई थी। किसान समझ गया कि खुरपी को बुखार आगया अतः वह शीघ्र ही पास वाले डाक्टर के यहाँ खुरपी का इलाज कराने ले गया। डाक्टर ने सब हाल पूछ कर दवा बतलादी कि इसे रस्सी में बाँध कर कुए में लटका दो। कुए में भीगने से खुरपी का बुखार उतर गया। कुछ दिनों पश्चात उसी किसान की माँ को बुखार आया तो किसान ने सोचा कि बुखार की दवाई तो उस दिन डाक्टर साहब ने मुझे बतला ही दी है। अब डाक्टर के पास यदि चलोगे तो वह पैसे बेकार ही में ले लेगा। ऐसा विचार कर उसने माँ के हाथ पाँव को रस्सी से कसकर कुए में लटका दिया। बेचारी बुढ़िया ने खूब हल्ला मचाया पर वहाँ तो उसे बुखार उतारने का ध्यान था अतः उसने एक बात कान नहीं की थोड़ी देर में जब उसने माँ को निकाला तो माँ मर चुकी थी। किसान माँ को साथ में ले जाकर डाक्टर से लड़ने लगा और कहने लगा अजी डाक्टर साहब आपने कैसी बुरी दवाई बतलाई थी जो मेरी माँ की यह हालत हो गई डाक्टर के पूछने पर किसान ने सभी हाल बतलाया। डाक्टर बोला यह तो मर गई। कोरिया हा कथा बांच लेवें तो ब्राह्मणों को कौन पूछे।

७३—तमीज

एक ठाकुर साहब के तीन पुत्र थे जिनमें एक पढ़ा लिखा था वह कचहरी का काम करता था तथा दो खेत का काम किया करते थे। बाप की मृत्यु के पश्चात् खेत का काम करने वाले दोनों मूर्ख बेटों ने विचार किया कि हमारा बड़ा भाई कचहरी का काम करता है और बढ़िया बढ़िया कपड़े पहिनता है तथा बड़े बड़े आदमी और राजा बगैरह सभी से मिलता है हम यहाँ धूप में मरते हैं और गन्दे कपड़े पहिनते हैं। अब हम ही इस काम को अपने हाथों में क्यों न ले लें। शाम को जब भाई कचहरी से लौट कर आया तो उसको दोनों भाइयों ने बुलाकर कहा कि कल से यह सबसे छोटा भाई कचहरी जाया करेगा और तुम खेत का काम करोगे। बड़ा भाई जो कचहरी जाया करता था बड़ा सीधा था उसने कहा ठीक है, कोई भी चले जाओ। दूसरे दिन जब छोटा भाई कचहरी गया तो राजा साहब को वहाँ बैठा न देख महलों में चला गया। राजा वहाँ हजामत बनवा रहे थे। उसने देखा कि राजा के चोटी नहीं थी वह हंसने लगा राजा ने हंसने का कारण पूछा। उसने उत्तर दिया महाराज आपके सर पर चोटी तो नहीं है। अगर आपका सर कट जाये तो किससे पकड़ कर उठाया जायगा। राजा ने क्रोधित होकर उसे कैद कर लिया। दूसरे दिन दूसरा भाई राजा के यहाँ आया तो राजा ने कहा कि अरे तुम्हारा छोटा भाई बहुत मूर्ख है। मुझसे पूछने लगा कि तुम्हारे चोटी नहीं है अगर तुम्हारा सर कट जायगा तो कैसे उठाया जायगा। मझले भाई ने उत्तर दिया सरकार यह नादान है। अरे आपकी डाढ़ी पकड़ कर उठा लिया जायगा। यह इतनी लम्बी डाढ़ी किस काम की है। राजा ने उसे भी कैद करवा दिया। दोनों भाइयों को देखकर बड़ा भाई कचहरी आया तो सारा वृत्तान्त सुना उसने राजा से प्रार्थना करके उन्हें मुक्त करा दिया।

७४—मैं अकेला

कन जोड़े मन जुड़े, खाते निवरे सोय।
बूँद-बूँद सों घट भरे, टपकत रीता होय।।

एक राजा ने बहुत सुन्दर संगमरमर का तालाब बनवाया था। उसने विचार किया कि इसमें पानी के स्थान पर यदि दूध भरवाया जाय तो बहुत सुन्दर रहेगा। यह विचार उस राजा ने अपनी मन्त्री के सामने प्रगट किया। मन्त्री ने कहा महाराज आप सभी शहर में यह मुनादी पिटवा दीजये कि नगर का प्रत्येक आदमी एक कलश दूध आज रात को तालाब में डालेगा इस तरह से तालाब भी दूध से भर जायगा और कुछ खर्च भी न होगा। सलाह को उचित समझ कर राजा ने ऐसा ही किया। प्रत्येक आदमी ने मन में सोचना प्रारम्भ किया कि सभी दूध डालेंगे और मैं अकेला इसमें अपना पानी का कलश डाल दूंगा तो किसी को क्या मालूम पड़ेगा। अतः सभी अपना पानी का कलश लाते और उसमें डालकर चले जाते। सुबह जब तालाब को देखने राजा और मन्त्री पहुँचे तो सारा तालाब पानी से भरा हुआ मिला।

———

७५—सत्य की जीत

(सत्यं जयति मानृतम्)

एक लकड़हारा जंगल में नदी के किनारे एक वृक्ष पर बैठा-बैठा लकड़ी काट रहा था। अचानक उसकी कुल्हाड़ी नदी में जा गिरी बेचारा लकड़हारा फूट-फूट कर नदी के किनारे बैठ कर रोने लगा। इतने में इस दुख भरी आवाज को सुनकर नदी का देवता निकलकर आया और उसने दुःखी होने का हाल पूछा। लकड़हारे ने कहा महाराजा मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है देवता नदी में गया और वहाँ से एक सोने की कुल्हाड़ी ले आया और उसे दी। लकड़हारा बोला

महाराज यह कुल्हाड़ी मेरी नहीं है। देवता फिर नदी में गया और दूसरी चांदी की कुल्हाड़ी ले आया। लकड़हारे ने इस कुल्हाड़ी को देख इसको भी लेने से मना कर दिया। अब की बार देवता उसकी वही लोहे की कुल्हाड़ी ले आया लकड़हारा बोला महाराज मेरी यही कुल्हाड़ी है। देवताने प्रसन्न होकर सोने तथा चाँदी दोनों की कुल्हाड़ी उसे दे दी। यह सारा वृतान्त लकड़हारे ने अपने साथी को सुनाया। साथी बड़ा चालाक था वह भी वहीं आकर लकड़ी काटने लगा और जानबूझ कर अपनी कुल्हाड़ी नदी में डाल दी और वहीं चीखमार कर रोना प्रारम्भ कर दिया। देवता नदी से निकलकर आया और उसने सारा वृतान्त पूछा लकड़हारा बोला मेरी कुल्हाड़ी नदी में गिर गई है। देवता नदी में गया और सोने की कुल्हाड़ी ले आया लकड़हारे ने कुल्हाड़ी के देखते ही कहा हाँ महाराज यही मेरी कुल्हाड़ी है। देवता उस पर नाराज होकर अन्तरध्यान हो गये और इस प्रकार से वह झूठा लकड़हारा अपनी गांठ की कुल्हाड़ी भी खो बैठा।

७६—कंजूस

एक कंजूस साहूकार के बाप का श्राद्ध होने वाला था। उसने सोचा कि किसी ऐसे ब्राह्मण को न्यौता दिया जाय जो बहुत कम खाता हो यह सोचकर वह ब्राह्मण की तलाश में घर से निकल पड़ा। रास्ते में एक पंडितजी से पूछा महाराज आप कितना भोजन करते हैं। पंडित जी इसे भली-भांति जानते थे उन्होंने उत्तर दिया सिर्फ एक छटांक। लालाजी बोले अच्छा पंडितजी कल हमारे यहाँ आपका भोजन का निमंत्रण है ठीक समय पर आइयेगा। लालाजी ने घर पर जाकर अपनी स्त्री से कहा कि कल पिताजी का श्राद्ध है। मैं तो दूकान पर रहूंगा और तुम पंडितजी को खाना खिला देना

दूसरे दिन जब पंडितजी खाना खाने आये तो सेठानी

श्रद्धालु होने के कारण उन्हें अच्छी प्रकारसे खाना खिलाया। पंडितजी ने भी खूब डटकर भोजन किया यहाँ तक कि सारे घर के भोजन को चटकर गए। अन्त में पंडितजी ने ललाइन जी से कहा कि लालाजी ने दक्षिणा के लिए १० अशर्फी ओर देने को कहा है। ललाइनने पंडितजी को १० अशर्फियाँ लाकर दे दीं।

भोजन के पश्चात् पण्डितजी ने अपने घर जाकर स्त्री से कहा कि मैं चादरा ओढ़कर सोये जाता हूँ। अगर लालाजी घर पर आये तो रोने लगना और कहना कि तुमने पण्डितजी को जहर खिलाया है।

शाम को लालाजी जब दूकान बन्द करके घर पहुँचे और सारा हाल सुना तो भगे हुए पण्डितजी के यहां आये पण्डितानी रोकर वही राग अलापना प्रारम्भ किया कि तुमने मेरे पण्डितजी को जहर खिला दिया है। सेठ जी पंडित जी को सोता देख वह वहां से रफूचक्कर हो गए। वास्तव में अधिक कंजूसों की यही हालत होती है। कहते हैं कि कंजूस डेली नहीं देता है भेली दे देता है।

७७–विश्वासघात

एक बन्दर एक नदी के किनारे जामुनें खाया करता था। एक दिन किनारे पर एक मगर को देखकर उसने जामुनें नीचे डाल दी मगर को जामुनें बहुत अच्छी लगी अतएव वह प्रतिदिन बन्दर के पास जामुन खाने के समय पर जाया करता था। अचानक मगर के दिमाग में एक विचार आया कि जो बन्दर इतनी मीठी जामुनें खाता है उसका कलेजा तो बड़ा मीठा होगा। फिर क्या था। उसने बन्दर से कहा कि भाई चलो आज हम तुम्हें नदी की सैर करा लावें। तुम मेरी पीठ पर बैठ जाना। बन्दर मगर की पीठ पर बैठ गया और दोनों सैर के लिये निकल पड़े। नदी के बीच में जाकर मगर ने अपनी इच्छा बतलाई कि मैं तुम्हारा कलेजा खाना चाहता हूँ। बन्दर बड़ा चालाक था वह बोला अरे यह क्या बात है हम अपने मित्र के लिये इतना भी नहीं कर सकते हैं अभी तुम मेरे साथ चलो मैं पेड़ पर अपना कलेजा

छोड़ आया हूँ चलकर तुम्हें दे दूंगा। मगर उसकी विश्वास भरी बातों में आकर बन्दर किनारे पर ले आया। बन्दर झट से पेड़ पर चढ़कर मगर से बोला कि भाई धोखा देने को भी अकल की आवश्यकता होती है। (विष दे पर विश्वास न दे)

—o—

७८—नमक हराम और नमक हलाल ✓

एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि हमें नमक हराम और नमक हलाल दिखलाइये। मन्त्री बोला—महाराज एक महीने में आपके सामने उपस्थित कर दूंगा मन्त्री सोचने लगा कि किस व्यक्ति को जाकर राजा के सामने उपस्थित करूं। जब वह घर पर पहुँचा तो उसे सुस्त देखकर उनकी योग्य पुत्री ने उसके उदास होने का कारण पूछा। मंत्री ने कहा कि राजा ने नमक हराम और नमक हलाल मांगे हैं। पुत्री ने कहा—पिताजी मैं दे दूंगी। आप चिन्ता न करिये। जिस दिन महीना समाप्त हुआ तब मन्त्री के लिये दो सन्दूकों में एक में तो अपना पति और दूसरे में एक कुत्ता बन्द करके दे दिया और पिता को सारा विवरण समझा दिया। जब मन्त्री ने राजा के सामने दोनों सन्दूक खोले तो राजा ने कुत्ते को देखकर पूछा कि यह क्या है? मन्त्री ने कहा—सरकार यह नमक हलाल है जो इसे खिलाता उसके लिये प्राण दे देता है। जब राजा की निगाह मन्त्री के जमाई पर पड़ी तो राजा ने पूछा कि यह कौन है। मन्त्री ने कहा कि यह नमक हराम है इन्हें अपनी पुत्री दी है खूब धन दिया है। फिर भी अकड़ कर ही बातें करते हैं। राजा ने कहा कि अच्छा इन्हें आज से पन्द्रह दिन बाद फाँसी लगेगी। मंत्री अत्यन्त दुखी होकर जब घर गया तो बेटी ने उदास होने का कारण पूछा। बाप ने सभी बातें साफ कह दी। बेटी बोली कोई चिन्ता की बात नहीं है। मैं सभी ठीक कर लूंगी। जिस दिन फाँसी लगने को थी उस दिन फाँसी लगने के स्थानपर हजारों फाँसियाँ लटक रही थीं तथा एक सुनहरी। सोने की तथा एक रुपहरी चाँदीकी फाँसी

भी वहाँ पर थी। राजा जब फाँसी देखने आया तो इस नाटक को देखकर उसने मन्त्री से कहा कि यह क्या बवाल है मन्त्री ने कहा कि हम सभी किसी न किसी के जमाई हैं अतः हम सभी को फाँसी लगनी चाहिये। यह सोने और चाँदी की फाँसी आपके और मेरे लिये हैं। राजा मन्त्री की योग्यता पर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे खूब इनाम दिया।

७९—टेव

एक राजा को साले की आदत थी एक बार वह एक सभ्य सभा में व्याख्यान देने गया तो अपनी आदत पर बड़ी लज्जा आई। उससे लोगों ने कहा कि महाराज आप इस आदत को छोड़ दीजिये राजा को भी बड़ा जोश आया और प्रतिज्ञा करने को कमर कस ली। राजा प्रतिज्ञा करते हुए बोले कि हम आज से किसी साले को गाली नहीं देंगे। जनता समझ गयी कि राजा की कैसी प्रतिज्ञा है।

८०—होनहार

दन्त कटाक्ट कि कर्तव्यम्

एक पढ़े लिखे व्यक्ति के घर पर एक महात्मा जी भिक्षा मांगने आये। उस पढ़े लिखे सज्जन ने महात्मा जी के वेश भूषण और पक्के ढोंग को देखकर पूछा महाराज आपने कुछ वेद शास्त्र भी पढ़े हैं। महात्मा जी ने उत्तर दिया कि बच्चा पठितव्यं तदपि न पठितव्यं दन्त कटाक्ष्टकिम कर्तव्य। जब उन सज्जन ने महात्मा जी के इस विचित्र सिद्धांत को सुना तो वे बोले—महाराज भोजन कर्तव्य तदपि मरतव्यं भोजन न कर्त्तव्यं तदपिमरतव्यं फिर अन्न दुसास किम कर्तव्यं। महात्मा जी ने जब देखा कि यहां तो दाल नहीं गलेगी तो वहाँ से चल दिये।

—×—

८१—पुरखों के पास

एक आर्य कुटुम्ब की पुत्री एक पौराणिक घर में ब्याही आई थी। उसकी सदैव अन्ध विश्वास की बातों पर झड़प हुआ करती थी। दुर्भाग्यवश उसके ससुर का देहान्त हो गया और रीति के अनुसार गरुण पुराण की कथा भी हुई। वह आर्य बहू उस कथा को बड़े ध्यान से सुना करती थी। एक दिन अचानक उसे यह श्लोक सुनाई दिया।

हस्त मात्र पुमान्येन पथि मुक्ते शुभाशुभम्।

जिसका अर्थ होता है कि मृत्यु के पश्चात् प्रेतात्मा का शरीर हस्त मात्र होता है।

त्रयोदशाह (तेरहवीं) के दिन श्वसुर को स्वर्ग में मिलने के लिये वस्त्र, छत्री, जूते, खाट बिछौना इत्यादि सभी सामान ब्राह्मण को दिया गया। उस बहू ने अपनी सास से पूछा माता जी यह सभी सामान ठीक नहीं है। हमारे ससुरजी तो एक हाथ के बराबर के हो गये हैं। अगर गिर पड़े तो जूते में ही अड़ कर रह जाँयगे। निकल नहीं सकते इतनी ऊँची खटिया पर तो चढ़ना बहुत कठिन है। इतने बड़े लिहाफ में तो उनका पता भी नहीं पड़ेगा। छत्री को कैसे पकड़ सकेंगे। सास ने झुंझला कर कहा कि तुम तो नास्तिक हो, बहस मत करो, मेरे पति को इन चीजों के बिना स्वर्ग में कष्ट होगा। थोड़ी देर बाद बहू को याद आई कि ससुरजी अफीम खाया करते थे अतः वह बहू सास से बोली कि बिना अफीम के ससुर जी को बहुत कष्ट होगा इसलिये अफीम जरूर ब्राह्मण देवता को खिलानी चाहिये। अफीम मंगाई गई भाग्यवश ब्राह्मण देवता भी अफीमची थे अफीम खा गये। अन्त में बहू बोली माताजी आपके बिना ससुरजी को बड़ा कष्ट होगा वे आपसे बड़ा प्रेम करते थे आप भी ब्राह्मण महाराज के साथ जाइये। इस बात को सुनकर माताजी की समझ में सारी वास्तविकता आगई।

८२—प्रत्युत्पन्नमति

एक बादशाह और उसका मन्त्री दोनों बैठे हुए गपें लगा रहे थे। बादशाह मन्त्री को बहुत चिढ़ाया करता था। इसलिये उसने मंत्री से कहा कि अरे भाई मन्त्री, हमने रात को एक बड़ा सपना, देखा। मन्त्री ने पूछा कि महाराज जरा सुनाइये। राजा बोला कि सपने में मैंने दो कुण्ड देखे जिसमें एक शहद से भरा पड़ा था और दूसरा विष से (गन्दगी) शहद वाले कुण्ड में तो मैं नहाने लगा तथा दूसरे कुण्ड में तुम नहाने लगे। मंत्री बोला महाराज फिर क्या राजा बोला कि फिर मेरी आंखें खुल गई। मन्त्री ने कहा महाराज इससे आगे का सपना मैंने देखा था। राजा बड़ा इच्छुक होकर कहने लगा अच्छा २ वह भी सुनाओ मन्त्री ने कहा सरकार आप मुझे चाटने लगे। और मैं आपको चाटने लगा।

(किसी की बात का हाल ही हाल सुन्दर उत्तर देना ही प्रत्युत्पन्नमति कहलाता है।)

—×—

८३--शिष्य

राज गुरु श्री द्रोणाचार्य जी के पास एक भील बालक जिसका नाम एकलव्य था धनुर्विद्या की शिक्षा प्राप्त करने के लिये आया। द्रोणाचार्य जी के पास राजकुल के राजकुमार शिक्षा प्राप्त किया करते थे। अतः उन्होंने इस काले भील बालक को शिक्षा देने की असमर्थता प्रगट कर निराश लौटा दिया। यह भील बालक लगन का बड़ा पक्का था। वह गुरु द्रोणाचार्य को अपने हृदय से गुरु सिंहासन पर बैठा चुका था। अतः वह जंगल में द्रोणाचार्य की मिट्टी की मूर्ति बनाकर उनके सामने तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। कुछ ही दिन में गुरुभक्ति, लगन एवं योगता के कारण यह बालक बहुत ही

निपुण हो गया। एक दिन गुरू द्रोणाचार्य अपने शिष्यों के साथ शिकार खेलने के लिये बन में आये। इनके एक शिकारी कुत्ता जो शिकार के पीछे दौड़ रहा था इस भील की भयंकर शकल को देखकर भौंकने लगा। भील बालक ने इस कुत्ते का मुँह बाणों से इस प्रकार बन्द कर दिया कि वह बोलने में सर्वथा असमर्थ रहा तथा लौटकर गुरू द्रोणाचार्य के पास आया। अर्जुन इत्यादि सभी इस बाण भेदने की योग्यता को देखकर अचम्भे में पड़ गये। अर्जुन द्रोणाचार्य से कहने लगा--गुरूजी आप तो कहते थे कि संसार में तुझ से बड़ा कोई धनुर्धारी नहीं है। परन्तु यह तो मुझसे अधिक योग्य है। गुरूजी कुत्ते के साथ में उस धनुर्धारी भील बालक एकलव्य के पास पहुँचे और उससे पूछा पुत्र किसके शिष्य हो। बालक मेरे गुरूदेव श्री द्रोणाचार्य हैं। द्रोणाचार्य जी ने कहा कि मैं स्वयं द्रोणाचार्य हूँ। तब एकलव्य ने सारे वृत्तान्त को बताकर मिट्टी की मूर्ति की ओर इशारा किया कि गुरुवर मैं आपसे ही शिक्षा प्राप्त कर रहा हूँ। गुरू ने अर्जुन के प्रेम के कारण कहा अच्छा तो ला गुरू दक्षिणा दे, क्या देता है ? एकलव्य बोला जो गुरूजी की आज्ञा हो। गुरू द्रोणाचार्य जी ने कहा--कि अपने दायें हाथ का अँगूठा दे। बिना किसी हिचकिचाहट के उस भील बालक एकलव्य ने अपना अंगूठा काट कर गुरू दक्षिणा दी और गुरूजी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

८४—काम बताओ

एक राक्षस प्रत्येक राजा के यहाँ जाता और कहता था कि मुझे नौकर रख लीजिये तथा सदैव मुझसे काम लिया करिये नहीं तो खा जाऊंगा। इसी प्रकार से अनेकों राजाओं को वह खा गया। एक दिन वह एक नये राजा के यहां आकर रह गया। राजा ने उसे एक युद्ध में भेज दिया। जब युद्ध समाप्त हो गया तो राजा ने एक किला तैयार करने को कहा। वह किला भी शीघ्र ही तैयार हो गया।

राक्षस बोला कि मुझे काम बतलाओ। राजा उसे काम बतलाता था। परन्तु काम शीघ्र ही समाप्त हो जाते थे। एक दिन जब काम खतम होने को आये तो राजा डर कर अपने मन्त्री से बातें करने लगा कि अब क्या किया जाय। मन्त्री ने कहा श्रीमान्, आप चिंता मत कीजिये। काम समाप्त करने पर जब राक्षस आया तो मंत्री से बोला कि इस कुत्ते की पूँछ को सीधा करो। वेचारा बार-बार पूँछ को सीधा करता और वह बार २ टेढ़ी हो जाती थी। अन्त में राक्षस हार कर राजा के पास आया और अपनी मूर्खता के लिये क्षमा माँगी।

८५—सीधापन

एक जंगल में एक सर्प रहता था जो बड़ा 'विषैला' था। लोग उससे डर कर भागते थे। यहाँ तक कि वह रास्ता ही डरके कारण बन्द हो गया। एक ऋषि जब वहाँ से गुजर रहे थे तो सांप इनके दर्शन से बड़ा प्रसन्न हुआ और उनके सामने आकर अपने फन को झुकाकर वरदान माँगने लगा कि आज से मैं किसी को न काटूँ। ऋषि ने कहा तथास्तु। जब सांप ने काटना छोड़ दिया तो गाँव के बच्चे चलते चलते उस पर पत्थर फेंक जाते थे, कोई उसे लाठी से मारता था। अब तो सीधेपन के कारण सांप बड़ा दुखी रहने लगा। जब ऋषि एक बार फिर वहाँ से गुजरे तो सारा हाल सांप ने ऋषि जी को सुनाया। ऋषि जी ने कहा कि जो तेरे पास आये या तुझे तंग करे तो उसकी ओर फुंकार मारकर दौड़ा कर। उसी दिन से जो कोई भी सांप को मारने दौड़ता था सांप उसे डरा देता था। तभी से वह इस कष्ट से बच गया।

(टेढ़ जान शंका सब काहू, बक्र चन्द्रमा ग्रसहि न राहू)

८६—इसमें क्या शक है

(सहसा विदधीत न क्रियाम्)

जो बिना सभी बात समझ कोई काम को करता है उसकी मूर्खता में शक क्या है।

किसी तोते बेचने वाले ने अपने तोते को यह सिखलाया कि इसमें क्या शक है। जब वह उसे बाजार में बेचने ले गया तो सभी ने उसका दाम पूछना प्रारम्भ किया। तोते वाले ने कहा कि इसका मूल्य १००० एक हजार मोहर है सभी बड़े आश्चर्य से मूल्य पूछ कर लौट जाते थे। कुछ समय बाद जब राजा वहाँ से गुजर रहा था तो उसने उस तोते को देखकर पूछा कि इसका मूल्य क्या है। तोते वाले ने वही मूल्य बतलाया। राजा ने कहा यह मूल्य तो ज्यादा है। तोते वाला बोला कि सरकार आप तोते ही से पूछ लीजिये राजा ने पूछा—तोते तुम्हारा मूल्य एक हजार मुहर हैं? तोते ने कहा—इसमें क्या शक है। राजा तोते को खरीदकर ले गया। घर में राजा जो कोई प्रश्न तोते से करता था यही उत्तर देता था कि इसमें क्या शक है। एक बार राजा ने गुस्से में आकर कहा कि क्या मैं बेवकूफ था जो तुझे एक हजार मौहर में खरीद कर लाया। तोता बोला—कि इसमें क्या शक है।

—×—

८७—सत्य का फल

एक बच्चे की माँ ने मरते समय अपने बेटे से कहा—बेटा, सदा सत्य बोलना मेरे पास यही तेरे लिए है। बेटेने माँ के शब्दों का आदर किया और सर्वदा सत्य बोलना प्रारंभ किया। एक दिन जब वह जंगल में होकर जा रहा था तो चोरों ने उससे पूछा कि तेरे पास क्या है? बच्चे ने उत्तर दिया कि मेरे पास १५) हैं। चोरों ने उसकी सारी जेबें टटोलली और फटकार कर कहा भूँठा, हमें परेशान करता है, जा यहां

से। लड़का बोला--मैंने झूँठ कभी नहीं बोला है १५) मेरे कोट के अस्तर में सिले हुए हैं। जब चोरों ने वह रुपये देख लिये तो उन्होंने प्रसन्न होकर कहा कि अच्छा तुम यह १०) रुपये और लो। तुमने सच बोला है यह उसका इनाम है। उसी दिन से चोरों ने भी सत्य बोलना प्रारम्भ कर दिया और चोरी करना छोड़ दिया।

—०—

८८—नक़ल को अक़ल चाहिए

एक रुई बेचने वाला गधों पर रुई लाद कर बाजार में बेचने गया। आढ़तियों ने खराब रुई देखकर कहा कि यह अच्छी नहीं है। हम नहीं लेंगे। जब वह बैठा-बैठा सोच रहा था इतने में ही उसकी निगाह सामने की एक सुनार की दूकान पर पड़ी। सुनार के पास एक आदमी खराब सोना लेकर आया था। सुनार ने सोने को आग में डालकर ठीक कर लिया। इस रुई वाले ने विचार किया कि मैं भी अपनी रुई को शुद्ध बनालूं। उसने जैसे ही रुई को शुद्ध बनाना प्रारंभ किया सभी रुई जलकर भस्म हो गई।

८९—इतने-इतने बड़े

एक स्थान पर इन्द्र का हाथी ईख खाने आया करता था। एक दिन अचानक जब हाथी लौटने वाले था तभी एक आदमी ने उसकी पूंछ पकड़ ली और स्वर्ग में चढ़ गया। जब वह हाथी दूसरे दिन वहां से फिर ईख खाने आया तो वह आदमी फिर लौट आया। उसने अपने यहां के सभी आदमियों को स्वर्ग का हाल बतलाया और कहा कि वहां तो खूब मिठाई खाने को मिलती है कुछ काम नहीं करना पड़ता है, बड़ी मौज से सभी रहते हैं। सभी ने स्वर्ग जाने की ठान ली। जैसे ही हाथी चलने लगा हाथी की पूंछ जो आदमी स्वर्ग हो आया था उसने पकड़ ली। सभी आदमी एक दूसरे के पाव

पकड़ कर लटक गये। नीचे से एक कंजूस मनचले ने पूछा अरे भाई वहाँ लड्डू कितने २ बड़े मिलते हैं। जो आदमी हाथी की पूंछ पकड़े था हाथों का इशारा बनाकर बोला इतने २ बड़े। बस हाथों से पूंछ छोड़ते ही सभी नीचे गिर गये और मर गये।

(कुछ समय के लिये अपनी चित्तवृत्तियों पर संयम रखना चाहिए, अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो जाता है।)

—०—

६०—जो गरजते हैं वह बरसते नहीं

एक ब्राह्मण देवता निर्धनता वश दुःखी होकर परदेश धन पैदा करने चले। रास्ते में भूख लगने पर समुद्र के किनारे बैठ कर खाना खाने लगे। जब वे दुःखी होकर खाना खा रहे थे तभी समुद्र देवता ने निकल कर सारा दुःख का हाल सुन कर उन्हें एक शंख दिया और कहा कि तुम इससे जो माँगोगे वही देगा। ब्राह्मण महाराज ने उससे स्थान धोकर धूप लगा कर एक हजार रुपये मांगे। शंख ने १०००) दिये। रास्ते में रात्रि होने के कारण वह ब्राह्मण एक सराय में रुक गया। सुबह जब उन्हें रुपये की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने शंख की पूजा कर उससे रुपया माँगा। इस सभी वृतान्त को सराय का मालिक देख रहा था। सराय के मालिक ने शंख को चुरा लिया और उसके स्थान पर दूसरा शंख रख दिया। जब ब्राह्मण महाराज को रुपये की आवश्यकता पड़ी तो उन्होंने शंख से रुपया मांगा वह शंख तो बेकार का था। ब्राह्मण समझ गया कि यह सब सराय वाले ने किया है। फिर दुःखी होकर समुद्र के किनारे जाकर रोने लगा समुद्र का देवता फिर समुद्र से निकला और ब्राह्मण से रोने का हाल पूछा ब्राह्मण ने सारा किस्सा देवता को सुना दिया। अबकी बार देवता ने एक ऐसा शंख दिया जिसका कि नाम डपोर शंख था अगर उससे एक हजार रुपये मांगे जाँय तो बड़े जोर से कहता था कि अरे भाई दस हजार रुपये लो। देता कुछ भी नहीं था। अब लौट कर ब्राह्मण उसी

सराय में ठहरा। और शंख से रुपया मांगा। शंख ने बड़े जोर से दस गुने रुपये बताकर कहा लो इतने रुपये सराय के मालिक ने इस शंख को देखकर पहिला वाला शंख रख दिया और दूसरे शंख को उठा लिया। जब उसने डपोर शंख से रुपया मांगे तो वह दस गुने रुपयों का नाम तो लेने लगा। परन्तु दिया कुछ भी नहीं सराय के मालिक ने क्रोधित होकर इस शंख को फोड़ दिया।

—★—

६१—अन्धेर नगरी

एक राजा ने एक ज्योतिषी को बुलाकर पूछा कि हमारी गाय और घोड़ी दोनों गर्भवती हैं, दोनों क्या बच्चे देंगी। ज्योतिषी जी ने उत्तर दिया कि गाय के तो बछड़ा होगा और घोड़ी के भी बछेड़ा (नर) होगा। जब दोनों ने बच्चे दिये तो राजा के नौकरों ने गाय का बछड़ा तो घोड़ी के पास खड़ा कर दिया और घोड़ी का बच्चा गाय के पास। राजा ने जब देखा तो बोला कि वह ज्योतिषी बिलकुल झूंठ बोलता था। और उस राजा ने ज्योतिषी जी को बुलाकर कैद में बन्द कर लिया। यह बात राजा के धोबी को मालूम पड़ी। जब राजा के कपड़े धोबी के यहाँ धुलने गये तो धोबी लौटकर कपड़े ही नहीं लाया। क्रोधित हो राजा ने धोबी को पकड़वा कर बुलवाया। धोबी ने कहा— महाराज जब मैं नदी पर कपड़े धो रहा था तब नदी के जल में आग लग गई और कपड़े जल गये। राजा बोला—कहीं पानी में आग लगती होगी।

धोबी ने उत्तर दिया कि जब गाय घोड़ी का बछेड़ा और घोड़ी गाय का बच्चा दे सकती है तो नदी में भी आग लग सकती है। लज्जित होकर राजा ने ब्राह्मण को कैदखाने से मुक्त कर दिया।

(अन्धेर नगरी बेबूझ राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा)

६२—बहू भाषण

एक कछुए को बोलने की बहुत आदत थी वह कभी चुप नहीं रह सकता था। भाग्यवश जिस तालाब में वह रहता था उसका जल सूख गया। कछुए को दुखी देखकर उसके मित्र दो सारसों ने उससे कहा कि तुम मुँह से इस डण्डे को पकड़ लो हम दोनों तुम्हें दूसरे तालाब में पहुँचा देंगे। कछुआ राजी हो गया जब वे रास्ते में उड़े जा रहे थे तो बच्चों ने कछुए को उड़ते देखकर ताली बजाकर कहना प्रारम्भ किया-देखो यह क्या तमाशा है। कछुए से बिना बोले न रहा गया। ज्योंही वह कहने लगा कि यह तमाशा नहीं कछुआ है वैसे ही डंडी उसके मुँह से छूट गयी और नीचे आ गिरा।

६३—ढोंग

एक कोली झाड़ा फूंकी का काम किया करता था और सदैव इसी काम में बाहर रहता था जहां कहीं खाना मिल जाता खा लिया करता था। कोलिन बड़ी दुखी रहा करती थी। एक दिन जब कि मेह बरस रहा था तो कोली के छप्पर में से पानी आ रहा था इतने में कोई बुलावा आया और कोली वहां चला गया कोलिन भी पीछे से चुपके चुपके चली गई। वहां जाकर कोली ने मंत्र पढ़कर झाड़ना शुरू किया और कहने लगा।

आकाश बांधू पाताल बांधू बांधू समुद्र और खाई, बीबी से चुप रहा गया कोलिन ने उतार कर जूती मारना शुरू किया और कहा कि छप्पर तो बांधा नहीं जाता है आकाश पाताल बांधने चला है।

४—जैसे का तैसा

एक फल वाला एक हाथी को जब वहनदी पर पानी पींने जाया करता था खाने को कुछ फल दिया करता था। उसके प्रेम के कारण

हाथी अपनी सूंड फल लेने के लिए बढ़ा दिया करता था। एक दिन जब हाथी ने फल के लिए सूड़ बढ़ाई तो उस फल वाले ने उसकी सूंड में सुई चुभो दी। हाथी नदी पर गया और जब वहाँ से लौट कर आया तो अपनी सूंड में नदी का गन्दा पानी भर लाया और फल वाले की दूकान पर डाल दिया।

(हनते को हनिये, पाप दोष ना गिनिये।)

—०—

९५—सच्चा साधू

एक माली का लड़का जब बाग में पेड़ लगा रहा था तो अचानक उसकी निगाह रानी पर पड़ी। रानी की सुन्दरता को देखकर वह मुग्ध हो गया। वह उसी के चिन्तन में बड़ा कमजोर हुआ जारहा था। एक दिन उसकी मां ने पुत्र से कमजोर होने का कारण पूछा। पुत्र ने सभी हाल साफ साफ कह दिया। माँ ने कहा—बेटा कोई चिन्ता नहीं है तुम्हें रानी से मिला दूँगी। माँ ने बेटे से कहा कि तुम ६ महीने के लिये बाहर चले जाओ और दाढ़ी इत्यादि बढ़ाकर महात्माओं का जैसा भेष बनाकर आना। छः महीने पश्चात् वह महात्माओं का जैसा स्वरूप बना कर आया और उस बगीचे में ठहर गया। उसकी माँ ने यह प्रसिद्ध करदी कि एक बड़े पहुँचे हुए महात्मा आये हैं। शहर के सभी लोग वहां आकर इकट्ठे होने लगे। जब यह समाचार महलों में पहुँचा तो रानी भी दर्शन करने के लिए आयी। माली के बेटेने विचार किया कि मैं झूँठा महात्मा हूँ तब तो रानी तक आती है जब सच्चा महात्मा हो जाऊँगा तो न जाने मैं संसार में कितनी महानता प्राप्त कर सकूंगा।

——

९६—स्तेल

एक लड़का स्कूल में से एक अपने साथी की किताब चुरा कर लाया और वह किताब उसने अपनी मां को दी। मां ने प्रसन्न होकर

कहा कि मेरा बेटा बड़ा अच्छा है। इसी तरह उसकी चोरी की आदत पड़ती गई। एक दिन वह एक डकैती में पकड़ा गया तथा उसे फांसी की सजा हुई। जब फांसी के लिये ले जा रहा था तो उसने कहा कि मुझे अपनी मां से कुछ कहना है। जैसे ही माँ ने बात सुनने को कान बढ़ाया वैसे ही लड़के ने माँ के कान को काट लिया। उपस्थित लोग उसे धिक्कारने लगे। परन्तु लड़के ने कहा कि जब मैं पहिली बार किताब चुराकर लाया था तब ही मेरी माँ मुझे डाट देती तो शायद आज मुझे फाँसी पर न चढ़ना पड़ता।

६७–भगवान

मद्‌भक्त्या यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारदः।

एक गरीब बुढिया के दो बच्चे थे। विधवा होने के कारण उनका वह यथावत पालन करने में असमर्थ रहती थी। एक दिन जब बच्चे पाठशाला से पढ़कर आ रहे थे तो उन्हें रास्ते में डर लगा। बच्चों ने मां से कहा–मां, और लड़कों के साथ नौकर पाठशाला तक जाते हैं। हमें भी डर लगता है हमारे साथ भी एक नौकर भेज दिया करो। माँ ने आंखों के आंसू रोकते हुए कहा–बेटा, डरने की क्या बात है। जिस जंगल में तुम्हें डर लगता है वहाँ तो तुम्हारा श्याम भाई रहता है। दूसरे दिन जंगल के रास्ते में बच्चों को डर लगा तो उन्होंने श्याम भैया को पुकारा। भक्तों की पुकार पर अपना सुन्दर श्याम सलोना स्वरूप धारण कर मोर–पंखों का मुकुट पहिन आये और उन बच्चों को जंगल के मार्ग से निकाल गये। जब बच्चे अपने घर पर पहुँचे तो यह बात उन्होंने अपनी मां से कही। माँ को विश्वास नहीं हुआ। एक दिन पंडित जी ने बच्चों से कहा कि कल सभी एक-एक लोटा दूध लायेंगे। बच्चों ने यह बात जब मां से कही तो माँ ने उत्तर दिया—बेटा, हमारे पास इतने पैसे नहीं हैं। हम दूध कहाँ से लायें। बेचारे बच्चे चुप हो गये। जब वे स्कूल जारहे थे तो उन्होंने डर के कारण श्याम भैया को

पुकारा श्याम भैया को देखकर बच्चों ने उनसे कहा कि गुरूजी ने दूध मँगाया है। श्याम भैया ने एक लोटा दूध दोनों बच्चों को दे दिया। जिन लोगों के बड़े-बड़े लोटे थे गुरूजी पहिले उनका दूध ले रहे थे। सबसे अन्त में जब गुरूजी ने अपने इन शिष्यों का दूध लिया तो सारा बर्तन भर गया परन्तु फिर भी लोटा खाली न हुआ। गुरूजी ने पूछा, तुम यह दूध कहां से लाये हो। बच्चे बोले हमारे श्याम भैया ने दिया है। गुरूजी ने कहा—अच्छा, तो तुम हमें अपने श्याम भैया के पास ले चलो। जंगल में बच्चों ने जाकर जब श्याम भैया को आवाज लगाई तो श्याम भैया आया। श्याम भैया के दर्शन कर गुरूजी समझ गये कि यह भगवान हैं गुरूजी ने उनके चरण स्पर्श किये।

९८—नासमझी

सर्वनाशे समुत्पन्नो अध स्थनेत पंडितः

दो पण्डितजी नदी के किनारे बैठे हुए थे। अचानक किसी वस्तु को आते देखकर एक पण्डितजी नदी में कूद पड़े। दूसरे पण्डितजी ने उन्हें देखा कि यह तो डुबकियाँ ले रहे हैं अतः उन्होंने उन्हें पकड़ने की कोशिश की और उनकी चोटी पकड़ ली तथा विचार करने लगे कि शास्त्रों में तो लिखा है कि सर्वनाशे समुत्पन्नो अर्ध स्थनेत पण्डितः।

अर्थात् सम्पूर्ण वस्तु यदि नष्ट होती हो तो विद्वान लोग सारी को छोड़कर आधी ही लेकर सन्तोष कर लेते हैं।

अतः उसने पास में रखी हुई तलवार से उसका सर काट कर अपने पास रख लिया। जब वह रास्ते में जा रहा था तो पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया और फांसी की सजा का भागी बना।

—×—

९९—बुद्धि

बुद्धियस्य बलंतस्य निर्बुद्धिस्तु कुतो बलम्।

एक धनवान सेठ के घर पर चोर चोरी करने के लिए आये।

दुर्भाग्य से सेठजी उस दिन बाहर गये हुए थे। चोरों ने लालाइन से पूछा कि तेरी चाबी और धन कहां है। लालाइन ने उत्तर दिया कि सामने के कोठे में बांई ओर एक आला है उसमें चाबी रखी है। और वहीं सन्दूक में धन है। चोर वहीं दौड़कर पहुँच गये तथा चाबी टटोलने लगे। उसी आले में एक शहद की मक्खियों का छत्ता था। जैसे ही चोरों का हाथ छत्ते पर पहुँचा बेचारों को घर से निकलना मुश्किल हो गया। और प्रातःकाल होते ही पकड़ लिये गये।

१००—नेकी का बदला

एक ग्वाले ने जङ्गल में शेर के कराहने की आवाज को सुना। झाड़ी में से छिपकर देखने से उसे ज्ञात हुआ कि शेर पांव फैलाए पड़ा है। उसके पंजे में से थोड़ा खून निकल रहा है। ग्वाला समझ गया कि इसके पांव में कांटा लग गया है अतः वह शेर के पास आया और उस कांटे को पांव में से निकाल दिया। कुछ समय बाद शेर को राजा ने पकड़ लिया तथा वह राजा के चिड़िया घर में बन्द कर दिया गया। ग्वाला भी एक बड़े अपराध में कैद कर लिया गया। ग्वाले के अपराध के कारण उसे जिन्दा शेर के पिंजड़े में बन्द करने की सजा मिली राजा ने उसी शेर को बुलवाया और पिंजड़े में ग्वाले को बन्द कर दिया। परन्तु शेर अपने इस उपकारीको जानता था। उसने ग्वाले के पांव में अपना सिर झुका दिया। राजा ने प्रसन्न होकर ग्वाले को मुक्त कर दिया।

(परोपकार करने का फल सदैव अच्छा ही होता है।)

१०१—चतुराई

एक चतुर दामाद अपनी ससुराल को गये। जब खाने

में दामाद से पूछा गया कि लालाजी क्या खाना खाओगे तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम तो आज खिचड़ी खायेंगे। हमारा हाजमा आज-कल ठीक नहीं है। खाना खाते समय लालाजी का साला भी खाना खाने के लिए बैठ गया। परन्तु दुर्भाग्यवश खिचड़ी का थाल इस प्रकार रखा हुआ था कि खिचड़ी का सभी घी दामाद की ओर था तथा बिना घी का हिस्सा साले की ओर होगया। सास जो कि बहुत चंट और चालाक थी वह यह चाहती थी कि सारा घी मेरे बेटे को ही खाने को मिले। अब वह बड़े चक्कर में पड़ गई। उसने सोचा कि किसी प्रकार से यह घी मेरे बेटे की ओर हो जाये। इतने में एक तर-कीब उसके दिमाग में आई। सास ने अब अपने दामाद से उसकी मां की शिकायत करना प्रारम्भ किया और कहने लगी देखो लालाजी तुम्हारी मां ने मेरी बेटी को यह दुख दिया और खिचड़ी में एक लाइन बनादी। जिससे कि घी उसके बेटे की ओर आने लगा फिर दूसरी शिकायत की और दूसरी लाइन बना दी। इसी प्रकार से लाइन बना-बना कर सारा घी उसने अपने लड़के की ओर कर दिया। दामाद भी बड़ा चतुर था सभी चाल को समझ गया। उसने हाथ से सारी खिचड़ी को हटाते हुए कहा कि तुम्हारी लड़की ने तो मेरा ऐसा चौपट कर दिया किसी ने ठीक ही कहा है।

शठं प्रति शाठ्यं समाचरेत्।
(प्रत्येक बिगड़ा हुआ काम भी चतुराई से बन जाता है।)

१०२–सदैव के

धर्मार्थ काम मोक्षाणां यस्य कोपि न विद्‌ते।
अजागल स्तन स्यैव तस्या जन्म निरर्थकम्॥

एक राजा ने अपने दरबार में एक आज्ञा दी कि जो व्यक्ति दो अब के, दो तब के और दो अबके न तबके लायेगा उसे काफी इनाम मिलेगा। दूसरे दिन जब राजसभा जुड़ी तो एक मन्त्री, दो राजा

सन्यासी तथा दो साधारण आदमियों को लेकर उपस्थित हुआ और कहा कि लीजिए महाराज आपकी आज्ञा के अनुसार मैं आदमी ले आया हूँ राजा ने पूछा कि यह कैसे ? मन्त्री बोला देखिए महाराज आपके सामने दो राजा हैं इन्होंने पहिले अच्छे काय किये थे अतः उसका फल भोग रहे हैं, यह तो अबके हैं। यह दो सन्यासी जो अब अच्छा काम कर रहे हैं यह तबके, आगे जाकर भोगेंगे इसलिए यह तब के हैं। और दो यह साधारण मनुष्य हैं यह न तो अब ही अच्छा काम कर रहे हैं और न पहिले ही किया है अतएव यह न अपके ही हैं और न तबके ही।

(प्रत्येक व्यक्ति को सदैव अच्छे कार्य कर यह जीवन सुधार कर आगे का जीवन सुधारना चाहिये।)

१०३—सर्वव्यापी

एको देवो सर्व भूतेषु गूढ़ः सर्वव्यापी सर्व भूगन्तरात्मा।
कार्याध्यक्षः सर्व भूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणिश्च।

एक बूढ़ा अपने बच्चे को सदैव बतलाया करता था कि ईश्वर सबको देखता है कोई भी जगह ईश्वर से छिपी हुई नहीं। भाग्यबश वह बूढ़ा निर्धन हो गया यहाँ तक कि उन्हें अन्न तक को मुश्किल से प्राप्त होता था। एक दिन वह बूढ़ा एक खेत में रात्रि कुछ अनाज चुराने को गया। उसने खेत की मुडेर पर बच्चे को कर दिया और बोला देखते रहना यदि कोई आवे तो मुझे इशारा देना। कुछ देर बाद बच्चे को स्मरण हो आया कि ईश्वर सब देखता है। अतएव उसने आवाज लगाकर बूढ़े को बुला लिया बूढ़े ने आकर बुलाने का कारण पूछा तो बच्चे ने उत्तर दिया कि बाबा आप ही तो कहा करते थे कि ईश्वर सभी को देखता है। इस बात को सुन कर बूढ़े ने चोरी करने का विचार छोड़कर स्वयं मेहनत कर पैसा पैदा करना प्रारम्भ कर दिया।

१०४—जग कैसा कि मुझसा

एक नाई ने १० अशर्फियां जोड़ रखी थीं। चोरी के भय से वह उन अशर्फियों को अपनी पेटी में ही रखता था। एक दिन जब वह नाई गाँव के ठाकुर के यहाँ हजामत बनाने गया तो ठाकुर ने पूछा कि क्यों भाई छीतरिया आजकल गांव के क्या हालचाल हैं। छीतरिया नाई ने जबाव दिया कि महाराज आजकल तो बड़ी मौज है गरीब से गरीब भी १० अशरफी से कम अपने पास रखकर नहीं चलता। ठाकुर समझ गया कि इसके पास १० अशरफी हैं। ठाकुर ने कहा कि जा छीतरिया तू जाकर चिलम भरला। ज्योंही छीतरिया चिलम भरने गया वैसे ही ठाकुर ने उसकी पेटी में से दसों अशरफियाँ पार करदीं। दूसरी बार जब नाई हजामत बनाने के लिए आया तो ठाकुर ने फिर गांव के समाचार पूछे। नाई ने उत्तर दिया—सरकार सभी बड़े दुखी हैं। जिस किसी के पास जितना धन था सभी निकल गया। ठाकुर समझ गये कि दुनियां में आप सुखी तो सब सुखी, आप दुखी तो जग दुखी यही रवैया है।

(संसार के दुख में दुख और सुख में सुख मानने वाला महान आत्मा महात्मा है)

— ——

१०५—मूर्खों में पंडित की दशा

ए गाहक करबन के तू लोनी कर बीन।

एक गाँव में शहर के एक विद्वान पण्डित की वहाँ के मूर्ख पण्डित से एक शादी में मुठभेड़ हुई। पण्डितजी बेचारे केवल अमरकोष ही पढ़े हुए थे अतः विवाह में अमरकोष के श्लोक बोलने लगे। शहर के पंडित जी ने कहा कि तुम तो अमर कोष से शादी करा रहे हो तुमसे शादी कराना नहीं आता। बेचारे पंडितजी चुप होगये और बोले आप करा दीजिए। जैसे ही शहर के पंडितजी ने हवन प्रारंभ किया और

स्वाहा बोलना शुरू किया गांव के पंडितजी गाँव वालों से बोले कि भाई पंचो सुनलो मैं तो अमर कोष से शादी करा रहा था और यह अमर कोष से शादी नहीं करा रहा है जो मन्त्र तेरहवीं में बोले जाते हैं यह तो अशुद्ध मंत्रों को बोल रहा है। स्वाहा-स्वाहा कहकर लड़के को स्वाहा करेगा या लड़की को। मैं तो इन्हें अमर बना रहा हूँ। गाँव वालों ने शहर के पंडितजी को मूर्ख बनाकर वहाँ से निकाल दिया। ठीक ही है।

कर फुलेल को आचमन मीठो कहत सराहि।
रे गंधी मति मन्द तू अतर दिखावत काहि॥

यह तो करब (गाय का भूसा) के गाहक हैं अर्थात पशु पालना ही जानते हैं तुम हाथ में बीणा लेकर राग अलाप रहे हो यह क्या समझें। जो जानता है उसे ही सुनाना चाहिए)

१०६—समझी हुई बात

एक बड़े भाई ने अपनी स्त्री को बुलाकर लाने के लिए अपने छोटे भाई को भेजा और छोटे भाई से कहने लगा कि ठीक प्रकार से जवाब देना। जो बातें कहें ठीक तौर से ही नहीं कहना। भाई ने क्रम से हाँ नहीं एक कागज पर लिख लिए। जब छोटा भाई गाँव गया और वहाँ पर ससुर ने पूछा कि घर पर सब राजी खुशी हैं। छोटे भाई ने उत्तर दिया हाँ। ससुर ने पूछा कि लालाजी की तबियत तो ठीक है। उसने कहा नहीं। ससुर ने पूछा कि क्या वे अस्वस्थ हैं? उसने कहा-हाँ। फिर ससुर ने पूछा कि दवा हो रही है? उसने उत्तर दिया-नहीं। ससुर जी बोले—क्या वे सख्त बीमार हैं? उसने उत्तर दिया—हाँ। ससुर ने पूछा कि वे जिन्दा तो हैं? उसने उत्तर दिया—नहीं। फिर क्या था सभी लोगों ने रोना पीटना प्रारंभ कर दिया। और छोटे भाई से कहाकि हम ही खुद तेरह दिन बाद तुम्हारे यहाँ इसे लेकर आवेंगे। जब वह लौटकर अपने घर गया तो भाई ने पूछा क्यों नहीं लाये।

लड़के ने कहा—कि वे स्वयं उसे लायेंगे। तेरह दिन बाद जब वे आये तथा जमाई को जिंदा देखा तो बड़े आश्चर्य से सभी किस्सा सुनाया। इस किस्से को सुनकर वह बड़ा भाई अपने भाई की योग्यता का समझ गया।

१०७—खुदा बेवकूफ नहीं है

एक शेखजी को एक खेत में तरबूज दिखलाई दिये। शेखजी जैसे ही तरबूज खाकर खेत से निकल रहे थे वैसे ही मेड़ पर के काँटे उनके पाँवों में लगे। शेखजी बोले कि यह खुदा वाकई में बड़ा बेवकूफ है। जहाँ इतने मीठे फल लगाये हैं वहाँ इन कांटों की क्या जरूरत है। इतने में ही उसे खेत के किसान की आवाज सुनाई पड़ी। वह अपने लड़के से कह रहा था कि अरे भाई आज उधर के कांटे हट गये हैं एक बैल आकर काफी पेड़ साफ कर गया है। अब शेखजी की समझ में आया कि भगवान ने गलत नहीं किया है। आगे जब वे एक आम के बगीचे में गये तो ईश्वर की बेवकूफी पर बड़ा गुस्सा आया और सोचने लगे कि देखो जरा २ सी बेलों में तो तीस २ सेर के तरबूज और इतने बड़े पेड़ पर छटांक २ का फल (आम) खुदा भी क्या बेवकूफ है। शेखजी बड़े आराम से फल खाकर और साफी बिछाकर पेड़ के नीचे ही सो गये। थोड़ी देर में एक फल टूटकर शेखजी की नाक पर गिर पड़ा। शेखजी नाक को पकड़ कर बैठ रहे। बड़ी देर तक दर्द होता रहा। शेखजी अब समझ गये कि कहीं ३० सेर का फल इसके ऊपर होता तो मेरा तो कचूमर निकल जाता।

१०८--श्रोता या सोता

एक दिन एक सेठ जी सेठानी के विशेष आग्रह से कहीं पर कथा सुनने चले गये। वहाँ जाकर सेठजी पंडित जी की चौकी के पास बैठ गये और सोने लगे। नींद में उन्हें सपना दीखा कि कोई ग्राहक

कपड़ा खरीदने आया है। लालाजी के हाथ में पंडितजी का दुपट्टा आ गया और फाड़ने लगे। पण्डितजी बोले अरे भाई यह क्या करते हो। तब लालाजी की नींद खुली। लालाजी बोले-पण्डितजी, क्षमा करिये, मुझे जरा नींद आ गई थी। पण्डितजी भी सोचने लगे कि अगर ऐसे ही श्रोता दस पाँच आ गये तो हम मर जायेंगे।

१०६—जो गुरु दीने ही मरत क्यों विष दीजे ताहि

एक लालाजी ने अपना सिर एक नाई से घुटवाया। नाई बदमाश था। सर के घुटने पर उसने लालाजी के सिर पर एक चपत जमा दी। लालाजी बड़े चालाक थें उन्होंने उसे दो आने पैसे चपत लगाने के दिये अब तो नाई को आदत पड़ गई। एक दिन वह एक पहलवान की हजामत बना रहा था तब उसकी खोपड़ी में नाई ने चपत जमा दी। पहलवान साहब ने नाई की खूब तबियत से हजामत बनाई।

११०—खारा अमृत

बहूजी के बहुत कहने पर कि पन्डितजी बड़े योग्य हैं, काशी जी से आये हैं, कथा में बड़ा रस आता है, सेठजी कथा सुनने चले गये। परन्तु मन न लगने के कारण सेठजी को नींद आ गई कुछ देर में एक कुत्ता आया और उसने सेठजी के मुँह पर पेशाब कर दिया। जब सेठजी के मुँह में पानी सा मालूम पड़ा तो समझने लगे कि रस आ रहा है। कथा जब खतम हुई तो लोग कहने लगे कि आज तो कथा में बड़ा अमृत बरसा। सेठजी बोले—हां, हमने भी पिया था परन्तु यार वह तो खारा हो गया।

१११—ईसाई होगया होगा

एक स्थान पर ईसाई लोग अपने धर्म के प्रचार के लिये व्याख्यान दे रहे थे। व्याख्यान के बीच में वह बोले कि हिन्दू गाय को अपनी

माता कहते हैं। तो बैल उनका पिता हुआ। और वह बैल पाखाना खाता फिरता है। देखो यह कैसी गन्दी बात है। एक चण्ट हिन्दू ने उत्तर दिया कि वह ईसाई हो गया होगा।

———

११२—चप्पल खाकर अकल

पाँच अफीमची काम की तलाश में घर से निकले। रास्ते में उनको एक नदी मिली सभी ने नदी को तैर कर पार किया। जब वे किनारे पर आये तो एक ने कहा कि भाई हममें से कोई रह तो नहीं गया है अतः गिन लें ज्योंही गिनना शुरू किया वैसे उसने अपने को छोड़कर चार गिन लिया और बोला कि भाई हममें से एक डूब गया। फिर दूसरे ने गिनना शुरू किया उसने भी ऐसे ही चार गिन लिये। बाद में पाँचों बैठकर रोने लगे। यह किस्सा एक शिकारी देख रहा था उसने आकर रोने का कारण पूछा वे बोले महाराज हम पांच घर से चले थे। एक रास्ते में डूब गया है। शिकारी ने उन सभी को खड़ा करके कहा अच्छा हम उसे जिन्दा करते है। उसने अपनी चप्पल उतार कर पहिले में एक दूसरे में दो तीसरे में तीन चौथे में चार और पाँचवें में पाँच लगा दी और कहा कि बच्चू तुम सभी गिनते समय अपने को नहीं गिनते थे।

—(०)—

११२—महान ब्रह्मचारी

एक नदी में कुछ स्त्रियाँ स्नान कर रही थीं उधर से श्रीशुकदेव जी निकले उनकी उम्र उस समय लगभग २५ वर्ष की थी परन्तु स्त्रियों ने नग्न होते हुए भी कोई परदा नहीं किया। पीछे से व्यासजी आ रहे थे व्यासजी को देखकर सभ ने परदा कर लिया। व्यासजी ने जब इसका कारण पूछा कि तुमने जवान लड़के को देखकर परदा क्यों नहीं किया तो वे बोली कि महाराज उन्हें तो स्त्री पुरुष का ज्ञान ही

नहीं है और आप सभी बातें भली प्रकार जानते हैं अतः आप से परदा किया है।

(ब्रह्मचर्य ही जीवन है)

११४--तू कहे सो पक्की

शाम को एक लालाजी दूकान से आये तो जैसे ही उनकी स्त्री ने लालाजी का हाथ पकड़ा तो बोली–अरे आपका हाथ तो गरम है शायद बुखार आगया है। सेठ जी खाट पर जाकर लेट गये। थोड़ी देर में जैसे ही हाथ ठंडा होगया तो सेठानी जी बाली कि तुम्हें तो शीत आ गया है और रोने लगी। सेठ जी ने सोचा कि अब मरने वाले तो हैं ही अब सेठानी को हिसाब समझा देवें। बहियों को लाकर सेठानी को हिसाब समझाने लगे और सेठानी से बोले कि सेठानी, मरते समय हलुआ तो खिला दे। सेठानी रोते २ हलुआ बना रही थी इतने में बेटे ने आकर रोने का कारण पूछा। तो सारा हाल सेठानी ने कह सुनाया। बेटे ने सेठजी की नाड़ी देखकर कहा कि आप तो जिन्दा हैं। सेठजी बोले तो जिन्दा ही लो। अब बाजार जाकर दूध ही पी आयें।

(दूसरे की फूँक से बजने वाले शंख की तरह मनुष्य का आचरण नहीं होना चाहिये।)

११५--दुनियाँ बनाने वाला

एक प्रकृतिवादी पुरुष अपने बेटे से बोला कि बेटा ईश्वर कुछ नहीं है। बेटे ने पूछा तो यह दुनियां किसने बनाई प्राकृतिवादी पुरुष बोले कि वायु जल पृथ्वी आदि के अणु परिमाण मिलकर यह स्वयं ही बन जाता है। एक दिन बेटे ने एक मेज पर, कागज रंग ब्रुश आदि सभी पेन्टिंग (चित्रकला का सामान रख दिया और पास में

एक बहुत सुन्दर चित्र रख दिया। जब पिताजी आये तो बोले कि बेटा यह सुन्दर चित्र किसने बनाया है। बेटे ने कहा कि यह सभी चीजें रखी हुई हैं वायु के कारण इनका माँगा हुआ और यह चित्र बन गया। पिता ने कहा बिना किसी बनाने वाले के यह चित्र नहीं बन सकता। तब बेटे ने कहा—इस प्रकार से, पिताजी, बिना बनाने वाले के इतनी व्यवस्थित दुनियां भी नहीं बन सकती है।

११६--मोती की खेती

एक दिन राज दरबार में बीरवल का अपानवायु [illegible]) निकल गया। सभी दरबारी हँसने लगे। राजा ने भी क्रोधित होकर उसे दरबार से निकाल दिया। बीरवल छः महीने बाहर रहकर जब शहर में आया तो एक दिन राजा की नजर पड़ी। राजा ने पूछा कि बीरवल अब तो तुम दिखलाई भी नहीं पड़ते हो। बीरवल बोला कि हुजूर मोतियों की खेती करना सीखकर आया हूँ। थोड़े दिन को बाहर गया था। राजा लोभ में आकर बोला कि भाई हमारे लिए मोती की खेती कर दो हम तुम्हें तनखा जो चाहोगे सो देंगे। बीरवल राजा से एक लाख रुपये महीने लेने लगा और गेहूँ के पेड़ बो दिये एक दिन राजा ने कहा कि बीरवल अभी मोती आये हैं या नहीं। बीरवल ने कहा कि महाराज कुछ कच्चे हैं। कल आप देखने चलिये। राजा सभी दरबार के साथ देखने गया। सुवह के समय पड़ी हुई ओस सूर्य की प्रथम किरणों में मोती जैसी चमक रही थी। बीरवल बोला- महाराज, पर एक बात है। जो आदमी जिन्दगी भर कभी न [illegible] उसी के हाथ से मोती उतर सकते हैं नहीं तो पानी हो जायगा। राजा ने सभी दरबारियों की ओर देखा। सभी शान्त थे, सभी को झेंप चढ़ी हुई थी। राजा भी अपनी गलती पर बड़ा शर्मिन्दा हुआ।

११७—तृष्णा

एक साधू जो जंगल में तपस्या किया करताथा। उसकी झोपड़ी में एक चूहा था। बातें करने में कोई साथी न होने के कारण साधू ने उसे आदमी की तरह बोलना सिखला दिया। एक दिन चूहे ने साधू से कहा कि महाराज बिल्ली का मुझे डर लगता है अतएव आप मुझे बिल्ली बना दीजिये। साधू ने ऐसा ही किया परन्तु बिल्ली को कुत्ते तंग करते थे। अतएव उसने कहा कि महाराज, अगर आप मुझे कुत्ता बनादें तो बहुत अच्छा है। अतएव महात्मा ने उसे कुत्ता बना दिया। एक दिन कुत्ते ने देखा कि एक हाथी बड़ी मस्ती से नदी में स्नान कर झूमता हुआ चला आ रहा है। उसे इसका जीवन पसन्द आया तथा साधू से प्रार्थना की कि महाराज आप मुझे हाथी बना दीजिये। महात्माजी ने उसे हाथी बना दिया। एक दिन एक राजा शिकार के लिए आया था। उसने इस हाथी को अच्छा देखकर पकड़ लिया और उसे अपने यहाँ ले गया। एक दिन राजा और रानी हाथी पर बैठकर जारहे थे। इस हाथी को रानी का अपने ऊपर बैठना बुरा लगा और सोचने लगा कि यह स्त्री हमारे ऊपर बैठे। अतः क्रोधित होकर वहाँ उन राजा रानी को नीचे डालकर भाग आया। राजा ने रानी को उठाया अपने हाथों से धूल साफ की तथा उससे पूछने लगा कि तुम्हारे कहीं चोट तो नहीं आई है। इस हाथी ने सोचा कि यह रानी का जीवन बड़ा सुखमय है। अतः मुझे रानी ही बनना चाहिये। जब यह हाथी जंगल में महात्मा के पास पहुँचा और रानी बनने की प्रार्थना की तो महात्मा ने इसके असन्तोष को देखकर फिर चूहा ही बना दिया।

गोधन गज धन बाजि धन और सबै धन खान।
जो आवे सन्तोष धन सब धन धूर समान।

(तृष्णा वह अग्नि है जो कभी शान्त नहीं होती। इसको संयम रूपी जलसे शमन करना चाहिये।)

११८—व्यवहार

नारिकेल समाकारा दृश्यन्ते सज्जना समाः।
अन्येच बदिराकारा बहिरे च मनोहरा ॥

व्यवहार कुशलता दुनियां का सबसे बड़ा गुण है। सज्जन व्यक्तियों पर व्यवहार नारियल की भाँति ऊपर से कठोर दिखलाई पड़ता है परन्तु भीतर से बड़ा नरम और सरस होता है। परन्तु दुष्ट व्यक्तियां का व्यवहार बेर की भांति बाहर से नरम और भीतर से कड़ा होता है।

११९—चिन्ता

चिन्ता चिता द्वयोर्मध्ये, चिंता चैव गरीयसी।
चिता दहति निर्जीव, चिंता दहति सजीवकम् ॥

एक वेश्या का लड़का इतना बेफिक्र था, किसी बात की चिन्ता उसे नहीं थी। वह केवल घर पर आकर भोजन ही करना अपना काम समझता था। बेफिक्री के कारण उसका स्वास्थ्य इतना अच्छा होगया कि राजा का हाथी जब जाता था तो उसके गले में पड़ी हुई संकल जो धरती में घिसटती हुई जाती थी, उस पर पांव रख देता था तो हाथी रुक जाता था। हाथी को वह प्रतिदिन इसीप्रकार रोक देता था। हाथी बेचारा इस चिन्ता के कारण पनप ही नहीं पाता था। एक दिन जब राजा ने हाथी के दुबले होने का कारण पूछा तो पीलवान ने सच-सच बता दिया। राजा ने उस लड़के की माँ से कहला भेजा कि जिस समय तेरा बेटा खाना खाने बैठा करे उसी समय तू किसी न किसी चीज के बारे में कह दिया कर कि अमुक वस्तु हमारे यहाँ नहीं है। माँ ने ऐसा ही किया। उस लड़के को चिंता लग गई और फलतः वह बहुत दुबला होगया।

गिरधर कवि ने कहा है कि—

चिंता ज्वाल शरीर बन, दावा लगि लगि जाग।
प्रगट धुआं नहिं संचरै, उर अन्तर धधुआय ॥

१२०—एक रवैया

एक बार एक गदहा चीनी लादकर गांव को ले जा रहा था। गर्मी के दिन थे। मालिक काफी पीछे आरहा था। रास्ते में एक नाला तय करना पड़ता था। गधे नें नाले में डुबकी लगाई और बैठ रहा। जब मालिक आया और गधा उठा तो बोझ आधा रह गया। गधा बड़ा प्रसन्न हुआ परन्तु दूसरी बार मालिक गदहे पर रुई लाद कर ले जारहा था। गदहे ने अब फिर नाले में डुबकी लगादी। तो रुई इतनी भारी होगई कि गधे को उठना मुश्किल होगया। परन्तु मालिक ने मार लगा लगाकर वह बोझा उसी से उठवाया। अब गधे की समझ में आ गया कि सदैव एक ही रवैया काम नहीं देता है।

(एक ही नियम प्रत्येक स्थान पर नहीं चलता है।)

१२१—स्वतंत्र और गुलाम

वैदिक धर्म को मानने वाले सदैव ईश्वर से यही प्रार्थना करते हैं कि—

आदीना श्याम शरदः शतम अर्थात्

दीन न रहकर गुलाम न रह कर हम अपना सैकड़ों वर्षों तक जीवन व्यतीत करें परंतु संसार में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं। पहिले तोते जैसे दूसरे तीतर जैसे। तोते को यदि पिंजरे में बन्द कर चाहे जितना अच्छा खाना खिलाया जाय, जब उसे मौका मिलता है, भाग निकलता है, क्योंकि उसकी स्वतन्त्र रहने की आदत है। वह टुकड़ों पर अपनी स्वतन्त्रता नहीं बेचता है।

दूसरे, तीतर यदि दस दिन अपने मालिक के यहाँ रह लेवे तो मालिक के पिंजरे में से छोड़ देने पर उसी के पीछे २ चला करता है। उसे गुलामी का ही जीवन अच्छा लगता है।

दुख का कारण है कि स्वतन्त्र भारत में अभी कुछ तीतर जैसी प्रवृत्ति के लोग अपनी उस आदत को नहीं भुला सके हैं।

१२२—न्याय की मित्रता

एक लोमड़ी तथा एक ऊंट जो मित्र थे उन्होंने खेती करने का विचार किया तथा आलू की खेती की। जब खेती काटने का समय आया तो लोमड़ी ने कहा कि भाई, अबके तुम ऊपर का हिस्सा ले लो और मैं नीचे का हिस्सा लेलू। वेचारे ऊंट को इस प्रकार उसने पत्ते ही पत्ते भेड़ दिये। दूसरी बार जब गेहूँ की खेती की तो लोमड़ी बोली भैया मैं अन्याय करना पसन्द नहीं करती। पहिले मैंने नीचे का हिस्सा लिया था और आपने ऊपर का। अब की मैं ऊपर का हिस्सा लिए लेती हूँ और आप नीचे का हिस्सा ले लीजिए।

(जिनका समान कुल और धन हो उन्हीं की मित्रता निभ सकती है)

—×—

१२३—गुंडा

चार रास्तागीर कुंए पर खड़ी हुई एक सदाचार वती स्त्री से पानी पीने के लिए गए। स्त्री ने रास्तागीर जानकर कहा कि भैया तुम कुछ खाकर पानी पीना। आओ मेरे घर चलो। वहाँ मैं तुम्हें पानी पिलादूं। उसने वहाँ सभी को एक-एक लड्डू देकर पानी पिला दिया। जब वे चलने लगे तो उसने उनके नाम पूछे। पहिले ने कहा कि मेरा नाम मुसाफिर है। स्त्री ने कहा मुसाफिर तो दुनियाँ में दो ही हैं। तुम तीसरे कहाँ से आगये। दूसरे से जब नाम पूछा तो उसने अपना नाम गरीब बतलाया। स्त्री ने कहा- गरीब तो संसार में दो ही हैं। तुम कहाँ से आगए। तीसरे से नाम पूछा तो उसने कहा कि मेरा नाम लुच्चा है। स्त्री ने कहा कि लुच्चे तो दुनियां में दो ही हैं। तुम कैसे लुच्चे हो। चौथे ने अपना नाम गुण्डा बताया। तब स्त्री ने कहाकि गुण्डे तो दुनियां में दो ही हैं, तुम कैसे गुण्डे हो। इन चारों से बातें करते देख कर किसी ने उसके पति से शिकायत करदी। जब तक पति आया चारों लोग जा चुके थे। पति ने राजा से शिकायत करदी। राजा ने शीघ्र ही घुड़सवार भेजकर उन्हें पकड़वा लिया और स्त्री को भी बुलाया। राजा

ने जब स्त्री के बयान लिये तो स्त्री बोली कि मैंने इन सभी के नाम पूछे थे। तो पहिले ने नाम मुसाफिर बतलाया। मैंने कहा कि संसार में मुसाफिर तो दो ही हैं तुम तीसरे कहां से चले आये। राजा ने पूछा कि दो कौन है ? स्त्री ने कहा कि सूर्य और चन्द्रमा। दूसरे ने अपना नाम गरीब बतलाया मैंने कहा गरीब तो संसार में दो ही हैं। राजा ने फिर पूछा—कौन ? स्त्री ने फिर कहा कि गाय, जिसे मालिक चाहे वहीं भेज दे। दूसरी लड़की, जिसे पिता चाहे जिसे दे। स्त्री ने फिर अपने बयान में कहा कि मैंने आगे और पूछा तो तीसरे ने अपना नाम लुच्चा बतलाया। मैंने कहा कि लुच्चपन तो अनजान में है। भरे पेट वालों को ही लुच्चपन सूझता है, भूखे पेट वाला कोई लुच्चपन नहीं करता है। और महाराज जब चौथे ने अपना नाम बताया तो वह बड़ा ही विचित्र था। उसने अपना नाम गुण्डा बतलाया था। मैंने उत्तर दिया कि गुण्डे तो संसार में दो ही होते हैं। राजा ने पूछा कि कौन-कौन से ? स्त्री ने कहा कि एक तो मेरा पति जिसने मेरे ऊपर अविश्वास करके तथा मुझसे बिना पूछे आपसे शिकायत करदी। दूसरे हमारे सरकार, जिन्होंने बिना पूरा पता लगाते ही बेकार में इन रास्तागीरों को परेशान किया। राजा इस पर बड़ा शर्मिन्दा हुआ तथा आगे प्रत्येक मामले की जाँच की आज्ञा घोषित करदी।

(किसी को व्यर्थ में परेशान करने वाला ही गुण्डा होता है।)

१२४--अति लोभ ✓

आधी छोड़ पूरी को धावै, आधी जाय, न पूरी पावै।

एक कुत्ता नदी के किनारे रोटी का टुकड़ा लिए खड़ा हुआ था जल में उसे दूसरा कुत्ता दिखलाई दिया। ज्यों ही उसने उस कुत्ते के टुकड़े को झपटने के लिए मुँह खोला वैसे ही उसका स्वयं का भी टुकड़ा चला गया।

———

१२५—हिन्दू का बनाना

एक बार बीरबल से अकबर ने पूछा कि बीरबल क्या हम हिन्दू हो सकते हैं। बीरबल ने कहा—महाराज आप नहीं हो सकते। अकबर ने नाराज होकर उसे नौकरी से हटा दिया। एक दिन अकबर गंगाजी के किनारे घूमने जा रहा था। वहीं बीरबल एक गदहे को साबुन से स्नान करा रहे थे, खूब मल रहे थे। अकबर ने पूछा कि यह क्या कर रहे हो। बीरबल बोला-कि इसे गाय बना रहा हूँ। अकबर बोला कि यह गाय नहीं बन सकती बीरबल ने कहा कि ऐसे ही आप हिन्दू नहीं बन सकते।

(धर्म सभी श्रेष्ठ हैं अपने धर्म को नहीं छोड़ना चाहिये वरन् अन्य धर्मों की अच्छी २ बातें ग्रहण करनी चाहिए।)

—❀—

१२६—भगवत् प्रेम का फल

एक विलासी राजा के यहाँ एक राज्य-भक्त मन्त्री रहता था। राजा अपनी रानियों के साथ इतना मस्त रहता था कि राज्य काम की चिन्ता ही नहीं करता था। बेचारे मन्त्री को राजा के पास किसी भी आज्ञा के लिये घण्टों खड़ा रहना पड़ता था। एक दिन मन्त्री ने खीज-कर मन्त्रीपद से स्तीफा दे दिया और जंगल में जाकर तपस्या करने लगा।

राजा का सभी काम ठप हो गया। राजा ने विचार किया कि बिना मन्त्री के काम नहीं चलेगा। राजा जंगल में मन्त्री को बुलाने के लिए गया। राजा से मन्त्री ने कहा महाराज जिस कार्य के कारण आप जैसे मेरे पास आ सकते हैं मैं उस काम को कैसे छोड़ सकता हूँ। कहाँ तो मैं पहिले आपके पास जाता था अब आप ही स्वयं मेरे पास आये हैं।

जितनों प्रेम संसार ते उतनो प्रभु ते होय।
चलो जाय बैकुण्ठ में रोक सके नहिं कोय॥

—❀—

१२७—रिश्वत

एक राजा को मालूम हुआ कि कायस्थ लोग सबसे ज्यादा रिश्वत लेने वाले होते हैं। राजा ने सोचा कि देखें यह कैसी रिश्वत लेते हैं ऐसा सोचकर उसने एक कायस्थ को घोड़े की देखभाल देदी दूसरे ही दिन मुंशी जी ने जाकर घोड़े की लीद सूँघना शुरू कर दिया। सईसों ने पूछा कि मुंशीजी आप क्या कर रहे हैं। उन्होंने जवाब दिया कि यह देख रहा हूँ कि घोड़ों को कितना दाना और कितनी घास मिलती है। बेचारे सईसों ने डर के मारे चुपके से उन्हें रुपया रिश्वत में देना शुरू कर दिया। एक दिन राजा ने उन कायस्थ साहब से पूछा—कहिये अब आप कैसे रिश्वत ले सकते हैं मैं तो कायस्थों को रिश्वत लेना भुला देता हूँ। उन्होंने उत्तर दिया कि हुजूर, कुल पांच हजार रुपये ही रिश्वत में मिल पाये हैं। उसने सारा किस्सा राजा के सामने कह दिया। राजा ने अब सोचा कि इन्हें ऐसे काम में लगाया जाय जिसमें कि रिश्वत का नाम ही न हो। राजा ने कहा कि तुम समुद्र के किनारे बैठ कर समुद्र की लहरों को गिना करो। मुंशी जी समुद्र के किनारे बैठ गये। जो कोई जहाज समुद्र में आता था उसे रोक देते थे कि हमारी लहरें बिगड़ जांयगी। जल्दी के कारण वे रिश्वत दे जाते थे। जब राजा फिर मुंशी जी को मिला तो मुंशी जी ने कहा—सरकार इसमें अच्छी रिश्वत मिल जाती है। एक हफ्ते में ही दो हजार मिल गये राजा समझ गया कि इनकी तो आदत ही बिगड़ चुकी है।

१२८—संस्कृत भाषा

एक पण्डित जी अपने पुत्र से कहा करते थे बेटा संस्कृत में ही बोला करो ताकि तुम्हें संस्कृत बोलने का अभ्यास हो जाय। पण्डित जी एक दिन गांव से शहर की ओर आरहे थे तो अचानक कुएं में गिर पड़े। बेटे ने एक पास में खड़े हुए किसान से संस्कृत में यह बोलना प्रारम्भ किया।

कूपे पतितस्य मम पितु नष्कास्यनं कुर्वन्तु।

पण्डितजी ने कहा मूर्ख बे मौके संस्कृत बोल रहा है यहाँ तो पानी की वजह से डुबकियां लग रही हैं, और हिचकियां आ रही हैं आपको संस्कृत का अभ्यास करना सूझ रहा है।

—o—

१२९—नादान दोस्त ✓

एक राजा ने एक अफीमची को अपनी दवा करने के लिए रक्खा था। अफीमची रोजाना दोपहर के समय राजा की दवा किया करता था। परन्तु वह एक मक्खी से बड़ा परेशान होगया। वह रोजाना राजा की नाक पर बैठ जाया करती थी। अफीमची को अफीम की पीनक में गुस्सा आया और विचार किया कि आज तो इसका नाम ही उड़ा दूं फिर क्या था पास में रक्खी हुई तलवार का राजा की नाक पर ऐसा हाथ मारा कि राजा का काम तमाम होगया।

१३०—तीर्थ यात्रा का दान

एक कंजूस लालाजी गंगा स्नान करने गये थे। पण्डे ने कुछ रुपये बना लिए बाद में लालाजी चलने लगे तो पण्डे ने कहा कि लाला जी सभी यात्री अपनी यादगार में अपनी कुछ चीज अवश्य छोड़ जाते हैं आप क्या छोड़ेंगे। लालाजी ने जो कि रुपये देने के कारण पहिले ही झुझलाये बैठे थे कहा कि हम तो यहाँ आना ही छोड़े जाते हैं।

———

१३१—दूध का दूध और पानी का पानी

एक वैश्य जो कि हलवाई की दूकान करता था सदैव दूध में आधा पानी मिलाया करता था। अचानक एक दिन जब वह गाँव से शहर सोना खरीदने रुपये लेकर जा रहा था रास्ते में उसे नींद आगई और वह थैली को सिरहाने रखकर सो गया। इतने में एक बन्दर थैली उठा

कर ले गया। और पास हीं में नदी किनारे एक पेड़ पर बैठ गया। जब वैश्य की नींद खुली तो उसने देखा कि बन्दर थैली में से रुपया निकाल कर एक रुपया नदी में डाल रहा है तथा एक रुपया जमीन पर डाल रहा है। इस प्रकार बन्दर ने आधे रुपये पानी में डाल दिये पास ही में एक किसान इस सभी घटना को देख रहा था वह बोल उठा लालाजी इसने तो दूध का दूध और पानीका पानी कर दिया है। पानी की कमाई तो पानी में ही जाती है।

(ईश्वर न्यायकारी है।)

१३२–दो लड्डू और तीन लड्डू का झगड़ा

एक लालाजी बाजार से ५ लड्डू खरीद कर लाये। जब वे घर पर आये तो स्त्री बोली कि दो आप खा लीजिये और तीन मैं खा लूंगी लालाजी ने कहा कि वाह तुम्हारी तो बड़ी अच्छी बात रही कमाऊं मैं खाये आप। तुम दो खालो मैं तीन खाऊंगा। स्त्री पुरुष में काफी देर तक यह झगड़ा चलता रहा, थोड़ी देर में तै हुआ कि जो पहिले बोले वही खाय, फिर क्या था दोनों ने घर का दरवाजा बन्द करके पड़ी लगाई। दो दिन बीत गये घर में से कोई आवाज तक नहीं आई पड़ोसियों ने घर की किवाड़ें तोड़ कर अन्दर जाकर देखा तो दोनों पड़े हुए थे कुछ न बोलते देख उन्होंने उन्हें मरा समझ लिया तथा कफन, वगैरह लाकर अरथी सजाकर जलाने ले चले चिता पर दोनों को लिटा दिया। जब जलाने का समय आया तो लोग बोले कि पहिले तो पुरुष को आग लगनी चाहिए जैसे आग लगाने की तैयारी हुई, सेठ जी बोले रांड तूही तीन लड्डू खा ले। सभी लोग भौचक्के रह गये जब सभी ने यह किस्सा सुना तो स्त्री की सभी प्रशंसा करने लगे।

१३३—ईश्वर क्या करता है

एक राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि ईश्वर कहां और क्या करता है। मन्त्री बड़ा बुद्धिमान था दूसरे दिन जब वह दरबार में आया तो अपने बच्चे को सिखा कर ले आया। बच्चे ने एक दूध का कटोरा अपने हाथ में लेकर पूछा कि क्या इस दूध में घी है? राजा ने कहा है। लड़का बोला—हमें तो नहीं दिखाई देता, राजा ने कहा कि यह तो इसके अंश-अंश में व्याप्त है। लड़के ने कहा कि ऐसे ही ईश्वर भी सारे संसार के अंश-अंश में व्याप्त है, वही रहता है। फिर लड़के ने पूछा कि आपके दूसरे प्रश्न का यदि मैं उत्तर दे दूँ तो मैं आपका गुरू हुआ या चेला राजा ने कहा कि गुरू! तब लड़के ने कहा कि गुरू खड़ा रहे तथा चेला सिंहासन पर बैठे यह कहाँ का न्याय है, तब राजा ने उसे अपने पास बिठा लिया। लड़के ने कहा कि बस! यही ईश्वर का काम है, गरीब का अमीर और अमीर का पल भर में गरीब बनाना।

१३४—उद्योग

एक राजा जो कि लड़ाई में कई बार हार चुका था निराश होकर जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था। अचानक उनकी निगाह एक मकड़ी पर पड़ी जो कई बार प्रयत्न करती थी परन्तु धागा बार-बार टूट जाता था। इसी प्रकार से सातवीं बार वह अपने प्रयत्न में सफल हुई। राजा को ज्ञान हुआ जब वह मकडी छः बार असफल होने पर भी प्रयत्न करती रही, तो मैं मनुष्य होकर हिम्मत छोड़ रहा हूं राजा फिर अपनी सेना इकट्ठी कर लड़ने गया, और फलतः सफल हुआ, किसी ने ठीक कहा है—

उद्योगिनं पुरुषसिंह मुपैति लक्ष्मी।
दैवेन देयमिति का पुरुषा वदति॥

१३५—दूध पीना

एक लालाजी ने अपने मोटे होने के लिए एक भैंस पाली तथा भैंस की देखभाल के लिए एक नौकर रक्खा। परन्तु नौकर बड़ा चालाक था, वह आधा दूध दुह कर आधा दूध भैंस के थनों से मुँह लगाकर पी जाता था। लाला ने विचार किया कि भैंस तो बहुत कम दूध देती है, क्या कारण है, देखने से सारा किस्सा ज्ञात हुआ लाला जी ने उस नौकर को निकालकर दूसरा नौकर रख लिया और कहा कि दूध में जरा भी बेईमानी न हो। दूसरा नौकर जब दूध दुहकर लाता था तो सेठजी को दिखला देता था। सेठजी उसकी ईमानदारी को समझ गये परन्तु वह आधा दूध पी जाता था। आधा पानी उसमें मिला देता था। बाद में एक दिन सेठजी ने देखा कि दूध में मलाई नहीं पड़ती है क्या कारण है, जब छिपकर सेठजी ने सारा किस्सा देखा तो उस नौकर को भी निकाल दिया। तीसरे नौकर को नौकरी देते समय सेठजी ने सारे पिछले नौकरों की बात बतलाकर कहा कि दूध में बेईमानी नहीं हो। नौकर बहुत चण्ट था। जब सेठजी रात्रि को सो जाते थे, तब वह सारे दूध को पीकर मलाई सेठजी की मूंछ पर लगा देता था। सेठजी जब पूछते थे कि आज रात को तो तुम ने दूध नहीं पिलाया तो नौकर कह देता कि आपको सोते में मालूम नहीं पड़ा। देखो अभी तक मूंछ पर मलाई लग रही है। एक दिन सेठजी बराबर जगते रहे। नौकर ने मलाई लाकर सेठजी की मूछों से लगाई। सेठजी ने वैसे ही उसका हाथ पकड़ लिया और उस नौकर को घर से निकाल दिया।

१३६—पापों की जड़

एक शास्त्रीजी जब अपने घर को लौटे तो घर पर उनकी स्त्री ने पूछा कि अठारह वर्ष तुम काश्मीर में पढ़कर आये हो यह तो बत-लाओ कि पाप की जड़ क्या है? बिचारे शास्त्रीजी अपनी विद्या

अधूरी जानकर फिर काश्मीर पढ़ने चले गये। वहाँ सभी से इसका उत्तर पूछा परन्तु कोई भी पंडित उत्तर न दे सका। अन्त में उनका एक वेश्या से वार्तालाप हुआ तो उन्होंने अपनी आपत्ति उसके सामने रख दी। वेश्या ने कहा कि आप घर जाते ही क्यों हैं मैं आपको एक अशर्फी नित्य दूँगी आप प्रतिदिन भोजन अपने आप बनाकर खाया करिये तथा मौज से रहिये। शास्त्री जी बड़ी प्रसन्नता से रहने लगे।

एक दिन वेश्या ने कहा कि यदि आप मेरे हाथ का बना हुआ खाना खाने लगें तो मैं आपको पाँच अशर्फी दिया करूंगी। पंडितजी लोभ के कारण वेश्या के हाथ का खाना खाने लगे। तब वेश्या ने कहा कि पण्डितजी पाप की जड़ लोभ है। लोभ वश ही आपने यह सब काम किये हैं। अब पण्डित जी इस बात को पढ़कर अपने घर लौट गये।

(लोभ के द्वारा ही सम्पूर्ण पापों का प्रादुर्भाव होता है।)

१३७—आप काज सो महाकाज

एक किसान अपने खेत को पका हुआ देखकर बोला कि कल नौकरों को भेजकर इस खेत को कटवा दूंगा। यह बात उस खेत में रहने वाले चिड़िया के बच्चों ने सुना और शाम को जब चिड़िया लौटकर आई तब उसे सुनाई। चिड़िया ने कहा बेटा चिन्ता मत करो। अभी हमारे घासले पर कोई आपत्ति नहीं आ सकती। कुछ दिन बाद जब वह फिर आया तो किसान कहने लगा कि अभी खेत नहीं कटा है कल अपने लड़कों को भेजकर जरूर कटवा दूंगा। चिड़िया के बच्चों ने वह बात शाम को चिड़िया से फिर कही चिड़िया ने कहा कि बेटा चिन्ता करने की कोई बात नहीं है। खेत अभी नहीं कटेगा। आठ दस दिन बाद जब किसान खेत को देखने आया तो बोला कि अभी तक खेत नहीं कटा है। मैं कल स्वयं ही आकर इसे काटूंगा। जब बच्चों ने यह खबर चिड़िया को दी तो

चिड़िया ने कहा कि अब हमें चलना चाहिये। बच्चों ने पूछा कि माँ पहिले तुम क्यों नहीं चली और अब क्यों चल रही हो। माँ ने कहा कि बेटा दुनियां में अपना काम अपने करने से होता है। किसान खुद खेत काटने आयेगा तो खेत जरूर कट जायेगा।

—×—

१३८—सेर को सवाया

एक लालाजी की लड़की बड़ी तेज मिजाज थी। अतः उससे कोई शादी नहीं करता था। अचानक एक दरोगा उससे शादी करने को तैयार हो गया। उस दरोगा ने जब कि वह सराय में बैठा हुआ था तो खिचड़ी को पकते हुए देखा। उसके ऊपर की थाली भाप के कारण बार बार उछलती थी। इतने में भटियारी ने आकर उस पर पानी का एक लोटा रख दिया और उसका उछलना बंद हो गया। दरोगा समझ गया कि किसी को दवाने के लिए उससे भारी बोझा होना चाहिए। जब दरोगा जी की शादी हुई तो दरोगा जी ने सभी नौकरों से गाली से बात करना शुरू कर दिया। हर एक से अकड़ कर बोलना शुरू कर दिया। जो कोई जरा बात को नहीं मानता उसे ही पीट देता। अपना स्वभाव बना लिया। जब वह लड़की दरोगाजी के घर पहुंची तो सीधी साधी हो गई। और डर के कारण मुँह से कुछ भी नहीं बोलती थी। एक दिन प्रेम करते समय लड़की ने अपने पति दरोगाजी से उसके बुरे व्यवहार और स्वभाव को ठीक करने को कहा। दरोगा जी बोले भाई यह मेरा स्वभाव सदा से ऐसा नहीं है। बल्कि तुम्हारा स्वभाव ठीक करने के लिए ही मैंने ऐसा किया था।

१४०—गङ्गा जी का नाता

एक पंडित जी गंगा स्नान करने अपनी स्त्री के साथ गये। इनकी स्त्री का नाम गंगा था। सभी बड़े-बड़े मन्त्र बोलकर स्नान कर रहे थे।

कोई कहता था कि गंगे मातेश्वरी। कोई कहता था कि गंगा तारिण तारिणी। पंडितजी गंगा को मातेश्वरी कैसे कहते। वे भी गोता लगाते समय कहने लगे जो कुछ है सो तू ही है क्या कहूं।

१४१—काम

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता
साप्यन्य मच्छति जनं सजतोऽन्यसक्तः।
एतकृते च परितुष्यति काचिदन्या
धिक्‌ तां च तं च मदनंच इमां च मां च

भातृहरिशतक के लेखक महाराज भातृहरि अपनी रानी पर बहुत प्रेम रखते। परन्तु वह रानी उनके किसी राज्य के पदाधिकारी पर आसक्त थी और वह पदाधिकारी एक वेश्या से बहुत प्रेम करता था तथा वेश्या महाराज भातृहरि को अपना जीवन सर्वस्व समझती। एक बार राजा को ऐसा फल किसी से प्राप्त हुआ जिसके सेवन कर लेने से मनुष्य आजीवन युवा बना रह सकता है। महाराज ने वह फल अपनी प्रेम पात्री रानी को दे दिया। रानी ने विचार किया कि वह पदाधिकारी आजीवन यदि जवान बना रहेगा तो मुझे अधिक आनन्द लाभ होगा। अतः वह फल उसने पदाधिकारी को दे दिया। पदाधिकारी ने प्रेम वश अपनी प्रेमिका के चिर यौवन के लिये वह फल वेश्या को दे दिया। तथा वह फल वेश्या ने अपने जीवन सर्वस्व महाराज को दे दिया। महाराज अत्यन्त आश्चर्य में पड़ गये तथा जांच पड़ताल करने पर सारा गुल खिला। तब राजा ने ऊपर लिखा हुआ श्लोक लिखा तथा सभी इस प्रकार के प्रेमियों को और कामदेव को धिक्कारा।

१४२—काम

एक दिन एक कुम्हार के गदहे को एक ब्राह्मण ने पीट डाला। फलस्वरूप गदहे की टांग टूट गई। गधे की टांग टूटी हुई देखकर कुम्हार को बड़ा क्रोध आया तथा वह एक डण्डा लेकर ब्राह्मणको पीटने

निकल पड़ा। घर पर कुम्हार को ब्राह्मणी ही मिली, ब्राह्मण किसी काम से बाहर गया हुआ था। कुम्हार ने ब्राह्मणी को ही पीट डाला। ब्राह्मणी गर्भवती थी उसका गर्भपात होगया। ब्राह्मण जब लौटकर आया तो इस कांड की शिकायत उसने राजा से की। राजा ने जब सारा किस्सा सुना तो उसने ब्राह्मण तथा कुम्हार दोनों के नुकसान को पूरा करने के लिये आज्ञा दी कि जब तक गदहे की टांग अच्छी न हो तब तक ब्राह्मण कुम्हार का बोझा ढोयेगा। तथा कुम्हार ब्राह्मण की स्त्री के दूसरा पुत्र पैदा करने का प्रयत्न करेगा और तब तक वह ब्राह्मण के घर पर ही रहा करेगा।

१४३—मनहूस

एक बार एक राजा के कानों तक यह खबर पहुंची कि एक व्यक्ति उसके राज्य में ऐसा है जिसके दर्शन कर लिये जांय तो सुबह से शाम तक दिन भर आदमी को भूखा मरना पड़े। राजा ने इसकी परीक्षा के लिए सुबह ही सुबह उस व्यक्ति के दर्शन किये। कार्यवश राजा को उस दिन भोजन तक करने का अवसर न मिल सका। तो राजा ने उस मनहूस व्यक्ति को उसके बुरे मुंह के अपराध में जिसके देखने से मनुष्यों को भोजन नहीं मिल सकता है फाँसी की सजा दे दी। राजा ने फिर अपराधी से अपनी अन्तिम प्रार्थना करने का और मौका दिया। अपराधी ने कहा कि मैं तो फाँसी वाले दिन प्रातःकाल आपके चरण स्पर्श करना चाहता हूं। राजा ने कहा अच्छा। प्रातःकाल राजा चरण स्पर्श करवाने के लिये चला गया। जब फाँसी लगने का मौका आया तो अपराधी ने कहा कि महाराज मैंने प्रातःकाल आज आपके ही दर्शन किए थे। और मुझे फाँसी हो रही है अतः इसके लिए आप दण्ड के भागी हैं। राजा ने निरुत्तर होकर उसकी फाँसी की आज्ञा वापिस ले ली।

१४४—पति के जीते विधवा।

एक लालाजी के यहाँ एक बहुत पुराना नौकर रहता था। जब

लालाजी परदेश चले गये तो वहां पर नौकर ने जाकर खबर दी कि लालाजी आपकी लालाइन रांड होगई। लालाजी ने जब वह बात अपने दोस्तों में कही तो दोस्त लोग बड़े हँसकर कहने लगे कि तुम्हारे होते हुए लालाइन कैसे रांड होगई। लालाजी ने उत्तर दिया। हम कौन से वीर हैं। हमारे रोते हुए हमारी मां रांड हो गई, हमारी बूआ रांड होगई, हमारी बहिन रांड होगई हमारी स्त्री ही कौन देवता है जो रांड न होगी।

१४५—सच्चे ज्योतिषी

एक राजा ने अपनी जन्मपत्री अपने राज्य के एक प्रसिद्ध ज्योतिषी को दिखलाई। ज्योतिषी बड़ा ठग था उसने कहा कि आज से पन्द्रह दिन बाद आपकी मृत्यु हो जायगी। राजा घबड़ाया और पूछने लगा महाराज इसका कोई उपाय भी हो सकता है। ज्योतिषी जी ने कहा हां सिर्फ एक ही उपाय है और वह यह कि मैं देवताओं को प्रसन्न करने के लिये यज्ञ करूँ। परन्तु उसमें पांच लाख रुपया लगेगा। राजा जब घर वापिस लौटकर गया तो मन्त्री ने राजा की हवाइयां उड़ती देखकर पूछा महाराज आपके उदास होने का क्या कारण। राजा ने सारा किस्सा मंत्री के सामने बयान कर दिया। दूसरे दिन उस ज्योतिषी को बुलाकर कहा महाराज आप बड़े योग्य विद्वान हैं जिस दिन आप का देहान्त हो जायगा तब हमारे राज्य का एक रत्न नष्ट हो जायगा। कृपया आप हमें ज्योतिष से यह ठीक-ठीक बतलाइये कि आपकी मृत्यु कब है। ज्योतिषी जी ने कहा कि हम तो २० वर्ष बाद मरेंगे। मंत्री ने अपनी तलवार के एक बार से ज्योतिषी का सिर उतार दिया तथा राजा से कहा कि अगर इसकी ज्योतिष ठीक थी तो यह अब कैसे मर गया।

—o—

१४६—मर्द

एक दिन एक बड़े हिम्मत वाले लाला जी गांव में फँस गये।

जब वे गाँव में टट्टी करने गये तो आवदस्त लेने के लिए एक जल के गड्ढे के पास में बैठे वैसे ही मेढ़कों ने टर्राना शुरू किया। लालाजी ने शाम के समय जब यह डरावनी आवाज सुनी तो उससे डरे। परंतु बड़े रौब से बोले।

टर टर क्या करे टर से हमको लागे है डर।
आवदस्त लेने दे तो लेने दे नहीं तो चले जांयगे घर॥

१४७—आजकल की सती

एक स्त्री जो सती होना चाहती थी उसने अपनी सहेलियों से पूछा कि सती का क्या मतलब होता है। एक सहेली ने उत्तर दिया कि जिसने सात खसम किये हों। तब उस स्त्री ने कहा कि अरे अभी तो एक खसम करना और बाकी है वह तो मेरा छठा ही खसम है। तब मैं भी सती हो जाऊँगी।

१४८—दस दस बरस के दो

एक ठाकुर साहब के यहाँ एक नौकर नौकरी के लिए आया। ठाकुर साहब ने नौकर को १०) देकर कहा कि जाओ दस रुपये का एक नोट ले आओ। नौकर को बाजार में दस रुपये वाला नोट नहीं मिल सका। उसने आकर मालिक से कहा कि सरकार बाजार में दस रुपये वाला नोट नहीं मिला है, पांच २ रुपये के दो नोट दुकानदार मुझे भेड़ना चाह रहा था। मैं दस रुपये देकर पांच रुपये के नोट क्यों लाता। ठाकुर साहब ने कहा कि पांच और पांच दस होते हैं। मतलब एक ही है।

एक बार ठाकुर साहब ने उसे अपनी लड़की के लिए लड़का देखने को भेजा उन्होंने कहा कि लड़का सूरत शकल का अच्छा हो तथा पढ़ा लिखा और अच्छे घर का हो और उम्र २० साल की हो। तब नौकर ने पूछा कि सरकार यदि दस दस साल के दो मिल जाय तो दो ले आऊँ। ठाकुर साहब समझ गए कि यह कितने योग्य हैं।

१४९–सत्य ज्ञान ✓

एको भस्मीत्यात्मानं यत्व कल्याण मन्य से ।
नित्यं हृदिबसत्येश पुण्य पापेक्षितः मुनिः ॥

ऋषि दयानन्द शिवरात्रि के दिन बैठे हुए शिवजी की पूजा कर रहे थे। एक चुहिया शिवजी के सर पर रखे हुए चावल इत्यादि को बार बार खा जाती थी। शिवजी के सर पर घूमती थी। ऋषि जी समझ गए कि जो मूर्ति स्वयं अपनी रक्षा नहीं कर सकती वह हमारी क्या रक्षा करेगी। यह तो केवल उन महापुरुषों की याददाश्त दिलाने वाली प्रतिमायें ही हैं। यह किसी को वरदान नहीं दे सकती।

✓ १५०–चकाचक

मथुरा जी के पण्डों के बारे में प्रसिद्ध है कि वह बहुत भोजन करते हैं। एक दिन दो पण्डे जो कि भाई भाई थे एक सेठजी के यहाँ से खूब भोजन करके चले। जब छोटा भाई जूता पहिनने लगा तो बड़े भाई से बोला भाई ज्यादा खाना खाने के कारण मेरी गरदन नहीं झुक पाती है। जरा देख तो लेना मैंने किसी दूसरे का जूता तो नहीं पहिन लिया है। दूसरे भाई ने कहा कि मुझे तो तुम भी दिखाई नहीं देते हो मैंने तुमसे ज्यादा भोजन किया है, मेरे तो पेट में दर्द हो रहा है। इतने में सेठजी का लड़का बोला पंडाजी लीजिये चूरन खा लीजिए। पंडाजी बोले अगर इतनी ही जगह होती तो एक लड्डू न खा लेता।

१५१–चार आने गधा ✓

एक दिन एक लकड़िहारा गधे पर रख कर लकड़ी ले जा रहा था। एक नाई ने पूछा कि यह क्या भाव दोगे। लकड़हारा बोला सरकार चार आने गधा है। नाई बोला अच्छा चलो हमारे घर ले चलो। घर

पर जाकर नाई ने उसकी सभी लकड़ी और गधे दोनों को रखकर दाम दे दिया। लकड़हारा बोला कि मेरे गधे तो वापिस करो। नाई बोला- जनाब आदमी की जवान एक होती है तुमने क्या कहा था। बेचारा लकड़हारा लौट गया। एक दिन वह लकड़हारा उस नाई की दूकान पर आया और बोला कि मेरे और मेरे एक साथी की हजामत का क्या लोगे नाई बोला कि एक रुपया। नाई ने लकड़हारे की हजामत बनाने के बाद दूसरे साथी के बारे में पूछा कि वह कहाँ है? लकड़हारे ने अपना गधा नाई के सामने खड़ा कर दिया। नाई ने बहुत इधर-उधर की बातें क परन्तु लकड़हारा बोला—जनाब आदमी की जवान एक होती है।

—×—

१५२—दाल में काला

एक व्यक्ति को यह दृढ़ धारणा होगई कि स्त्रियाँ अधिकतर सदाचारिणी नह होती। अतः उसने एक सुन्दर सी लड़की को आठ वर्ष की उम्र स एक जंगल में सुन्दर मकान बनवाकर रख लिया। और जब वह बड़ी हुई तो उससे शादी करली। उस आदमी ने किसी आदमी के आने के भय से उस मकान का दरवाजा भी बन्द करवा दिया था। यह कमन्द क सहायता से मकान में जाया करता था। एक दिन वह स्त्री जब दाल बीन रही थी तो अचानक उसके पास एक गेंद आकर गिरी। गेंद को लेकर जैसे ही वह देखने लगी वैसे ही उसकी निगाह मकान के पास के एक पेड़ पर बैठे हुए एक बहुत सुन्दर राजकुमार पर पड़ी। राजकुमार को देखकर वह स्त्री मोहित हो गई। वह गेंद उसी राजकुमार की थी। वह उसी गेंद को लेने के लिये ही उस मकान का दरवाजा न पाकर पेड़ पर खड़े होकर जाने का मार्ग देख रहा था। स्त्री ने उसे धोती लटका कर अन्दर बुला लिया और आनन्द मनाने लगे। जब स्त्री ने अपने पति के आने का समय देखा तो उसे निकाल दिया। जल्दी-जल्दी में वह दाल को ठीक साफ न कर सकी। जब

उसके पति ने खाना खाया तो दाल में कुछ काला दिखाई दिया। स्त्री से इसका कारण पूछा उसने कुछ भी न बताया। परन्तु जैसे ही उसने तलवार खींची सारा किस्सा स्त्री ने अपने पति से कह दिया।

१५३—विद्वान् स्त्री

प्रसिद्ध पंडित वररुचि की स्त्री बड़ी सुन्दर थी। एक दिन राजा भोज ने उसके दर्शन करने की इच्छा प्रगट की। वररुचि ने कहा महाराज, कल ही हमारे यहां आप पधारिये, आपका निमन्त्रण है। दूसरे दिन ब्राह्मण ने राजा को घर पर ले जाकर खाना खिलाया। राजा उसकी सुन्दरता को देखता रहा। उसका मन खाने में नहीं लगता था तब ब्राह्मण की स्त्री जो कि बड़ी योग्य थी उसने हाथ में एक आम का फल लेकर कहा कि हे आम तू आज रस क्यों छोड़ रहा है। मैं सती हूँ, मेरा पति भी एक पत्नी व्रत का पालन करता है, हमारा राजा भोज भी दूसरी स्त्री की ओर दृष्टि नहीं करता, परन्तु आज यह ऐसा परिवर्तन क्यों है। राजा इस बात को सुनकर बड़ा लज्जित हुआ।

परन्तु अब तो भारत में ऐसे लोग भी अभी मौजूद हैं जो हमारी पुत्रियों को अपढ़ रखकर इस कामाग्नि का शिकार बनाने को तैयार हैं। यदि हमारी पुत्रियाँ पढ़ी लिखी होंगी तो वे मनुष्यों को जो कि बुरी प्रवृत्तिवश बुरे मार्ग में लगने जा रहे हैं उन्हें अच्छे मार्ग पर लाकर आदर्श भारतीय नारी का काम कर हमारे देश को स्वर्ग से भी पवित्र बना सकती हैं।

१५४—गाली का जवाब

एक अफसर ने नाराज होकर अपने नौकर से कहा—सूअर के बच्चे।

नौकर ने उत्तर दिया—हुजूर ही मेरे माई बाप हैं।

१५५—रिसासांकता

एक चमार प्रयागराज स्नान करने गया। वहाँ पर पंडे उसे त्रिवेणी स्नान कराने ले गये। पंडों ने स्नान करते समय उससे कहा कि तुम यहाँ पर कोई चीज छोड़ जाओ तिस चीज को तुम फिर न ग्रहण करो। बहुत से लोग बहुत से साग तरकारी छोड़ देते हैं, बहुत से कोई फल फूल छोड़ देते हैं। तुम क्या छोड़ते हो। चमार ने उत्तर दिया कि हम तो आज से बोझा ढोना छोड़ते हैं। जब वह गांव में आया तो एक दिन गांव के चौधरी ने बोझा ढोने के लिए उसे बुलाया। चमार ने कहा महाराज, मैं धर्म पूर्वक कहता हूँ कि मैं त्रिवेणी पर बोझा ढोना छोड़ आया हूँ। चौधरी ने कहा कि ठीक है चमारपन तो नहीं छोड़ आया है चल बोझा ढो।

(इसका दृष्टान्त यह है कि यह चमड़े का शरीर है इसके ऊपर अभिमान करने वाले का नाम ही चमार है। कुल, जाति, धन आदि पर अभिमान करता है, वही चमार है। अभिमान से रहित होता है वह पुरुष ज्ञानी होता है। अतएव मनुष्य को अज्ञान रूपी चमारपन ही पहिले छोड़ना चाहिये।)

—०—

१५६—सस्ता नौकर

मंहगा रोवे एक बार, सस्ता रोवे बार बार

एकबार एक अफीमची एक सेठ के यहां नौकरी करने गए। सेठ ने भी उसे सस्ता नौकर जानकर अपने यहाँ जगह दे दी और कहाकि तुम हमारे यहाँ गाड़ी चलाया करना। सेठजी ने एक गाड़ी में रुई भरवा करके शहर भेजी। अफीमची गाड़ी को लेकर चल दिये। जब तक कच्चा रास्ता रहा तब तक तो गाड़ी चरमर-चरमर चूँ चरमर करती रही और जब पक्की सड़क आई तो गाड़ी का बोलना बन्द हो गया। अफीमची ने सोचा कि गाड़ी मर गई। अब तो इसका बोलना

बन्द होगया। उसने विचार किया कि अब इसका दाह संस्कार ही कर दिया जाय, अतः आपने गाड़ीको जला दिया। और विचार करने लगे कि बैलों का क्या किया जाय। ध्यान में आया कि मरे हुए आदमी की कोई चीज काम में नहीं ली जाती। अतः उन बैलों को वहीं रास्ते में छोड़ कर सेठजी के पास आये। सेठजी ने जब हाल पूछा तो उत्तर दिया कि गाड़ी तो मर गई। सेठजी पूरा हाल सुनकर बोले गाड़ी क्या मर गई, हाँ हम जरूर पाँच सौ रुपये से मर गये।

१५७—वैराग्य ✓

अरे भज हरे नाम क्षेमधाम क्षणे क्षणे।
बहिर्निरचि निःश्वासे विश्वासः कः प्रवर्तते॥

एक आक्रमणकारी राजा ने एक राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। युद्ध में उस देश का पहिला राजा मारा गया था। अतः जब वह लौटकर जाने लगा तो उसने पूछा कि इस देश के राजा के कुटुम्ब में कोई जीवित है, जिसे मैं राज्य संभाल दूं। आदमियों ने बतलाया कि एक आदमी ही बचा है जो संसार को त्याग कर सन्यासी होगया है। राजा ने स्वयं आकर सन्यासी से राज्य के लेने की प्रार्थना की, परन्तु उसने मना कर दिया। राजा ने उससे कहा कि अच्छा आप हमसे कुछ मांगिए। आपकी इच्छा होगी सो ही वस्तु हम देवेंगे। सन्यासी बोला कि वह मुझे वह जीवन दो जिसके साथ में बुढ़ापा न आये, वह सुख दो जिसके साथ दुख न हो और वह जीवन दो जिसके साथ मृत्यु न हो। इस बात को सुनकर राजा ने सन्यासी के चरणस्पर्श किये और कहा कि महाराज मैं अभी तक अन्धकार में था। मैंने इस क्षणिक जीवन के लिए कितने-कितने महान् अत्याचार किये हैं, हजारों स्त्रियों को विधवा किया है, हजारों माताओं को पुत्रहीन किया है। तथा हजारों पुत्रों को बिना पिता के किया है। केवल इसी मृत्युशाली जीवन के लिए। फलतः राजा ने तुरन्त ही सन्यास ले लिया।

सन्यास ले लिया। वह समझ गया कि हरिनाम ही संसार में सार है।

१५८—व्यर्थ की लड़ाई

बाजार में तरबूज रक्खा हुआ देखकर एक मूर्ख ने पूछा कि यह क्या है। तरबूज वाले ने समझ लिया कि यह तो पहले सिरे का बेवकूफ है अतः उसने कहा कि भाई यह तो हवाई हिरन का अंडा है। वह उस तरबूज को चार आने पैसे में खरीदकर ले गया। जब वह रास्ते में जा रहा था तो सोचने लगा कि इसमें से बच्चा निकलेगा तब मैं उस बच्चे को पांच सौ रुपये में बेचूँगा। सौ रुपये में मकान बनवाऊँगा, बाकी रुपये का गहना कपड़ा बनवाऊँगा। जब वह यह सोचता जा रहा था कि रास्ते में एक कुत्ते की टक्कर लगने से वह गिर पड़ा और तरबूज फूट गया। वह बड़ा दुखी होकर घर पर आया सारा किस्सा स्त्री को सुना दिया। स्त्री बोली अरे, अगर वह न फटता तो मैं हिरन के बच्चे पर बैठकर रोजाना माय के उड़के जाया करती और रोजाना वापिस लौटकर आया करती। पुरुष को क्रोध आया और स्त्री को पीटने लगा तथा कहने लगा कि इस तरह तो थका कर ही बच्चे को मार डालती।

—❀—

१५९—क्रोध बनाम अज्ञान

एकबार एक साहब अपनी बहिन के साथ घूमने जा रहे थे। पीछे से एक तांगे वाले ने कहा, बाबूजी! बीबीजी को सड़क से हटा लीजिये। बाबूजी क्रोधित होकर बोले—अबे बकता क्या है बीबी होगी तेरी, मेरी तो बहिन है।

(क्रोध में मनुष्य को ध्यान नहीं रहता कि वह क्या कह रहा है, अतः मनुष्य को क्रोध नहीं करना चाहिये।)

—(०)—

१६०—अकबर के दीपक की गर्मी

एक बार ठण्ड के दिनों में जब बहुत कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था तो अचानक अकबर ने बीरबल से कहा कि बीरबल क्या कोई ऐसा भी आदमी है जो रात्रि भर इस तालाब में खड़ा रहे। बीरबल ने कहा, महाराज हजारों हैं। अकबर ने कहा जो आदमी रात्रि भर इसी में खड़ा रहेगा उसे हम १०००) इनाम देंगे। बीरबल एक आदमी को रात्रि भर खड़े रहने के लिए पकड़ लाया। वह रात्रि भर जल में खड़ा रहा। दूसरे दिन जब वह इनाम लेने अकबर के पास गया तो अकबर ने पूछा कि भाई रात्रि भर तुम्हारा मन कैसे लगा? वह आदमी बोला—सरकार के महल की रोशनी की ओर देखता रहा था। अकबर ने कहा—ठीक है, उसी की गर्मी के कारण तुम्हें जाड़ा नहीं लगा था। वह बेचारा बीरबल के पास जाकर रोया। बीरबल उसी दिन जिधर राजा शिकार खेलने गया था उधर ही पहुँच गया। तथा एक बांस पर एक हंडिया लटका कर और नीचे आग सुलगाकर खीचड़ी पकाने लगा जब अकबर शिकार से लौटकर आ रहा था तो बीरबल की यह नई करामात देखकर पूछा कि यह क्या हो रहा है? बीरबल बोला—सरकार सुबह से खिचड़ी पका रहा हूँ अभी तैयार ही नहीं हुई है। अकबर ने उत्तर दिया अरे इस आग की गर्मी तो वहाँ तक पहुँच ही नहीं रही है। यह पकेगी कैसे? तब बीरबल ने कहा—तो सरकार इतनी दूर पर मौजूद आपके महल के चिराग की गर्मी उस बेचारे आदमी तक कैसे पहुँच सकती थी। राजा ने शर्मिन्दा होकर उसको बुलाकर उसका इनाम दे दिया।

१६१—मनुष्य

क बार एक रानी के सर पर एक कौवे ने बीट करदी। रानी अत्यन्त क्रोधित होकर कोपगृह में चली गई,राजाने जब रानी को कोप

भवन में देखा तो इसका कारण पूछा। रानी ने कहा कि जब तक वह कौवा न मरवा दिया जायेगा तब तक मैं भोजन नहीं करूँगी। राजा ने अपने नौकरों को भेजकर सभी कौवे पकड़वाये परन्तु वही कौवा नहीं आया। नौकरों के बहुत प्रयत्न करने के बाद वह कौवा आया। राजा ने पूछा कि पहले तुम यह बतलाओ कि तुम्हें देर कैसे हुई। वह कौवा बोला कि मैं उस समय न्याय कर रहा था। राजा ने पूछा कि क्या न्याय कर रहे थे। कौवे ने कहा कि एक नर और मादा मेरे पास यह निर्णय कराने आए कि पुरुष कौन है, स्त्री कौन है? उसकी स्त्री कहती थी कि मैं पुरुष हूँ। राजा ने पूछा कि तुमने किसे पुरुष बतलाया। तब वह कौवा बोला महाराज वह नर ही था और वह सदैव मादा के कहने में ही चलता था, इस कारण मादा ही पुरुष थी। स्त्री के कहने में चलने वाला पुरुष, पुरुष नहीं है वह अपनी स्त्री की स्त्री होता है। राजा ने उस सभी बात को सुनकर कहा कि तुम्हें मैंने मुक्त कर दिया। परन्तु रानी इस समाचार को सुनकर फिर कोप भवन में चली गई और राजा के बहुत कहने पर पुरानी शर्त पर राजी हुई। अब फिर राजा ने उस कौवे को पकड़वाया लेकिन पहिले की भांति अब भी वह कौवा देर में आया। राजा ने उससे देर में आने का कारण पूछा, कौवे ने कहा कि महाराज एक न्याय आ गया इसी में देर लग गई। राजा ने पूछा कि क्या न्याय था? वह बोला कि एक कौवा दूसरे कौवे के मुँह को पखाने का स्थान कह रहा था तो वे यह निश्चय करने आये थे कि वास्तव में क्या है? राजा ने पूछा कि फिर तुमने क्या बतलाया? कौवे ने कहा मैंने तो उसे पाखाने का स्थान ही बतलाया। क्योंकि वह बात कह कर पलट जाता था। राजा ने लज्जित होकर उसे मुक्त कर दिया।

(जो बात का पक्का होता है, वास्तव में वही मनुष्य है।)

———

१६२—अन्धे

अकबर ने बीरबल से कहा कि हमारे राज्य में अन्धे कितने हैं ? सभी की एक फहरिस्त बना कर हमें दो। बीरबल ने राजा से आज्ञा पाते ही चौराहे पर एक टाट बिछाकर मूज बटना आरम्भ कर दिया और एक मुन्शी को पास में नाम लिखने के लिये बैठा लिया। जो आदमी बीरबल को देखता तो पूछता—बीरबल क्या कर रहे हो ? बीरबल मुंशी जी को उसका नाम लिखने को इशारा कर देता था। शाम को जब अकबर टहलने जा रहा था तो अकबर ने भी बीरबल को देख कर पूछा कि बीरबल क्या कर रहे हो ? बीरबल ने अकबर का नाम भी लिखवा दिया। दूसरे दिन जब अकबर ने बीरबल से पूछा कि बीरबल अन्धों की लिस्ट तैयार हो रही है, तो बीरबल बोला सरकार कुछ तैयार हो चुकी है। अकबर ने उसकी फेरिस्त को जब पढ़ा तो सबसे पहले अकबर का ही उसमें नाम था। अकबर ने पूछा कि यह हमारा नाम इसमें क्यों रखा गया ? हमें तो दिखलाई देता है। बीरबल ने कहा कि सरकार अगर आपको दिखलाई देता तो मुझे मूँजबटते हुए देखकर यह न पूछते कि बीरबल यह क्या कर रहे हो ?

१६३—फूहड़

एक बहू ने हलूआ बनानेकी तैयारियाँ की उसके पति को उसकी मूर्खता पर पूर्ण विश्वास था। अतएव उन्होंने कहा कि तुझसे बनाना नहीं आयेगा। व्यर्थ में तू आटा भी क्यों खराब करती है। परन्तु उसने जिद करके हलुआ बनाने की तैयारी करदी। परन्तु उसमें जरा ज्यादा पानी पड़ गया तो वह बोली कि आप कहें तो सीरा बना लूँ पति ने कहा कि तुझसे वह भी नहीं बनेगा। वह बोली ऐसी क्या तुमने मुझे फूहड़ समझ रखा है जो यह भी नहीं बनेगा। जैसे उसने

उसमें थोड़ा सा जल मिलाया वैसे ही ज्यादा पानी उसमें पड़ गया वह अपने पति से बोली कि अबके तो इसमें जरा ज्यादा पानी ढल गया है आप कहें तो मैं इसकी लपसी बनालूं। पति ने कहा कि देवीजी आप से यह भी नहीं बनेगा। देवीजी ने बनाते बनाते इस लपसी को जला दिया। बाद में स्त्री बोली कि यह तो जल गई इसे फेंक आऊं, पति ने कहा आपसे फेंकना भी नहीं आवेगा। किसी भले आदमी को देखकर फेंकना। स्त्री को अब बड़ा क्रोध आया वह सोचने लगी कि इन्ह'ने मुझे मूर्ख ही समझ रखा है। अब का काम ठीक-ठीक ही करूंगी। जब वह दरवाजे पर पहुँची तो काफी देर तक खड़ी रही, थोड़ी देर में जब गाँव के चौधरी निकले तो उसने विचार किया कि इनसे ज्यादा तो कोई भला आदमी गाँव में नहीं होगा। अतः उसने लपसी चौधरी साहब पर फेंक दी। जब वह अन्दर गई तो पति ने पूछा बड़ी देर लग गई, इतने में ही उसे बाहर गालियों की आवाज सुनाई पड़ी। बाहर आकर उसने चौधरी साहब को देखा तो स्त्री से पूछा कि तूने यह क्या किया। स्त्री ने उत्तर दिया कि आप ही ने तो कहा कि किसी भले आदमी को देख कर फेंकना। चौधरी साहब भी इस फूहड़ की बात सुनकर चुपचाप घर को चले गये।

—×—

१६४–दयालुता

एक गर्भवती हरिणी का जब गर्भ होने वाला था उसी समय एक शिकारी ने उसका पीछा किया। फलतः गर्भिणी हरिणी तो भग गई और बच्चा गर्भ में से निकल कर नदी में गिर गया। बच्चे के छट-पटाने की आवाज को सुनकर महाराज भरत जो वहाँ पर तपस्या कर रहे थे, आये। उन्होंने बच्चे को निकाल कर पाला पोसा। एक दिन हिरन का बच्चा कहीं घूमने निकल गया तो बेचारे भूखे प्यासे उसकी ढूंढ़ (खोज) में घूम रहे थे। तभी कुछ आदमियों ने

उनकी व्याकुलता तथा बच्चे के प्रति प्रेम देखकर निर्णय किया कि जो एक हिरन के बच्चे से इतना प्रेम मानता है, तो वह प्रजा से कितना प्रेम मानेगा, वास्तव में यही हमारा राजा होने का अधिकारी है। उन लोगों ने महाराज भरत को उनकी इस दयालुता पर अपना राजा स्वीकार कर लिया।

—※—

१६५—खीर खाने वाला भगवान

एक बार एक हिन्दू मुसलमान और ईसाई तीनों यात्रा के लिये गये। रास्ते में एक स्थान में खाने के लिए खीर बनाई तथा खाकर सो गये। सोते समय हिन्दू ने पूछा कि कितनी खीर बची है। मुसलमान ने कहा कि केवल एक आदमी के खाने लायक। हिन्दू ने कहा कि फिर कैसे हिसाब बैठेगा? ईसाई साहब जरा चण्ट और पढ़े लिखे थे। उन्होंने कहा कि भाई रात्रि को जो कोई बढ़िया सपना देखे वही खीर को खाले। सुबह जब मियांजी और पादरी साहब उठ आए तब पंडित जी ने अंगड़ाइयां लेना शुरू किया, मियांजी बोले भाई अपना सपना सुनाओ। हिन्दू बोला कि पहले आप ही सुनाइए। मियांजी ने सपने की गपें हांकना शुरू किया और कहा कि मैं खुदाबन्द ताला के पास गया था। वहाँ ७० हूरें थीं, जितनी भी शानदार बातें वह कह सकता था, सभी कहदीं। फिर ईसाई की बारी आई। ईसाई ने कहा कि मैं ईसा के पास गया था, और वह मुझे अपने साथ ले गए। उन्होंने मुझे वहां पर डबल रोटी, बिस्कुट, मक्खन वगैरह खिलाया और कहा कि तुम्हें दुनियाँ का तखत दे दिया है। जाओ, तुम सारी दुनियां के बादशाह बन जाओ। जब हिन्दू के सपने सुनाने का समय आया तो हिन्दू बोला—यार, हमने सपना क्या देखा हमारीतो जान आफत में आगई। हमारे श्रीकृष्ण भगवान बड़े जिद्दी और गरम मिजाज के हैं, वह रात्रि को आए और मुझसे बोले कि खीर खाओ। मैंने गहुत मना किया परन्तु उन्होंने जिद की और मुझे खीर खिला गए। मियां

जी अब तो बहुत बिगड़े और कहने लगे कि खीर खाते वक्त तुमने हमको क्यों नहीं बुलाया। हिन्दू ने कहा कि मैंने पहिले ही बता दिया है वह दिमाग के बहुत गरम हैं डर की वजह से जबान तो हिलती भी न थी।

१६६—भाग्य

भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम्।

एक बार एक साहूकार तथा उसके मुनीमजी में झगड़ा हो रहा था कि भाग्य कोई वस्तु नहीं है, आदमी की मेहनत ही सब कुछ है। इतने में एक महात्मा उधर आ निकले और बोले कि देखो हम तुमको यह सभी दिखलावेंगे। अतः उन्होंने दो आदमियों को सुबह से एक कमरे में बन्द कर दिया। रात्रि को भूख के कारण उन्होंने इधर-उधर टटोलना प्रारम्भ कर दिया। भाग्यवश उन दोनों को एक थैली मिली जिसमें कुछ चने थे और कुछ मोती थे। उनमें से एक ने तो चने रख लिए और मोतियों को पत्थर जान कर अलग पटक दिया। दूसरे ने हाथ से टटोल कर मालूम कर लिया कि यह मोती हैं, अतएव उन्हें अपने पास रख लिया। सुबह साधू ने आकर उन दोनों से पूछा कि भाई तुमने रात्रि को क्या खाया? एक ने कहा मैंने तो चने खाये हैं, दूसरे ने उत्तर दिया कि महाराज मुझे तो रात्रि को मोती मिले हैं। साधू ने साहूकार को बतलाया कि देखो, उसके भाग्य में चने ही थे और उसके भाग्य में मोती थे। तब साहूकार को भाग्य पर पूर्ण विश्वास हो गया।

१६७—ऊँच नीच

तुम्हारे कमर कमर पानी, हमारे जीवन की हानी।

एक गधा और ऊँट में बहुत मिलती थी। घूमते २ एक दिन

दोनों एक नदी के किनारे जा निकले। ऊँट बोला आज तो नदी के पार चलकर खेतों में चरेंगे। दोनों नदी में उतर पड़े। नदी गहरी थी। गधा तो पीछे ही रह गया। उसकी तो गर्दन तक पानी आगया ऊंट बहुत आगे निकल गया और गधे से बोला कि अभी चले आओ। ज्यादा पानी नहीं है सिर्फ कमर कमर ही पानी है। परन्तु गधे ने उत्तर दिया कि आपके कमर कमर पानी में तो मेरा पता भी नहीं चलेगा।

— ——

१६८—धन का दुख

एक पंडितजी ने अपने पूजा पाठ के द्वारा एक देवता को प्रसन्न कर यह वरदान माँगा कि जो वस्तु वह छूले वही सोने की हो जाय। अब तो पं-तजी जो कुछ वस्तु छूते वही सोने की हो जाती। कपड़े छूने से सोने के होगये। पंडितजी को पहिनने में बड़ी आपत्ति पड़ने लगी। खाने की रोटी छूते ही सोने की होगई। पंडितजी अब अपने पुत्र से प्यार करने लगे तो पुत्र भी सोने का हो गया। पंडितजी बेचारे भूखे प्यासे बड़े परेशान होगये। उन्होंने फिर देवता की पूजा की और कहा महाराज, मुझे यह वरदान नहीं चाहिये मुझे तो सुख चाहिये। देवता ने कहा कि सुख तो सद्‌गुणों में है धन में नहीं।

—×—

१६६—[illegible]

तीन कंजूस बैठे-बैठे सभी चीजों के भाव के तेज हो जाने के बारे में बातें कर रहे थे। एक कंजूस ने दूसरे से पूछा कि भाई तुम आज कल घी कैसे खर्च करते हो, बड़ा महगा आता है। पहिले कंजूस ने उत्तर दिया एक उगली में जरा सा लगाकर सभी रोटियों पर उसी में से लगा देता हूँ। दूसरे ने कहा कि भाई इस तरह से तो बहुत खर्चा होता होगा। मैं तो घी गरम करके हंडिया के ऊपर रोटी रख देता हूँ। जिससे उसकी भाप ही सब रोटियों में लग जाती है। तीसरा बोला

भाई हमें तो पूरी तरह से जब तक रोटी चिपड़ नहीं जाती तब तक खाना ही अच्छा नहीं लगता है। दोनों ने पूछा कि क्या करते हो? उसने कहा कि मैंने तो एक बोतल में घी भर लिया है उसी बोतल से अच्छी तरह रोटियों पर फेर देता हूँ। दोनों भाई बोले यही ढंग सबसे बढ़िया है सारी रोटी चिपड़ कर खाया करेंगे।

१७०—उत्तर ✓

एक साहब से जो अत्यन्त बदशकल थे, खूबसूरत ने पूछा कि जिस समय खूबसूरती बट रही थी तब आप कहाँ थे। बदशकल ने उत्तर दिया कि आप उस समय खूबसूरती ले रहे थे। और मैं उस समय खुदा से अकल ले रहा था।

१७१—बहरापन

एक बहरा मनुष्य अपने मित्र को जो कि बीमार था देखने जा रहा था। वह सोचने लगा कि मैं अपने मित्र से जाकर पूछूँगा कि तुम्हारी तबियत कैसी है? तो वह कहेगा कि अब तो अच्छी है। उसका जबाव दे दूँगा कि ऐसा ही होना चाहिए। फिर मैं पूछूँगा कि कौन वैद्य है? तो वह वैद्य का नाम बतलायेगा तो मैं कहूँगा कि यह वैद्य ठीक हैं। फिर मैं पूछूँगा कि दवा कौन सी है? तो वह दवा का नाम बतलायेगा ही, मैं कहूँगा यह तो सबसे उत्तम दवा है। जब वह उस मित्र के घर पहुँचा तो उसने यह प्रश्न किया कि तुम्हारी तबियत कैसी है? मित्र ने कहा कि अब तो बहुत खराब है। बहरे ने वही सोचा हुआ उत्तर दिया कि ऐसा ही होना चाहिए। मित्र को यह उत्तर बड़ा बुरा लगा। अब बहिरे ने दूसरा प्रश्न किया कि कौन वैद्य का इलाज है? मित्र ने क्रोधित होकर कहा कि यमराज का। बहरे ने फिर भी बिना सुने समझे वही सोचा हुआ उत्तर दिया कि वह ठीक

फिर बहरे ने पूछा कि कौन सी दवा ले रहे हो ? मित्र ने बहुत क्रोधित होकर कहा कि मृत्यु ही उसकी दवा है। उसी का सेवन कर रहा हूँ ! बहिरे ने उत्तर दिया कि यही सबसे उत्तम दवा है। इस सभी बात को उसके लड़के सुन रहे थे। उन्हें इसकी उद्दंडता पर बहुत गुस्सा आया और उसे क्रोधित होकर घर से निकाल दिया।

१७२—जैसी करनी तैसी भरनी

एक साहूकार के बेटे की अचानक एक सुन्दर कन्या पर दृष्टि पड़ी। वह उस कन्या पर मोहित हो गया। उस साहूकारके पुत्र ने एक दूती के द्वारा उस कन्या के पास अपने प्रेम का सन्देश भेजा। उस कन्या ने एक दिन मिलने के लिए निश्चित कर दिया। उसी दिन कन्या ने दस्तावर चूरन ले लिया तथा कुछ मिट्टी के कूड़े बनाकर उनमें वह पखाने जाती रही और उन कूड़ों को सुन्दर मखमली कपड़ों से ढकवा दिया। जब साहूकार का पुत्र उससे मिलने आया तो उसकी बीमारी की बुरी दशा देखकर कि उसका शरीर काँटा सा हो गया था सुन्दरता मुरझा गई थी, बड़ा दुखी हुआ और बोला कि अरे तुम्हारी यह दशा हो गई। तब कन्या ने उत्तर दिया कि यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो तो मैं तुम्हारे लिए उपस्थित हूँ और यदि आप मेरी सुन्दरता से प्रेम करते हैं तो उन कूड़ों में रक्खी है। राजकुमार उन कूड़ों को देखकर बड़ा लज्जित हुआ।

१७३—अतिथि सेवा

य सायमतिथि प्राप्त यथा शक्ति न पूजयेत
तस्यासौ दुस्कृतं दत्वा सुकृत चापकर्षति

एक बहेलिया शिकार करने के लिये बन में गया, वहाँ उसने एक कबूतरी को पकड़ लिया। रात्रि होने के कारण वह अपने घर जाने

में असमर्थ रहा। जाड़ा होने के कारण बहेलिया काँप रहा था। उसे दुखी देखकर जाल में फंसी हुई कबूतरी ने अपने पति से जो कि ऊपर पेड़ की डाल वाले घोंसले में बैठा हुआ था कहा कि आपका कर्त्तव्य है कि आपके घर पर यह बहेलिया एक अतिथि के रूप में है, आप उसका स्वागत करें। मैं तो अपने कर्मवश इसके जाल में आई हूँ। कबूतर ने शीघ्र ही एक जलती हुई लकड़ी लाकर नीचे पड़े हुए पत्तों के ढेर पर डाल दी जिससे उसकी ठंडक कम हुई। कबूतर उसे भूखा देखकर स्वयं आग में कूद गया और शिकारी ने उसे खा लिया, उसके पश्चात् भी कबूतर के बच्चे भी अपने अतिथि की सेवा के लिए एक एक कर आग में गिर पड़े। इस परोपकार तथा आतिथ्य की भावना का उस पर इतना प्रभाव पड़ा कि उसने अपना बहेलियापन छोड़ दिया।

१७४—विद्या ग्रहण

उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय।
पड़ो अपावन ठौर में कंचन तजत न कोय॥

एक दिन एक कोलिया अपनी स्त्री से बोला कि यदि तू मेरे लिए हुक्का भर लावे तो मैं तुझे टके टके की चार बातें बतलाऊं। स्त्री जब हुक्का भर कर लाई तो उसके पति ने उसे चार बातें बतलाई—

१—स्त्री को मयके में नहीं छोड़ना।
२—अपनी धरोहर गुप्त रूप से किसी के पास नहीं रखना।
३—नीच की नौकरी न करे।
४—दूसरे के भरोसे अपना काम न छोड़े।

यह सभी बातें उस नगर का राजा जो कि वेष बदल कर रात्रि को प्रजा का सुख-दुख सुनता था, सुन रहा था। दूसरे दिन उसने अपने मन्त्रियों को बुलाया और कहा कि भाई मैं एक साल के लिए

अकेला ही तीर्थयात्रा करने जा रहा हूँ अतः मेरे राज्य का प्रबन्ध ठीक ठीक रखना। उसके पश्चात उसने खजाने से दस हजार रुपया व एक हीरा लिया तथा अपनी रानी को मायके भेज दिया। उस राजा ने अपना रुपया एक सराय वाली के पास रख दिया, और कहा कि छः महीने बाद आकर मैं तुमसे रुपया ले लूंगा। अब राजा ने नौकरी की तलाश की तथा अपनी ससुराल के नगर के कोतवाल के यहाँ नौकरी कर ली। उस कोतवाल से उसकी स्त्री का बुरा सम्बन्ध था। वह उसे प्रति दिन छिपकर देखा करता था। एक दिन वह भूल कर अन्दर चला गया जब कि वे आराम कर रहे थे। उसकी स्त्री उसको चेहरे से पहचान गई, उसने कोतवाल से पूछा कि यह कौन है? कोतवाल ने उत्तर दिया कि यह हमारे यहाँ नौकर है। रानी ने कहा कि इसे मरवा दो, नहीं तो मैं तुमसे वार्तालाप भी नहीं करूंगी। कोतवाल ने जल्लादों को उसके मारने के लिए जंगल में उसके साथ ही भेज दिया, राजा ने उनको वह हीरा देकर अपनी जान बचाई। राजा ने लौटकर सराय वाली से अपने रुपये मांगे तो बोली कि वाह तू तो बड़ा रईस हैं जो हमें ही दस हजार रुपये दान कर जायेगा। जब राजा अपने राज्य में पहुँचा तो अपने राज्य का प्रबन्ध बड़ा बुरा पाया। राजा ने अपनी स्त्री, सराय वाली, कोतवाल, अपने मन्त्री तथा उस कोलिये को बुलाया तथा उससे टके टके की बात कहने को कहा, पहिले तो वह डरा, परन्तु राजा ने कहा कि डरने की कोई बात नहीं। उसने चारों बातें सुनादीं तब राजा ने उसके लिए बहुत सा धन देकर कहा कि यह टके-टके की बात नहीं है। इसने तो मेरी जान बचाई है।

—०—

१७५—क्षमा

क्षमा शास्त्रं करे यस्य दुर्जनः किम करिष्यति।

गौतम बुद्ध को एक अभिमानी ने तङ्ग करने के विचार से उनके

पास जाकर खूब गाली देने का विचार किया। पहिले दिन वह गाली देकर चला आया, परन्तु महात्मा गौतम शांत रहे। दूसरे दिन जब उसने जाकर गालियाँ दीं, तो भी वह चुप रहे। इस प्रकार से कुछ दिन तक जब वह गाली दे चुका तो उनकी महानता की छाप उनके हृदय पर बैठ गई तथा एक दिन वह खुद ही गालियों का उत्तर न देने का कारण पूछने लगा। महात्मा जी ने उत्तर दिया कि जिसके पास जो चीज होगी वही तो वह दे सकता है। हमारे पास तो ऐसी चीजें हैं ही नहीं। आप हमें देने आये थे हमने नहीं ली, वह तो मेरे पास न लेने से नहीं आई हैं।' उस व्यक्ति ने उनके पैर पकड़ कर अपनी उद्दंडता के लिए क्षमा मांगी।

१७६—भाग्य

मद्धावा निल भालप लिखतुं प्राज्भितूं कः समर्थ।

एकबार शिवजी ने पार्वती जी से कहा कि धन यश इत्यादि तकदीर से ही मिलता है। पार्वती जी बोली—नहीं मैं इस बात को नहीं मानती। यदि आप किसी को देंगे तो उसे नहीं मिलेगा, यह सर्वथा असम्भव है। इतने में एक भिखारी को आते हुए देखकर शिव जी ने कहा कि इसके भाग्य में भिक्षा ही लिखी है. यह धनी नहीं हो सकता यह कहकर एक मणि रास्ते में रख दी। जब वह मणि के पास आया तो उससे कुछ पूर्व ही उसके हृदय में विचार आया कि अन्धे लोग रास्ते में कैसे चलते होंगे, बस, इसी का अनुभव करने के लिए उसने आंखें मींचली, तथा वह उस मणि से आगे निकल गया। तब पार्वती जी को विश्वास होगया कि भाग्य ही सबसे बड़ी चीज है।

१७७–लोभ और त्याग

एक लालाजी जो कि अत्यन्त लोभी थे उनसे कोई भी अच्छी तरह बातें नहीं करता था। प्रत्येक आदमी उनका काम करने में सदैव टालम-टूल करता था। एक बार एक गाँव में कथा बची। सभी लोग कथा सुनने जाया करते थे। लालाजी गाँव में सबसे बड़े मालदार थे, परन्तु उनसे कम मालदार लोगों को सभी बड़े आदर से अच्छे स्थान पर कथा सुनने को बैठाते थे, और लालाजी बेचारे एक घर के टूटे टुकड़े पर जाकर बैठ जाते थे। लालाजी ने यह बात अपनी स्त्री से कही कि हमारी गांव वाले इतना धन होते हुए भी इज्जत नहीं करते। स्त्री ने कहा कि आप चुप रहिये। वे इज्जत करने लगेंगे। जिस दिन कथा समाप्त हुई, उस दिन लालाजी की स्त्री एक कपड़े की थैली में कुछ फूल और १००) रुपये भर कर लालाजी को दे दिया। लालाजी ने जब यह थैली जाकर चढ़ाई, तो सभी लोगों ने लालाजी को सबसे अच्छी जगह जाकर बैठाया। उस दिन से लालाजी समझ गये कि धन की शोभा त्याग ही है।

१७८–रक्षक

जाको राखे साइयां, मार सकै नहिं कोय।
बाल न बांका कर सकै, जो जग वैरी होय॥

एक राजाके यहाँ एक पंडितजी कुछ मांगने के लिए गये। राजा ने उन्हें पंडित जानकर उनका सम्मान किया, तथा उन्हें अपने यहाँ नौकर रख लिया। उनके सीधे होने के कारण राजा उनका बड़ा मान करता था। दरबार के कुछ लोग इस बात को देखकर हँसने लगे। उन्होंने पंडितजी से कहा कि राजा के सर का मुकुट जो ब्राह्मण दरबार में उतार लेता है, उस पर राजा बड़ा प्रसन्न होता है। पंडित जी ने

राजा का दरबार में मुकुट उतार लिया। दुष्ट लोग बड़े प्रसन्न होने लगे। परन्तु भाग्यवश उस दिन राजा के मुकुट में एक सांप था। राजा ने जब मुकुट की ओर देखा तो साँप को देख कर राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गये, तथा पंडितजी का बड़ा अहसान मानने लगे कि उन्होंने मेरी जान बचा दी। दूसरी बार उन दरबारियों ने पंडितजी से कहा कि अब आप अकेले में ले जाकर राजा के सर पर हाथ फेरना। पंडितजी ने राजा को महल से बुलाकर बगीचे में ले जाकर यही किया। इसी बीच में राजा जिस कमरे में बैठा था, वह कमरा गिर पड़ा। राजा अब तो बड़ा प्रसन्न हुआ। तथा बेचारे बैरियों को मुंह की खानी पड़ी।

१७६—यह शर्त नहीं लिखी

एक मुंशीजी अपने नौकरों से पहिले ही नौकरी की शर्तें लिखवा लेते थे। बेचारा नौकर जब कहता था कि मेरी तनुख्वाह बढ़ाइए, तो आप कह देते थे कि यह शर्त तो इसमें नहीं लिखी है। नौकर कहते थे कि हुजूर हमें कपड़े या खाना दे दीजिये। सब बातों के लिए यही जबाब मुंशीजी के पास में था कि इसमें यह शर्त तो नहीं लिखी है। एकबार मुंशीजी के पल्ले एक मक्कार नौकर पड़ गया। उसने मुंशीजी के इन जबाबों का एक पक्का जबाब देने की तथा उन्हें नसीहत देने की बात बहुत दिनों से दिल में सोच रक्खी थी। एक दिन कचहरी में जब वहाँ पर काफी भीड़ थी, मुंशीजी का घोड़ा दो पांवों से खड़ा हो गया। मुंशीजी ने नौकर को बुलाया, कि मुझे बचाओ। परन्तु नौकर बोला कि मुंशीजी यह शर्त तो लिखी नहीं है। नौकर ने मुंशीजी को नहीं बचाया, फलतः बेचारे मुंशीजी गिर पड़े और उनका अच्छी तरह कचूमर निकल गया। जब और लोगों ने नौकर की यह ढीढ़ता देखी तो उसे बुरा भला कहने लगे। नौकर ने साफ-साफ सारा किस्सा सुनाया बेचारे मुंशीजी बड़े शर्मिन्दा हुए।

१८०—शंका

शंका डायन, मनसा भूत

एक लालाजी की नौकरानी ने सुबह शीघ्र ही दिवाली बनाने के लिये गेरू लोटे में घोल कर रख दिया पास ही में रात्रि को लाला जी की खाट बिछती थी सुबह लालाजी कुछ अन्धेरे में जंगल पाखाने फिरने गये जब लौट कर आये तो सारी धोती लाल हो रही थी। लालाजी ने सोचा कि बस कोई रोग होगया। बेचारे बुरी तरह परेशान होकर खटिया पर पड़ गये। कहने लगे कि हाथ पांवों का खून निकल जाने के कारण जान ही निकल गई। परन्तु जब नौकरानी आई और उसने गेरू की ढूंढ़ खोज की तो सारा क़िस्सा मालूम पड़ा। तब सेठ जी बड़े प्रसन्न होकर उठ खड़े हुए। वास्तव में मनुष्य के दिमाग में कोई चीज बैठ जाती है तो उसका अवश्य ही असर होने लगता है चाहे वह गलत ही क्यों न हो।

१८१—असाधु की संगत

'संगत बुरी असाधु की आठों पहर उपाधि।'

एक थका हुआ पथिक एक सरोवर के पास एक वृक्ष की छाया में आकर सो गया। थोड़ी देर में प थक के मुँह पर धूप आने लगी। एक हंस को उस पर दया आई। उस धूप आने के स्थान पर अपने ढंग फैलाकर बैठ गया। एक कौवा वहाँ पर आया। उसने पथिक के ऊपर बीट करदी और वहां से उड़ गया। पथिक जब जगा तो उसने बीटको पड़ा हुआ देखा तथा ऊपर हंस को देखा। पथिक समझा कि इसी ने मेरे ऊपर बीट की है। उसने अपनी जेब से पिस्तौल निकाल कर उस हंस को मार दिया।

सत्य ही है कि दुष्टों के साथ में रहने से सदा अपकार ही होता है।

१८२—घर का भेदी लङ्का ढावे

एक दिन एक लकड़हारा पेड़ों को काट रहा था। तब अचानक एक पेड़ ने लकड़हारे से उत्तर दिया कि आप गलत समझते हैं इसमें हमारी गलती नहीं है यह तो तुम्हारी पेड़ों की लकड़ी ही की सहायता से हम सभी कुछ करते हैं तुम्हारे काटने का सारा काम तो तुम्हारी ही लकड़ी कुल्हाड़ी का बेट) करती है। इसका दृष्टांत इस प्रकार है कि यमराज किसी को दण्ड नहीं देता है यह तो मनुष्य के खुद के ही कर्म हैं जो उसे नष्ट करते हैं।

१८३—सच्चा मित्र

एक साहूकार ने अपने बेटे से जो सदैव बहुत से मित्रों के साथ रहा करता था पूछा तुम्हारा कोई राजा मित्र भी है। लड़के ने कहा कि सभी मेरे सच्चे मित्र हैं। साहूकार ने पूछा कि तुझे सबसे ज्यादा किस पर विश्वास है? लड़के ने अपने एक मित्र का नाम बतला दिया। रात्रि के दो बजे करीब पिता ने पुत्र को जगाया और कहा मेरे साथ चलो। बेटे को अपने साथ में वह उसके मित्र के घर ले गया और बेटे से कहा कि तुम अपने मित्र को आवाज दो। लड़के ने बहुत आवाजें लगाई। परन्तु मित्र ने कोई उत्तर नहीं दिया। तब पिता वेटे को एक रास्ते से उसके मित्र के घर में अन्दर ले गया। वहाँ वह मित्र अपनी स्त्री से कह रहा था कि रात्रि में बोलना ठीक नहीं है। आदमी रात्रि में तभी आता है या तो वह दुखी हो या रुपये की आवश्यकता पड़े साहूकार ने यह सभी बात अपने लड़के को सुनवा दी। इसके पश्चात् वह अपने लड़के को साथ लेकर अपने दोस्त के घर आया तथा जैसे उसने दोस्त को आवाज दी दोस्त एक हाथ में तलवार अपने मित्र की रक्षा के लिए और एक हाथ म रुपयों की थैली उसकी सहायता को लेकर आया। साहूकार ने कहा कि बेटा मित्र ऐसा होना चाहिये।

१८४—उदारता का फल

एक दिन एक पंडित जी एक ठाकुर साहब के यहाँ से कथा पढ़-कर आ रहे थे। रास्ते में कुछ चोर मिले। चोरों ने पंडितजी से कहा कि जो कुछ तुम्हारे पास है सो हमें दे दो। पंडितजी ने सभी कपड़े तक उतार दिये। जब वे अपना लंगोटा भी उतारने लगे तो चोरों ने कहा कि इसे तुम पहिने रहो। पण्डितजी उसे पहिन कर चल दिये। जब कुछ आगे गये तो ध्यान आया कि वे चोर गरीब थे। मेरे पास यह दो सौ रुपये भी तो लंगोट में बँधे हैं उन्हें ही क्यों न दे दूँ ताकि उनका काम बन जाय और वे चोरी भी न करें। पण्डितजी ने लौटकर चारों चोरों को बुलाया तथा उन्हें दो सौ रुपये दे दिये। चोरों ने पूछा महाराज और लोग तो अपने रुपये को छिपाते हैं आप हमें लौटकर देने आये हैं। पण्डितजी ने कहा भाई तुम्हें रुपए की आवश्यकता होगी तभी तो तुम चोरी करने निकले हो। मेरे पास यह रुपया व्यर्थ था। मैंने सोचा कि तुम्हारे काम में यह रुपया आ जायगा और तुम एक पाप से भी बचोगे, किसी की चोरी नहीं करोगे। चोरों ने पण्डित जी का रुपया और सामान वापिस कर दिया और उसी दिन से चोरी करना भी छोड़ दिया। ठीक है—

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

दयालु लोगों के लिए तो सारी पृथ्वी ही उनका कुटुम्ब है। उनसे सम्बन्धित सभी वस्तुऐं सभी की हैं। वह उनके ही सुख की सामग्री नहीं है। वास्तव में यह दयालुता की भावना एक दीपक के समान है जिसके द्वारा कि हजारों अन्धकारमय हृदयों में दयालुता के दीपक जल उठते हैं।

१८५—घोड़े का रोग

एक आदमी अपने घोड़े को अपने मित्र को देकर तीर्थ यात्रा करने गया। घोड़ा सुन्दर था और अच्छी नस्ल का था मित्र ने लोभ-

वश घोड़े को बेचकर एक हजार रुपया प्राप्त कर लिया। जब वह आदमी तीर्थयात्रा से लौटकर आया तो उसने अपना घोड़ा मांगा। मित्र बोला कि वह तो मर गया। उस आदमी ने कहा कि उसकी हड्डियाँ कहां हैं? जंगल में ले जाकर उसके मित्र ने एक बैल की हड्डियाँ दिखलाईं। सींगों को देखकर वह आदमी बोला कि यह तो बैल की हड्डियाँ हैं। मित्र ने उत्तर दिया इसे तो रोग हो गया था कि घोड़े से बैल हो जाता।

१८६—सर्व रोगों की दवा

एक पंडित जी १५ वर्ष काशी रह कर आए थे। उन्होंने वहाँ दवाई कूटने का काम किया था। जब वे नगर में आये और लोगों ने पूछा कि आप कहाँ थे? पंडितजी ने कहा कि हम काशी जी रहे थे। सभी समझने लगे कि यह तो बड़े पंडित होकर आये होंगे। एक दिन एक धोबी का गधा खो गया। अतः वह पंडितजी के पास पूछने आया पंडितजी ने कहा कि महाराज हमें कोई उपाय बतलाइये जिस से मेरा गधा मिल जाय। पंडितजी निरे मूर्ख थे। उनने उसे एक दस्तावर चूरन की पुड़िया दे दी। धोबी ने वह पुड़िया खाली तो उसे दस्त हो गये जब वह जंगल में पखाने गया तो उसका गधा चरता हुआ मिल गया। अब तो धोबी ने आकर पंडित जी की योग्यता तथा उनकी पुड़िया की प्रशंसा के पुल बांध दिये। यह खबर वहाँ के राजा के कानों में पड़ी। राजा के ऊपर शत्रु ने चढ़ाई करदी थी राजा ने पंडित जी को बुलाकर उनकी पुड़िया के बारे में पूछा कि क्या आपके पास कोई ऐसी भी पुड़िया है जो मुझे जिता सकती है। पहिले तो पंडित जी झिझके। परन्तु राजा ने कहा कि तुम मेरे राज्य में रहते हो और पुड़ियाभी नहीं दे सकते। पंडितजी ने खूब सारा जमालगोटा मंगाकर सभी फौज को दे दिया। सारी फौज को दस्त होगए। फौजके सिपाही लोटा ले लेकर बार बार जंगल में पखाने जाते थे। सुबह से शाम हो गई परन्तु पखाने वालों का तांता न टूटा। पास ही में शत्रु की फौज के

डेरे थे। शत्रु ने देखा कि इस राजा के पास इतनी फौज है कि सुबह से शाम तक तो इनके पखाने जाने का नम्बर ही नहीं आता तो मैं क्या जीत सकता हूँ। बेचारा शत्रु डरकर भाग गया और भौंगा बसंत जी के पौ बारह हो गये।

१८७—पर निन्दा

दो पंडितों में एक दूसरे की बुराई करने की आदत थी। वे रुपया कमाने के विचार से घर से निकले। रास्ते में इनकी शकल तिलक छापे और माला से एक सेठानी ने इन्हें रोक लिया और कहा कि महाराज आज आप हमारे ही यहां भोजन करिये। एक पण्डितजी बोले कि भाई हमें तो स्नान करना है। सेठानी ने उन्हें जल दे दिया और दूसरे पण्डितजी से बातें करने लगीं और पूछा कि जो स्नान कर रहे हैं वे कैसे विद्वान् हैं। पण्डितजी ने कहा वह तो गधा है जब यह पण्डितजी स्नान करने गये तो उसने इनके बारे में पूछा कि यह कैसे विद्वान् हैं। उन्होंने उत्तर दिया अजी यह तो निरा बैल है। थोड़ी देर में जब पण्डितजी के खाने का समय हुआ तो सेठानी ने एक थाल में भूसा और एक में घास रख दी। पण्डितजी ने पूछा कि यह तुमने क्या किया। सेठानी ने उत्तर दिया महाराज आपने ही तो कहा था कि यह गधे हैं इसलिए इन्हें मैंने घास दी है और आपने कहा कि यह बैल हैं इसलिए इन्हें भूसा दिया है।

—०—

१८८—डर

एक पण्डितजी के लड़के ने जब वह जंगल में बेरिया के नीचे पखाना फिर रहा था एक बेर खा लिया। वह शाम को उसी दिन एक शादी में गया। वहां वेश्या का नाच हो रहा था। वेश्या ने उस लड़के को सुन्दर देखकर लड़के की ओर झुककर गाना गाया कि मैं तो सइयाँ की बात जान गई रे।

लड़के को बड़ा डर हुआ कि कहीं यह बात सब लोगों में न फैल जाय। अतः उसने उतार कर उसे सोने की अपनी अँगूठी दे दी। अब तो वेश्या ने बड़े मजे से गाना गाना शुरू किया और अब के पण्डित जी के पास आकर उन्हें प्रसन्न करने के लिए गाने लगी कि मैं तो सइयाँ की बात कह दूँगी रे।

अब तो वह बड़े चक्कर में फँस गया। उसने डर के कारण कि कहीं मेरे बेर खाने की बात शायद इसे किसी तरह मालूम हो गई है कह न दे। अतः उसने अपने गले की जंजीर उतार कर दे दी वेश्या ने इसे बड़ा अच्छा देने वाला समझ कर अबके इसके पास आकर गाना गाया कि मानो न मानो सइयाँ मैं तो कह रही हूँ।

अब तो इसे बड़ा गुस्सा आया और क्रोधित होकर बोला कि एक बेर ही तो खाया है तू कहदे कि एक बेर के खाने से क्या होता है मैं खुद ही कह रहा हूँ, तुझे इतनी चीजें दे दीं तब भी तू चुप नहीं हुई।

(जिसकी आत्मा पापी होती है उस व्यक्ति को पग पग पर और शब्द पर डर लगता है।)

—❀—

१८९—वान से पहिचान

एक राजा जब जंगल में शिकार खेलने गया तो रास्ते में उसे एक अन्धा मिला। राजा ने पूछा क्यों सूरदास, इधर से कोई हिरन गया है। अन्धा बोला नहीं राजा साहब कोई हिरन नहीं गया। पीछे मन्त्री आया। मन्त्री ने पूछा कि इधर से राजा साहब गए हैं अन्धे ने कहा कि हाँ अभी गए हैं। बाद में एक राजा का नौकर आया उसने पूछा सूरदास तुमको पता है कि इधर से कोई गया है? अन्धे ने कहा हाँ अभी राजा और मन्त्री गए हैं नौकर ने पूछा कि यह तुमको कैसे मालूम पड़ा कि वे राजा मन्त्री थे? अन्धे ने कहा कि उनकी बात से। राजा को नौकर ने यह किस्सा सुनाया तो राजा बड़ा प्रसन्न हुआ

और उस अन्धे को अपने यहाँ ले गया। तथा उसके लिए एक दाल एक साग और रोटियों का प्रबन्ध कर दिया। एकबार राजा के यहाँ कुछ मोती बेचने वाले आए। राजा ने वह मोती अन्धे को दिखलाया अन्धे ने एक मोती देकर कहा कि यह मोती खराब है इसमें रेत भरी है। जब उसे फोड़कर देखा तो उसमें रेत थी, राजा ने पूछा यह तुमने कैसे जाना ? अन्धे ने उत्तर दिया कि यह और मोतियों से भारी था, तब राजा ने प्रसन्न होकर उसके खाने के सामान में घी और बढ़ा दिया। एक बार एक घोड़े वाला एक घोड़ा बेचने आया राजा ने वह घोड़ा उसी अन्धे को दिखलाया अन्धे ने कहा कि इसकी वक्षी चौड़ी है इस कारण यह बात है कि यह जोड़ं के साथ पैदा हुआ होगा, पूछने से यही मालुम पड़ा, राजा ने अब उसके खाने के साथ में मिठाई भी बढ़ा दी, एक दिन राजा ने पूछा कि आप हमें यह बतलाइये कि मैं पक्का क्षत्री की संतान हूँ। अन्धे ने कहा—नहीं वैश्य की सन्तान हो, राजा ने पूछा कि कैसे ? अन्धे ने उत्तर दिया कि तुम क्षत्री की सन्तान होते तो मुझे हजारों लाखों रुपया इनाम देते, तुम बनिए की संतान हो कभी दूध कभी मिठाई देने का तुमने व्यौपार किया है।

(कार्यों से मनुष्य की पहिचान हो जाती है।)

—(०)—

१६०–ज्यादा तकाजा

एक सेठजी का एक आदमी पर दस हजार रुपया उधार था। सेठजी उसको बड़ा परेशान करते थे, दिन में चार बार तकाजे जाते थे, एक दिन उसने परेशान होकर अपने दोस्त से सारा किस्सा कह दिया, दोस्त ने कहा कि इसे मैं ठीक करूँगा, बीमार पड़जा। उसके बीमार पड़ने की खबर सेठजी पर पहुँची, सेठजी वैद्य को साथ में लेकर आए, सोचने लगे कहीं मर न जाय नहीं तो रुपया डूब जायगा, वैद्य ने कहा हाँ यह ठीक तो हो सकते हैं, परन्तु इनके लिए तो

आस्ट्रेलिया की बुलबुल खिलानी पड़ेगी जो कम से कम पाँच सौ रुपयों की आयगी, सेठजी ने चुपके से पाँच सौ रुपये में एक अमेरिका बुलबुल वैद्य जी के बनाये हुए ठग से खरीद ली, सेठजी ज्यों ही बुलबुल को ले गये और दूकान पर बेचने को टांग दी। इधर यह सारा किस्सा सभी लोगों को मालूम हुआ सभी ने सेठजी का खूब मजाक बनाया।

१६१—रक्षक का भक्षक

एक दिन एक हिरन का शिकारियों ने पीछा किया। वह हिरन एक खेत में जहां बहुत लम्बी २ डाव उगी हुई थी। जाकर छिप गया शिकारी बेचारे ढूंढ़ते २ परेशान हो गये, पर उन्हें कहीं हिरन का पता न लग पाया। उस हिरन ने डाव खाना आरम्भ कर दिया और थोड़ी देर में काफी डाव साफ करदी, जब काफी दूर २ तक डाव साफ हो गई तो शिकारियों को हिरन दिखलाई पड़ने लगा तथा उन्होंने तीर मार कर उसे गिरा लिया। सत्य है जो रक्षा करने वाले का स्वयं भक्षक बनने लगता है उसकी यह दशा होती है।

(जिसकी छाँह बैठे उसे नहीं काटना चाहिए।)

१६२—सच्चा दानी

एक साहूकार बड़ा दानी था। एक दिन एक भिक्षुक उसके यहां दान मांगने गया। वह बार बार उसके दरवाजे पर जाता और आवाज बदल कर दान ले आता। अन्तिम बार जब वह भिक्षुक गया तो उसने कहा कि आप दान तो देते हैं परन्तु एक गलती करते हैं कि आप ऊपर की ओर नहीं देखते, आप नीचे की ओर ही देखते रहते हैं, आपके पास से मांगने वाले कई बार ले जाते हैं मैं ही स्वयं चार बार आपसे मांग कर ले गया हूँ, इस बात का

सुनकर साहूकार ने कहा कि, यह तो मेरा धन नहीं है। देने वाली शक्ति तो कोई और ही महान शक्ति है। लोग मुझसे ही दाता कहते हैं इस कारण से मैं लज्जित होकर ऊपर नहीं देख पाता।

(दान और घमण्ड एक दूसरे से द्वेष रखता है।)

१६३—मौनं सर्वार्थ साधकम्

एक ब्राह्मण की बेटी बड़ी बुद्धिमान थी जब वह अपनी ससुराल गई तो वहाँ पर उससे सभी प्रसन्न रहते थे। केवल उसकी सास ही उससे झगड़ा किया करती थी। यह बात उस लड़की ने अपनी माँ से आकर कही। माँ ने कहा कि बेटी इसके लिए मैं तुझे एक तावीज दे दूंगी। बेटी जब ससुराल जाने लगी तब माँ ने एक ताँबे का तावीज उसे दिया और कहा कि जब तेरी सास तुझसे लड़ा करे तो तू इसे दाँतों में दबा लिया करना। बेटी ने ऐसा ही किया फलतः वह बोलने में असमर्थ रहती थी। और इस चुप रहने के नाम वह सबसे योग्य माने जाने लगी।

१६४—सीधापन और उच्चता

एक साहूकार ने एक मन्दिर बनवाया तथा उसमें एक सुन्दर स्तम्भ जो काफी ऊँचा और साफ था निर्माण करवाया। आदमी उस स्तम्भ को देखने आया करते थे। साहूकार ने एक दिन मन्दिर के पुजारी से पूछा कि सभी व्यक्ति इसी खंभे को क्यों देखते हैं। पुजारी ने उत्तर दिया कि संसार में उच्चता सीधापन और साफ हृदय वालों की ही पूछ होती है।

१६५--जैसे सांपनाथ तैसे ही नागनाथ

एक आम के पेड़ के नीचे दो दोस्त पड़े हुए थे। एक राहगीर को जाते देखकर एक आदमी ने पुकारा और उसे अपनी ओर आने का

इशारा किया और कहने लगा कि भाई यह आम हमारे ऊपर पेड़ पर से गिर कर पड़ा है जरा इसे मुँह में निचोड़ दो। राहगीर ने कहा कि तुम तो बड़े सुस्त हो। ईश्वर ने तुम्हें हाथ क्यों दिये हैं उनसे काम लो दूसरा मित्र जो पास में पड़ा हुआ था बोला—हाँ बापूजी, यह तो सुस्त बहुत है। रात्री भर कुत्ता मेरा मुंह चाटता रहा। मैंने इससे कई बार कहा कि इसे हटा दे परन्तु इससे जरा कुत्ता भी न हटाया गया राहगीर ने कहा कि ठीक है।

धोबी से क्या तेली घाट,
वापै मोगरा वापै लाट,

तुम दोनों ही महान आलसी हो।

१९६—संगत

एक सिंह ने अपने जंगल के राज्य में सलाह देने के लिये एक तोता और एक हंस अपने मन्त्री बना लिये। र जंगल से एक ब्राह्मण जा रहा था जो नीति शास्त्र और वेदान्त का . था। तोते और हंस दोनों ने सिंह से कहा कि इस पंडित से कुछ नीति और वेदांत पढ़ लीजिये। सिंह ने उस ब्राह्मण महाराज को बुलाया। परन्तु सिंह को हिंसक जान कर ब्राह्मण आने में डरने लगा। हंस और तोते ने उन्हें समझाया कि यह सिंह हमारा राजा तुमसे ज्ञान सीखना चाहता है यह तुम्हें नहीं मारेगा। अब ब्राह्मण को विश्वास होगया और उसने सिंह को ज्ञान दिया। एक बार रुपये की आवश्यकता पड़ने पर फिर वह ब्राह्मण सिंह के पास आया। अब सिंह के वह दोनों मंत्री मर चुके थे। रीछ आदि हिंसकजन्तु, उसके मंत्री थे। वे उस ब्राह्मण को देख कर प्रतिदिन सिंह का मन लुभाया करते थे कि इसका माँस बड़ा अच्छा होगा। यह ब्राह्मण है, यह तो सदैव मिठाई खाता होगा। इसका मास बड़ा ही मीठा होगा। इस बात को सुनकर सिंह ने ब्राह्मण से कहा कि भाई मेरे पास अब वह योग्य मन्त्री नहीं है जो

वेदांत पढ़ने की सलाह दें। मेरे पास तो यह हिंसक जन्तु हैं जो मुझे तुम्हें खाने की ही सलाह देते हैं अच्छा यही है कि आप यहाँ से लौट जांय।

१६७—समझदारी की बात

एक चतुर व्यक्ति बातें बेचने का व्यापार करता था। एक बार एक वैश्य पुत्र ने उसे आवाज लगाते हुये देखकर कहा कि बीस रु० की एक बात हमें दे दो वैश्य के पुत्र को चतुर आदमी ने कहा कि "दो आदमी लड़ते हों तो वहाँ नहीं खड़ा होना चाहिये।" जब वह लड़का घर गया तो उसके बाप ने उससे पूछा कि रुपये कहाँ है। तब बेटे ने सारा किस्सा कह दिया। बाप गुस्सा होकर उससे रुपया लौटाने गया। उस आदमी ने कहा कि यदि जीवन भर मेरी बात काम में न लाओ तो वापिस करदूं। वैश्य ने उसकी बात मानकर रुपया वापिस ले लिये। एक दिन मन्त्री और राजा के लड़के की खेलते-खेलते जंगल में लड़ाई हो पड़ी। यह वैश्य का पुत्र उसे देखने लगा। जब यह शिकायत राजा के पास हुई तो राजा बड़ा न्यायकारी था। राजा ने कहा कि जो भी लड़का दोषी होगा उसे ही मैं दण्ड दूंगा राजा ने पूछा कि तुम्हारे अतिरिक्त वहां और कोई भी था। दोनों ने कहा कि एक वैश्य का लड़का था। राजा के लड़के ने वैश्य के लड़के को बुला कर कहा कि तुम्हें मेरी गवाही देनी होगी नहीं तो तुम्हें मैं मरवा दूंगा। मंत्री के लड़के ने भी यही बात वैश्य के पुत्र को बुलाकर कही। वैश्य पुत्र ने अपने बाप को यह गवाही का हाल सुनाया तथा कहने लगा कि २०) के पीछे तुमने मेरी जान ली है। अब तो वैश्य उस आदमी के पास इसका उपाय पूछने गया। उस आदमी ने कहा कि २००) लेकर ही मैं तुम्हें उपाय बता सकता हूँ। वैश्य ने २००) उसे निकाल कर दिये तब बुद्धिमान ने कहा कि जब गवाई का समय आये तो तुम्हारा बेटा नंगा हो जाय कपड़े फाड़ने लगे और नाचने लगे लड़के ने यही किया और राजा ने पागल उसे समझ कर छोड़ दिया।

१९८--परमपिता

एक राजा ने जो कि ईश्वर के अवतार लेने की बात में विश्वास नहीं करता था अपने मन्त्री से प्रश्न किया कि ईश्वर जैसा महान् आदमी भक्तों के काम के लिये खुद आता है। तो क्या वह नौकर नहीं भेज सकता। इसका मतलब तो यह है कि ईश्वर इतना छोटा है कि उसके कोई नौकर आदि नहीं है। मन्त्री ने कहा सरकार इसका उत्तर कुछ समय पश्चात् ही मैं आपको दे सकूंगा। मन्त्री ने राजा के कुमार की जैसी एक मोम की मूर्ति बनवाई और उसे राजकुमार से मांग कर ही कपड़े पहिना दिये। शाम को जब राजा नाव में सैर करने गये तो मन्त्री ने पहिले ही नदी के पास एक नौकर को उस प्रतिमा के साथ खड़ा कर रखा था। जब राजा नाव में बैठ गया तो मन्त्री ने कहा कि सरकार राजकुमार को भी नाव में बुला लें वह वहां पर खड़े हुये हैं। जैसे ही राजा ने राजकुमार को बुलाया तैसे ही नौकर ने उस मौम की राजकुमार की मूर्ति को इतनी असावधानी से चढ़ाया कि मूर्ति नदी में गिर गई। राजा ने किसी नौकर के कूदने की प्रतीक्षा न करके स्वयं ही कूद कर मूर्ति को निकाल लाये। मन्त्री ने पूछा कि महाराज आप इतनी शीघ्रता से क्यों कूद पड़े आपके नौकर ही निकाल देते। राजा ने कहा कि भाई पिता का प्रेम ऐसा ही होता है वह अपने पुत्र को दुखी नहीं देख सकता। इस बात को सुन कर मन्त्री ने कहा कि उस परम पिता परमात्मा का भी अपने पुत्रों के साथ ऐसा ही प्रेम है वह अपने नौकरों को न भेजकर स्वयं अवतार लेते हैं।

१९९--नमक हारम व नमक हलाल

एक दुष्ट राजा ने एक साधु की बड़ाई सुनकर उससे मिलने का विचार किया। जब वह राजा उससे मिलने गया तो साधु ने राजा की ओर कोई ध्यान न दिया और अपने कुत्ते के ऊपर ही हाथ

फेरता रहा। राजा ने क्रोधित होकर साधु से पूछा कि तू बड़ा है या तेरा कुत्ता। साधु ने उत्तर दिया कि यह कुत्ता हम तुम दोनों से बड़ा है जो अपने एक टुकड़े देने वाले मालिक के दरबाजे पर पड़ा रहता है। और एक हम तुम हैं जो ईश्वर के द्वारा सभी प्रकार का आनन्द प्राप्त कर लेने पर भी उसका नाम तक नहीं लेते हैं।

२००--स्वार्थ की बात

रात्रि को गीदड़ों के रोने की आवाज सुनकर एक राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि यह क्यों रो रहे हैं। मन्त्री ने कहा कि यह भूखे है। राजा ने कहा कि मेरे राज्य में कोई भूखा नहीं रहना चाहिये। कल इनके खाने का इन्तजाम कर देना सुबह मन्त्री ने कहा कि सरकार १० हजार रुपये महीने का खर्चा है। राजा ने आज्ञा देदी और मन्त्री १० हजार रुपये महीने लेने लगा। दूसरे दिन जब राजा ने उन्हें रोते सुना तो मन्त्री से पूछा कि यह आज क्यों रो रहे हैं। मन्त्री ने कहा कि सरकार यह जाड़े के कारण रो रहे हैं। जङ्गल में नंगे रहते हैं। राजा ने कहा कि कल इनके कपड़ों का इन्तजाम कर दीजिये। मन्त्री ने ५ हजार रुपये उनके कपड़ों के लिये राजा से ले लिये। अगले दिन जब राजा ने उनके रोने की आवाज सुनी तो राजा ने फिर इसका कारण पूछा मन्त्री ने कहा कि सरकार अब यह बहुत प्रसन्न हैं तथा आपके शत्रु नष्ट हों इसलिये आपके हेतु ही यह रो रहे हैं।

२०१—देर है अन्धेर नहीं

एक स्त्री को किसी ने बतलाया कि तू एक गाँव जलादे तो तेरे एक पुत्र होगा। स्त्री ने वैसा ही किया। उनके एक पुत्र हुआ। अब तो उसे पुत्र होने की चाट लग गई तथा इसी प्रकार उसने सात गाँव जलाये। तथा उसके सात पुत्र हुये। इन सभी कुकर्म के बारे में एक साधु को पता था। वह देखता था उसके सातों पुत्र बड़े आराम से हैं तथा

वह भी बड़ी सुखी है। साधु को भी भगवान से कुछ विश्वास कम होने लगा वह सोचने लगा कि बुरे कर्मों को करनें वाला आदमी इतना सुखी रहता है। परन्तु एक दिन उसके सातों पुत्र और पति सभी नदी में डूब कर मर गये और उस दुष्टा को जन्म भर भिक्षा मांग कर जिंदगी काटनी पड़ी।

—०—

२०२—जैसी सास तैसी बहू

एक ब्राह्मणी जो कि स्वभाव की बहुत बुरी थी अपनी सास के लिये भूसी में थोड़ा आटा मिलाकर रोटी दिया करती थी। जब उसकी बहू आगई तो वह बड़ी अक्लमन्द थी तथा साथ ही साथ दयालु भी थी। उसको अपनी बड़ी सास पर दया आई। उसने एक तरकीब निकाली। जो भूसी बचती थी उसे वह बड़ी सजा कर रखती थी। एक दिन उसकी सास ने कहा कि बहू इतनी भूसी क्यों इकट्ठा हो गई। इसे किसी को दे देना। बहू ने उत्तर दिया कि नहीं यह तो काम में आवेगी। जब मैं आपकी तरह घर की मालिकिन बन जाऊंगी तब आपकी रोटियों के लिये भूसी कहाँ से लाऊंगी। सास समझ गई कि मैं भी तो किसी की सास हूँ। उसने उस दिन से अपनी सास के साथ बहुत अच्छा व्यवहार करना आरम्भ कर दिया।

————

२०३—जन्म भूमि

स्वर्ग में रहने के लिये सभी का मन चाहता है। परन्तु एक दिन गरुड़ ने भगवान से कहा कि महाराज यदि आप मुझे कुछ छुट्टी दे दो तो मैं अपने घर को चला जाऊं। भगवान ने छुट्टी दे दी और गरुड़ जी अपने घर चले गये। भगवान ने सोचा कि गरुड़ के घर में क्या विशेषता है जो स्वर्ग को छोड़कर वहाँ की याद आई। मैं भी उनके घर को अवश्य देखूँगा। भगवान ने जाकर जब गरुड़जी का घर देखा तो गरुड़ जी एक वट के वृक्ष की खोंतर में घोंसले में रहते

थे। घर में घास कूड़ा इकटठा था। भगवान ने पूछा कि गरुड़ जी क्या इसी के लिये आपने स्वर्ग छोड़ा था। गरुड़ ने कहा-महाराज आपने ही तो लक्ष्मण से रामावतार के समय कहा था—

अपि स्वर्णमयी लंका मया न रोचते,
जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।

—×—

२०४—प्रसन्नता का ढंग

एक किसान को अत्यन्त प्रसन्न देखकर राजा ने पूछा कि तुम क्यों इतने प्रसन्न रहते हो। इसका कारण क्या है ? तुम्हें कितनी मजदूरी मिलती है। किसान ने उत्तर दिया कि आठ आना। राजा ने कहा कि तुम उसका क्या करते हो ? किसान ने कहा कि मैं दो आने कर्जे के चुकाता हूँ। दो आने का कर्जा देता हूँ। दो आने आगे के लिये जमा करता हूँ। और दो आने खाता हूं। इस कारण मुझे कोई चिन्ता नहीं है। राजा बोला कि यह क्या मामला है कि तुम कर्जा लेते भी हो देते भी हो। सभी बातें साफ-साफ बतलाओ। राजा से किसान ने कहा कि मेरे मां बाप ने मुझे बचपन में खाना खिलाया था अतः उनको दो आने नित में देता हूँ उनका यह ऋण चुकाता हूं दो आने नित में अपने बच्चों के ऊपर खर्चा करता हूँ जो कर्जा कि मुझे मेरे बुढ़ापे में मेरे बच्चे अदा करेंगे। दो आने में पुण्य करता हूं जिससे कि मुझे अगले जन्म में मिलेगा। यह रुपया मेरा ईश्वर के यहाँ जमा हो रहा है। तथा दो आने नित मैं खाता हूँ।

——

२०५—कहने कहने का फेर

एक राजा ने स्वप्न में देखाकि उसके सभी दांत टूट गये हैं। राजा ने उसका फल अपने ज्योतिषी जी से पूछा उन्होंने उत्तर दिया कि महाराज इसका फल यह होता है कि आपके सभी मित्र आपके ही सामने

मर जायेंगे। राजा ने क्रोधित होकर ज्योतिषी जी को बन्द करवा दिया। एक मन्त्री ज्योतिषी जी का मित्र था। जब यह बात मन्त्री को मालूम पड़ी तो मन्त्री ने कहा कि सरकार इसका मतलब यह है कि आप अपने सभी मित्रों से ज्यादा जीवित रहेंगे। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ इसी बीच में ज्योतिषी जी ने कहा कि सरकार मेरे कहने का भी तो यही मतलब होता है राजा ने उत्तर दिया हाँ ठीक है परन्तु इसमें उतना ही फर्क हो गया जितना खाने में और निगलने में।

२०६—संस्कार

एक महात्माजी जब भिक्षा माँगने आया करते थे तो रास्ते में एक वेश्या का घर पड़ता था। महात्माजी की दृष्टि प्रतिदिन उस पर पड़ती थी। एक दिन महात्माजी उसके घर चले गये। वेश्या ने उन्हें भी अपना ग्राहक जान उनसे ऋतुदान माँगा। महात्माजी के हृदय पर प्रतिदिन वेश्या को देखने से बुरे संस्कार जम गये थे अतः वे इस कार्य को तैयार हो गये तथा प्रतिदिन उसके यहाँ जाना भी आरम्भ करदिया एक दिन वेश्या की साड़ी का एक कोना राख में गिर पड़ा। साधु ने कहा कि कोना राख में गिर पड़ा है। वेश्या ने साधु को मजाक में उत्तर दिया कि यहाँ आकर त अच्छे २ महात्माओं की तपस्या खाक में मिल जाती है। यह तो साड़ी ही है। महात्माजी के अज्ञान का पर्दा हटा और वह फिर तपस्या में लग गये।

२०७—पिता की शिक्षा

एक वैश्य ने अपने पुत्र को मरते समय तीन शिक्षायें दीं।

१—सदा मीठा खाना।

२—देकर नहीं मांगना।

३—साया-साया जाना और साया-साया आना।

जब वैश्य मर गया तो उस लड़के ने मिठाई खाना शुरू कर दिया। जिस किसी को भी रुपया देता था मांगता नहीं था। और दूकान तक उसने रास्ते में टीन छवादी ताकि साये में जा सके। इस प्रकार के व्यर्थ के काम में उसका रुपया लग गया और वह गरीब हो गया। एक दिन उसके पिता का मित्र आया इसने सारी बातें उससे कहीं वह मित्र बोलाकि तूने ठीक मतलब नहींसमझा उसका मतलबथा।

सदा मीठा खाना अर्थात् सन्तोष रूपी मीठा खाना।

देकर नहीं मांगना अर्थात गिरवी रकम रखकर ही रुपया देना।

साया साया जाना और साया साया आना अर्थात सुबह दुकान जाना शाम को लौट आना।

ऐसा करने से वह फिर समृद्ध हो गया।

—❀—

२०८—व्यर्थ का झगड़ा

रास्ते में जाते हुये अच्छी सी जमीन देख कर दो साथियों ने जो घूमने जा रहे थे कहा कि यदि यह मुझे मिल जाय तो मैं इसमें बगीचा लगवाऊँ। दूसरे ने कहा कि मैं इसमें अपनी भैंस चराऊँ। पहिले साथी ने कहा मैं तो अपने बगीचे में भैंस नहीं चरने दूंगा। दूसरे ने कहा कि मैं तो अपनी जमीन में जो कुछ चाहूं सो करूंगा। इसी जिद में दोनों में खटपट हो पड़ी। एक रास्तागीर वह सभी झगड़ा देख रहा था। वह बोला कि भाई न तो तुम्हारा बगीचा ही लगेगा न तुम्हारी भैंस ही चरेगी यह तो किसी दूसरे की ही जमीन है। तुम्हारी नहीं हो सकती।

२०९—स्त्री से भेद कहे

एक चतुर आदमी जो बात बेचने का काम करता था परदेश गया। जब वह आवाज लगा लगा कर बात बेच रहा था। इसी बीच में एक गरीब आदमी आया और बोला कि मुझे एक आने की एक

बात दे दे उसने उत्तर दिया कि परदेश में चाहे बुरे से बुरा या छोटा भी काम मिले उसे करले। उस गरीब आदमी ने कहा कि एक आने की और बात बतला दो। उसने कहा कि अपना भेद स्त्री से न कहे। उस गरीब ने कहा कि एक आने की और बात बतला दे। उसने कहा कि बड़े आदमी से झूंठ न बोले जब वह गरीब अपने घर से गरीबी के कारण आ रहा था रास्ते में कुछ लोग एक मुर्दे को ढोने के लिये आदमी तलाश कर रहे थे। उस गरीब ने सोचा कि यह काम हमें नहीं छोड़ना चाहिये। वह मुर्दे को नदी में ५) की मजदूरी पर डालने ले गया वह मुर्दे की नई धोती देखकर उस गरीब ने ज्योंही धोती उतारी रुपयों की थैली उसकी कमर में से निकल पड़ी अब तो वह रुपया लाकर अपने घर आया। और मकान आदि बनाने लगा। पड़ोसिन ने उसकी स्त्री से पूछा कि तुम्हारे पास इतना रुपया कहां से आया। उसकी स्त्री ने उत्तर दिया कि यह परदेश एक दिन को गये थे वहीं से लाये हैं। पड़ोसिन ने कहा कि तुम्हें तो पूछ लेना चाहिये कि यह कैसे रुपया लाये है। रात्रि को उसकी स्त्री ने पूछा कि यह रुपया आप कहाँ से लाये हैं। पति ने कहा कि तुम्हें इन बातों से क्या मतलब है। स्त्री ने कहा कि अगर इसका उत्तर मुझे नहीं मिला तो मैं जान दे दूंगी। पति ने उस चतुर आदमी की बात का ध्यान कर किसी से भेद न खोले उत्तर दिया कि मैं यहाँ से जब गया था तो पास के पहाड़ के एक पेड़ के नीचे बैठकर रोने लगा। इतने में कुछ चिड़ियाँ मेरे रोने को सुनकर आई और मेरी आखों में आक का दूध लगाकर मुझे एक खजाने में ले गई और वहाँ से मैं यह धन ले आया हूँ। यही किस्सा उसकी स्त्री ने पडोसिन को सुना दिया पड़ोसिन ने जिद करके अपने पति को भी ऐसा करने के लिये पहाड़ पर भेजा। परन्तु उसके पास कोई चिड़िया न आई। हार कर उसने आक का दूध अपनी आँख में लगा लिया। अब तो वह अन्धा हो गया। अब वह रोते हुये अपने घर पर आया तो उसकी स्त्री ने इस धोखेबाजी की खबर राजा को दी। राजा ने इस आदमी को बुलाया और सारा किस्सा पूछा। इसने

विचार किया कि बड़े आदमी के सामने झूठ नहीं बोलना चाहिये। इसीलिये ठीक-ठीक बात कहदी। राजा इससे बहुत प्रसन्न हुआ।

२१०—अहिंसा

एक बार मुहम्मद साहब एक साथी के साथ में भगे हुये जा रहे थे। शत्रु उनका पीछा कर रहे थे जब शत्रु नजदीक आ गये तो एक खाई में दोनों ने छिपने का विचार किया। उस खाई में मकड़ी का जाला देखकर मुहम्मद साहब बोले कि ठहरो कहीं जाला न टूट जाय दूसरा साथी शत्रुओं को पास देखकर बोला—अजी कूदिये, नहीं तो हमारी जान चली जायगी। मुहम्मद साहब ने कहा कि उसने बड़ी मेहनत से बनाया है इस घर को नहीं तोड़ना चाहिये। अपनी जान बचाने के लिये हम दूसरों को क्यों कष्ट दें। ऐसा कह कर वह एक सिरे से जहां मकड़ी का जाला नहीं था अन्दर खाई में चले गये। पीछे जब शत्रु आये तो उन्होंने देखा कि इस खाई में तो वह नहीं गये हैं क्योंकि जाला कहीं से भी टूटा हुआ नहीं है। इस प्रकार से उनकी जान बच गई। सत्य है जो दूसरों का अनिष्ट चाहते हैं उनका ही अनिष्ट होता है।

२११—भारत का सन्देश

भारतवर्ष के विद्वानों से मिलने की इच्छा होने के कारण सिकन्दर ने अपने एक नौकर को एक महात्मा के पास भेजा। नौकर ने कहा कि महाराज आपको सिकन्दर ने बुलाया है। साधू ने कहा कि मैं तो नहीं जाता। नौकर बोला कि यदि आप नहीं चलेंगे तो वह आपको दण्ड देंगे। वह संसार के विजेता हैं। साधु ने पूछा कि तब तो वह दस बीस हजार मन अन्न खाते होंगे। नौकर ने उत्तर दिया नहीं वह तो साधारण आदमियों की तरह ही खाना खाते हैं। साधु ने

उत्तर दिया कि उनसे तो यह जंगल के पेड़ ही अच्छे हैं जो बिना किसी को सताये रहते हैं। केवल मुट्ठीभर दाने के पीछे ही वह इतने आदमियों को कष्ट देते हैं। जब यह बात नौकर ने सिकन्दर से कही तो सिकन्दर ने आकर महात्मा जी के पाँव पकड़ लिये तथा महात्मा जी से और ज्ञान प्राप्त किया तथा आक्रमण करना भी उसी समय से बन्द कर दिया।

---o---

२१२—दया का फल

सर्वं यज्ञेषु यद्दानं सर्व तीर्थेसु यत्फलम्
सर्व दान फल वापि ना तत्तु ल्यमहिंसया

सुबुक्तगीन नाम का एक बादशाह का नौकर शिकार खेलने गया तो उसे एक हरिणी और उसका बच्चा दिखलाई पड़ा। उसने बच्चे के पीछे अपना घोड़ा दौड़ा कर उसे पकड़ लिया। हरिणी दूर खड़ी हुई उसे प्यासे नेत्रों से देखती रही। उसके नेत्रों से आँसू देखकर सुबुक्तगीन ने हरिणी के बच्चे को छोड़ दिया। रात्रि को उसे सपना दिखलाई दिया कि इस दयालुता और अहिंसा के बदले मुझे बादशाहत मिलेगी। थोड़े दिन पश्चात् उसे वास्तव में बादशाहत मिल गई। सत्य है। अहिंसा परमोधर्मः।

२१३—चौबेजी छब्बे बनने गए दुब्बे ही रह गए

एक मेंढ़क और हंस की मित्रता थी। एक दिन एक शिकारी ने हंस को जाल में पकड़ लिया। मेंढ़क ने जो समुद्र में रहता था शिकारी से कहा कि तुम इस हंस को छोड़ दो मैं तुम्हें यह लाल देता हूँ। शिकारी हंस को छोड़ कर लाल लेकर अपने घर चला गया। घर पर उसकी स्त्री ने कहा कि मैं तो इस लाल को कानों के आभूषण में जड़वाऊंगी। इसका एक जोड़ा और लाओ। शिकारी ने जाकर फिर वही हंस पकड़ लिया। मेंढ़क ने शिकारी से कहा कि भाई तुमने यह

हंस क्यों पकड़ा है शिकारी बोला कि मुझे इस लाल का जोड़ा दे दो मेंढ़क ने कहा कि अरे हम तो समुद्र में रहते हैं जहाँ ऐसे हजारों रत्न पैदा होते हैं। तुम हंस को छोड़ दो मैं तुम्हें ऐसा लाल दे दूंगा। शिकारी ने हंस को छोड़ दिया तब वह मेंढ़क बोला कि भाई वहाँ पर तरह-तरह के रत्न हैं यदि तुम मुझे यह लाल देदो तो इसका जैसा ही लाल ढूंढ़ लाऊँ। शिकारी ने वह लाल मेंढ़क को दे दिया इधर मेंढ़क ने इशारे से हंस से उड़ने के लिये कह दिया। मेंढ़क भी मुंह में लाल को दबाकर समुद्र में डुबकी लगा गया। बेचारा शिकारी इन्तजारी करते करते ही रह गया।

२१४—पर उपदेश कुशल बहुतेरे

तीन मियाँजी साथ साथ नमाज पढ़ रहे थे। एक मियाँ नमाज पढ़ते २ कुछ बोल उठा। दूसरे मियाँ ने उसे धक्का देते हुये कहा कि मियांजी नमाज पढ़ते में बोला नहीं करते। तुम्हारी नमाज खता हो गई। तीसरे ने कहा कि जनाब नमाज तो आपकी भी खता हो गई आप भी गुफ्तगू करने लगे। चौथा आदमी जो देख रहा था वह बोला कि जनाब आपकी भी नमाज खता हो गई क्योंकि आपने सबकी गुफ्तगू के बाद में अपनी गुफ्तगू पेश कर ही दी।

—×—

२१५—यथा देहे तथादेवे

एक राजा ने अपने मन्दिर में संगमरमर का फर्श लगवाया। एक दिन जब पुजारी जी मूर्ति को उठा रहे थे तब अचानक संगमरमर पर पैर फिसल जाने से मूर्ति फूट गई। राजा ने अपनी सभा बुलाई और विचार किया कि क्या किया जाय। सभी ने यही उत्तर दिया कि ऐसी स्थित में नई मूर्ति स्थापित करनी चाहिये। परन्तु रानी के दामाद ने कहा कि इसका उत्तर हम परमहंस जी से पूछेंगे। जब राम कृष्ण परमहंसजी के सामने यह प्रश्न रक्खा गया कि एक मूति की

एक टांग टूट गई है उसके स्थान पर नई मूर्ति बिठलानी चाहिये या उसी मूर्ति से काम चल सकता है। हमारे पंडित तो कहते हैं कि खंडित मूर्ति मन्दिर में नहीं रहती। परमहंस ने उत्तर दिया कि यदि रानी साहब के जमाई की एक टांग टूट जाय तो उनकी बेटी उन्हें छोड़ देगी, रानी ने उत्तर दिया-नहीं। परमहंस बोले कि शास्त्रों में तो यह लिखा है कि यथा देहे तथा दैवे। जैसा अपने शरीर को समझे वैसा ही ईश्वर को समझे। अतः उनके दामाद ने उस मूर्ति का पांव जुड़वा कर ही वह मूर्ति रख दी।

२१६—अपने अपने मन की

एक हिंदू, एक मुसलमान, एक कोलिया, एक बनियाँ, एक पहलवान, एक माली और एक तमोली में दोस्ती थी। सभी रास्ते में जा रहे थे। अचानक एक चिड़िया के बोलने की आवाज सुनाई दी। हिंदू ने कहा कि देखो यह चिड़िया कितनी सुन्दर बात कह रही है—राम लक्ष्मण दशरथ। मुसलमान ने कहा कि नहीं यह तो कह रही है-खुदा तेरी कुदरत। कोलिया बोला नहीं यार, यह तो कहती है—चरखा पानी चमरख। बनियाँ बोला यार यह तो कह रही है—नमक मिरच ढक रख। पहलवान भी चुप न रह सका वह बोला यह चिड़िया कह रही है कि डंड बैठक कसरत। माली ने कहा—भाई, यह तो कह रही है कि नीबू नारंगी कमरख। तम्बोली जो अब तक चुप था बड़े जोर से बोल उठा और कहने लगा—यार, वह साफ २ तो सुनाई पड़ रहा है कि पान पत्ता अदरख।

२१७—फूट

तीन दोस्त थे जिनमें एक नाई, एक ठाकुर और एक ब्राह्मण था। शाम के समय जब घूमने जा रहे थे तो उन्होंने खाने के लिये एक खेत में से कुछ चने उखाड़ लिए। खेत का मालिक एक जाट था।

उसने इनको पकड़ लिया। परन्तु वह डर रहा था कि यह तीन हैं। मुझे मारेंगे। जाट ने सभी से पूछा कि आपकी जात क्या है। एक ने अपनी जात नाई, दूसरे ने ठाकुर और तीसरे ने ब्राह्मण बताई। जाट ने सोचा कि इनमें फूट डाल कर ही सभी को दण्ड दिया जा सकता है। जाट ने प्रश्न किया कि भाई नाई देखो यह ब्राह्मण हमारे गुरू हैं। यह ठाकुर साहब हमारे राजा हैं। इन ब्राह्मण महाराज ने खाया तो पुण्य हो गया और राजा साहब ने हमारे खेत पर कृपा करदी यह तो बहुत ही अच्छी बात है पर तुमने कैसे खेत से हाथ लगाया। जाट ने यह कह कर नाई की खूब मरम्मत कर दी। अब ठाकुर साहब की बारी आई, ठाकुर साहब से कहा कि ब्राह्मण देवता तो हमारे गुरू हैं तुमने मेरे खेत से क्यों हाथ लगाया यह कह कर उसने ठाकुर साहब की खूब मरम्मत कर दी। अब ब्राह्मण से कहा क्यों बे वामन, तूने मेरे खेत से क्यों हाथ लगाया यह कह कर ब्राह्मण देवता की भी खूब पूजा की। इस प्रकार से उसने भेद उत्पन्न करके सभी को दण्ड दे दिया।

—०—

२१८—उद्धव का मार्ग

एक राजा था जो बहुत दिनों से कथा सुना करता था। उसने पण्डित जी से प्रश्न किया कि महाराज गुरूजी का उपदेश सुन कर जनक ने क्षण भर में ज्ञान प्राप्त कर लिया। शुकदेव जी को सात दिन में परमपद मिल गया परन्तु महाराज हमें तो अभी ज्ञान पैदा नहीं हुआ इसका उत्तर दीजिये। पण्डितजी बोले कि हम शास्त्र देख कर इसका उत्तर देंगे। प[illegible] परेशान थे। अचानक एक महात्मा उनके घर पर भि[illegible] मागने आये तो उन्होंने पण्डित जी की यह दशा देखकर कारण पूछा। पण्डित जी ने अपनी समस्या महात्मा जी को [illegible]ला दी। महात्मा जी ने कहा कि इसका उत्तर हम राजा को दे देंगे [illegible]रे दिन महात्मा जी ने राजा और पण्डित जी दोनों के हाथ बांध

कर एक कमरे में बन्द कर दिया तथा खाना खाने को वहाँ रख दिया। राजा को जब भूख लगी तो राजा ने गुरू जी से कहा—महाराज, आप मेरे हाथ खोल दीजिये, गुरूजी ने कहा कि मेरे खुद हाथ बंधे हुये हैं। इसी समय महात्मा ने कहा कि दोनों के हाथ बन्धे रहने के कारण तुम खाना नहीं प्राप्त कर सकते हो। इसी प्रकार तुम दोनों अभी संसार में बधे हो अतः तुम्हें ज्ञान नहीं मिल सकता है।

—×—

२१९—भगवान मानव

एक आदमी विष्णु की पूजा किया करता था। परन्तु उस मूर्ति की पूजा करने का फल उसे कुछ भी नहीं मिला। अतः उसने रुष्ट होकर देवी की मूर्ति लाकर उसकी पूजा करना आरम्भ कर दिया और धूप इत्यादि देने लगा। वायु के कारण धूप विष्णु की मूर्ति की ओर उड़कर जाती थी अतः उस आदमी ने यह सोचकर कि यह धूप इनको न लगे क्योंकि यह तो कुछ फल ही नहीं देते हैं उनकी नाक में रुई घुसेड़ने लगा। इस बात से भगवान प्रसन्न होकर उत्पन्न होगये और कहा—बोलो क्या वरदान माँगते हो? भक्त ने पूछा कि तुम यह तो बतलाओ कि तुम पूजा करने से तो कुछ नहीं बोले और नाक में रुई करने से मेरे सामने आ गये इसका क्या कारण है? भगवान बोले कि तब तक तू मुझे मूर्ति ही समझता था। अब तूने मुझे भगवान समझा तभी तो तूने मेरी नाक में रुई लगाई। क्योंकि पत्थर तो उसकी सुगन्धि ले ही नहीं सकता है। ठीक ही है देवता को वास्तविक ईश्वर मान कर ही पूजा करनी चाहिये न कि मूर्ति मानकर।

——

२२०—नाच न जाने आँगन टेढ़ा

एक शिष्य ने गुरूजी से कहा कि महाराज पुराणों में बड़ी गप है। महाराज ने पूछा कि क्या? शिष्य ने उत्तर दिया कि अगस्त ऋषि

समुद्र को पी गये। गुरूजी बोले अरे मैं ही पी सकता हूँ! सभी शिष्य ने गुरूजी से जिद की कि चल कर आप समुद्र पी लीजिये। गुरूजी अब झूठ बोलने से चक्कर में फंस गये। शिष्य सुबह ही गुरू जी को साथ में लेकर समुद्र की ओर चल दिये। और समुद्र के किनारे पहुँच कर बोले कि गुरू जी, समुद्र को पीजिये। गुरूजी बोले कि मैं समुद्र को तो पी सकता हूँ परन्तु इसमें नदियों का पानी बह कर बढ़ता रहता है पहिले उसे बन्द कर दो।

२२१—मोटा होने की दवा

दो बाबूजी जब रास्ते में जा रहे थे उन्होंने एक बहुत मोटे बनिये को देखा। दोनों कहने लगे कि यह बनियाँ क्या खाता है जो इतना मोटा हो गया। जरूर ही यह कोई नई दवाई खाता होगा। उन्होंने सेठजी से प्रश्न किया कि सेठजी आप क्या खाते हैं जो इतने मोटे हो गये हैं। इसी बीच में एक राजा का नौकर आया उसने कुछ सामान खरीदा और दाम देते २ गालियाँ देने लगा कि बदमाश बेई-मान है इतने पैसे लेता है। एक तो कम तौलता है दूसरे दाम भी ज्यादा लेता है। जब वह चला गया तो सेठजी से बाबूजी ने कहा कि यह तो तुम्हें गाली दे गया। सेठजी ने उत्तर दिया बाबूजी हम गम खाते हैं तभी तो मोटे हैं नहीं तो आपकी तरह पतले दुबले रहते।

२२२—साथ का कलंक

काजर की कोठरी में कैसे हू सयानो जाय,
एक लीक काजल की लागि है पै लागि है।

एक प्रति लिप्त पुरुष ने अपने योग्य लड़के को कुछ बुरे लड़कों के साथ में देखा। घर पर जब उसका लड़का आया तो उसने अपने लड़के से कहा कि बेटा, तुम्हें इन लड़कों के साथ नहीं रहना चाहिये।

लड़के ने उत्तर दिया पिताजी, आपने मुझमें अभी तक कोई बुरी आदत पाई हो या मैंने कोई बदनामी का काम किया हो तो आप मुझे बतलाइयेगा। बाप ने बेटे से कहा कि बेटा तुम यहां आओ और उसे पास बुलाकर उसके हाथ में एक कोयला दे दिया। बाप ने पूछा कि बेटा तुम्हारा हाथ जला कि नहीं। बेटे ने उत्तर दिया—पिताजी, मेरा हाथ बिलकुल भी नहीं जला है। बाप ने कहा जरा अपने हाथ को देखो और दूसरा हाथ जिससे तुमने कोयला उठाया उसे देखो और उस स्थान के कपड़े पर देखो जहां पर तुम्हारा हाथ लग गया है। बेटे ने उत्तर दिया। पिताजी मेरे हाथ और कपड़े दोनों ही खराब हो गये हैं। आपने कहा—बेटा मेरी बात से निश्चित ही दुःख हुआ होगा परन्तु मैं इस बात को जानते हुए भी कि तुम्हारे ऊपर उनकी दुष्टता का कोई असर नहीं पड़ सकता है परन्तु तुम बदनाम अवश्य हो जाओगे। जैसे ठंडे कोयले से हाथ तो नहीं जलता पर कालिख जरूर ही लग जाती है। बेटे के ऊपर बाप की बात का बहुत असर पड़ा और उसने उन साथियों को छोड़ दिया।

२२३—चापलूसी चटुकारिता

एक राजा ने अपने मन्त्री से कहा कि आज हमने बैंगन की तरकारी खाई थी बड़ी स्वादिष्ट बनी। मन्त्री बड़ा ही चापलूस था कहने लगा सरकार बैंगन तो सब तरकारियों का राजा है तभी तो उसके सिर पर खुदा ने ताज रक्खा है इसमें तो बहुत गुण हैं। बड़ा पाचक होता है। दूसरे दिन जब राजा को बैंगन मे कुछ हानि दिखलाई पड़ी तो राजा ने कहा कि भाई बैंगन ने हमें नुकसान किया। मन्त्री बोला सरकार यह तो है ही बुरी चीज। तभी तो उसका रंग काला है, और तभी इसे बेगुन यानी बिना फायदे की चीज कहते हैं यह तो पित्त को बढ़ाता है इतने में दूसरा मन्त्री बोला कि कल तो आप उसकी प्रशंसा के पुल बाँध रहे थे। आज आप बुराई कर रहे हैं

मन्त्री ने उत्तर दिया कि भाई साहब हम राजा साहब की नौकरी करते हैं। बैंगन के नौकर नहीं हैं जो हमेशा इसी की बड़ाई करें।

—*—

२२४—ऊँट किस करवट बैठे

एक गाँव में एक कुँजड़ा और एक कुम्हार रहता था। दोनों ही रडुए थे। अकेले ही सब काम करते थे और मौज में जिन्दगी बिताते थे। बाजार से सामान खरीद लाते थे और गांव में आकर बेच देते थे। एक दिन जब वे बाजार सामान खरीदने गये तो दोनों ने एक ही ऊँट सामान लादने के लिए किराये पर कर लिया। कुंजड़े ने एक ओर अपनी सब्जी लाद दी और कुम्हार ने अपने बर्तन। रास्ते में कुम्हार ने कुंजड़े से कहा कि तुम जाने कैसे अपनी जिन्दगी बिताते हो। इस सब्जी में आधी तो धूप के कारण मुरझा जायगी। आधी को तुम बेचोगे। मुश्किल से ही कुछ बचता होगा। देखो मेरा काम कितना अच्छा है। इसमें न तो कुछ सूखेगा ही और न कुछ मुरझायेगा ही। कुंजड़े ने कहा कि हमें तो सूखी रोटी ही अच्छी लगती है। आप अपनी मिठाई अपने पास ही रखिये। कुम्हार से अब झगड़ा खड़ा हुआ और कहा कि हलुआ तुम कहाँ से खा सकते हो? काम न मेहनत का करोगे तो क्या भगवान तुम्हें हराम में ही देगा। कुंजड़ा भी बिगड़ बोला अभी कोई बात नहीं है। देखें ऊंट किस करवट बैठता है। कुम्हार ने पूछा कि क्या कहा? कुँजड़े ने उत्तर दिया कि गाँव में चलकर बतलायेंगे। गांव में जब ऊंट उतरा तो जिधर बरतन रखे हुए थे उस करवट जाकर बैठा सारे बरतन फूट गये।

(थोड़ी सी प्रभुता को दूर से देख कर नहीं अकड़ जाना चाहिये बल्कि अन्त तक शांति पूर्वक फल को देखना चाहिये न जाने ऊंट कौन सी करवट बैठे।)

———

२२५—अकल का फल

एक बन में एक हाथी रहता था। कुछ गीदड़ों ने उसके मांस को देखा तो उनके मुंह में पानी भर आया और सोचने लगे कि यह हाथी कैसे खाने को मिले। एक बुडूढे गीदड़ ने कहा कि मैंने इसकी योजना बनाली है। तुम सब मुझे इसी बन के तालाब के पास मिलना गीदड़ हाथी के पास पहुँचा तथा बड़ी विनय से निवेदन किया कि महाराज हम एक राजा बिन अनाथ बने हुये हैं। हम सभी ने यह विचार किया है कि आपको राजा बनाया जाय। आप जैसा बलशाली सुडौल शरीर वाला हमें कौन राजा मिल सकता है। हाथी बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला जैसी तुम्हारी मर्जी। गीदड़ बोला महाराज, कल ही आपका राज्याभिषेक होगा। दूसरे दिन गीदड़ हाथी को अपने साथ तालाब की ओर ले जाने लगा। हाथी ने जब पूछा कि यह सभी यहाँ क्यों इकट्ठे हैं। गीदड़ ने उत्तर दिया, महाराज यह सभी आपके स्वागत के लिये आये हैं अब आप केवल तालाब में स्नान करके आइये तब आपका राज्य तिलक होगा। हाथी जैसे तालाब में स्नान करने गया कीचड़ में उसके पांव जम गये तथा गीदड़ों ने हाथी को खा लिया।

(जो बुद्धि से काम लेता है उसके लिये कठिन कार्य भी सरल हो जाते है।)

२२६—अपरीक्ष्यं न कर्त्तव्यं कर्त्तव्यं सुपरीक्षित

एक ब्राह्मण ने अपने यहाँ एक नेवला पाल रक्खा था उनकी स्त्री उस नेवले को बच्चे की तरह प्यार करती थी। एक दिन जब ब्राह्मणी जल लेने को गई तो बच्चों की देख भाल के लिये अपने पति ब्राह्मण से कह गई। ब्राह्मण को एक आदमी बुलाने आ गया था। इस कारण से वह उसके साथ चला गया। बच्चा अकेला सो रहा था इतने

में ही एक सांप बच्चे के पास आया। नेवले ने सांप के टुकड़े टुकड़े कर दिये। ब्राह्मणी जब कुये से जल भर कर वापिस आई तो दरवाजे पर नेवले को देखा। उसके शरीर पर खून के दाग देखकर उसने समझा कि नेवले ने मेरे बच्चे को मार दिया है। अतः उसने जल का भरा हुआ घड़ा नेवले के ऊपर डाल दिया और वह नेवला मर गया। जब वह अन्दर गई तो सांप को, बच्चे के पास मरा हुआ देखकर ब्राह्मणी को बड़ा पश्चाताप हुआ।

—(०)—

२२७–चोर के साथ झूँठा भी था

एक दिन एक लालाजी के घर में चोर घुस गये। लालाजी ने चौकीदारी पर एक नौकर रख लिया था। वह नौकर बहुत ही बुद्धू था। रात्रि को जब नौकर ने खटर पटर की आवाज सुनी तो पूछा कि कौन है। चोरों ने कहा कि कोई नहीं। सुबह जब सेठजी ने देखा कि चोरी होगई तो सेठजी ने कहा कि तुम रात्रि को क्या करते रहे? यहाँ चोरी होगई। तुमने खटर पटर भी नहीं सुनी। नौकर ने कहा लालाजी, मैंने तो आवाज सुनकर पूछा भी था कि कौन है परन्तु उसने कहा कि कोई नहीं। वह खाली चोर ही नहीं था झूठा भी था।

—+—

२२८–लोभी शृगाल

अति लोभो न कर्तव्यं लोभं नैव परित्यजेत

एक बहेलिया आखेट के लिये बन में गया। उसने हिरन को मार कर कन्धे पर रख लिया। आगे जैसे ही वह बढ़ा तो उसे एक सूअर दिखलाई पड़ा। सूअर को मारने के लिये उसने बाण मारा परन्तु वह सूअर बाण से न मर सका। उसने बहेलिया पर आक्रमण किया और बहेलिया [illegible] को खा लिया। फलतः बहेलिया गिर पड़ा। घायल होने के कारण सूअर भी वहीं गिर पड़ा। दोनों छटपटाने लगे। इतने में एक सांप रेंगता हुआ उनके पास निकल

आया तथा दोनों के झटपटाने के कारण कुचल कर मर गया। कुछ समय पश्चात् एक शृगाल वहां से गुजर रहा था तो उसने देखा कि आज तो भगवान ने मुझे बहुत भोजन दे दिया है बहुत दिनों तक इसे खाऊंगा। वह बड़ा लोभी था उसने विचार किया कि आज तो धनुष की रस्सी जो कि तांत की बनी हुई है उसे खालूं। ज्योंही शृगाल ने धनुष की रस्सी खाई वैसे ही धनुष उछल कर उसके तालुए में लगा और शृगाल की जान निकल गई।

२२९—सोहबत का असर

एक गड़रिये ने एक सिंह के बच्चे को जब वह बहुत छोटा था पकड़ लिया। वह सिंह का बच्चा भेड़ों के साथ ही रहा करता था। अब उसकी प्रवृत्त भेड़ों जैसी हो गई। एक दिन जंगल में भेढ़ों ने सिंह की दहाड़ सुनी। सब भेड़ें भागने लगीं सिंह का बच्चा जो कि अब काफी बड़ा हो चुका था वह भी भागने लगा। रास्ते में सिंह का बच्चा एक नदी में पानी पीने लगा तो उसे अपनी परछाई जल में दिखलाई पड़ी। इतनी ही देर में वहाँ सिंह भी पानी पीने आ गया जब उसकी निगाह उस पर पड़ी तो देखाकि उसकी शक्ल सिंह से बिलकुल मिलती है। वह समझ गया कि मैं भी सिंह हूँ अब वह अपनी पीठ पर गड़-रिये की लाठी नहीं खाता था अब सत्य का ज्ञान होने से बन का राजा बन कर घूमता था।

२३०—भक्तराज

एक बार भगवान से नारद ने पूछा कि महाराज, दुनियाँ में भक्तराज कौन है। भगवान ने कहा कि नारदजी हम आपको कल दिखला देंगे। नारदजी सोच रहे थे कि भगवान मुझे ही भक्तराज बतला देंगे क्योंकि मैं सारे जीवन भर भगवान की सेवा करता रहा

हूँ। परन्तु ऐसा न हुआ। नारदजी भक्तराज को देखने के लिए उतावले हो बैठे। सोचने लगे कि उसमें क्या विशेषता है जो मुझमें नहीं है भगवान के पास प्रातःकाल ही नारद आये और भगवान से कहा कि चलो मुझे भक्तराज दिखलादो। भगवान नारदजी को साथ लेकर एक किसान के घर के पास से गुजरे। नारदजी ने देखा कि किसान हल उठा रहा है तथा हल उठाते समय उसने एक बार कहा कि हरे राम। भगवान उस किसान के पीछे पीछे चल दिए। उसने दिन भर बड़ी मेहनत से काम किया तथा शाम को जब वह घर आया तो उसने हरे राम कहकर वह हल रख दिया। भगवान ने कहा कि नारदजी यही मेरा भक्तराज है। नारदजी ने कहा महाराज इसने तो दिन में केवल २ बार ही आपका नाम लिया है। भगवान ने कहा नारदजी इसका उत्तर मैं आपको पीछे दूंगा। आप इस तेल के भरे हुए कटोरे को ले जाइये और नगर की परिक्रमा लगा आइये। ध्यान रहे कि तेल न फैले बेचारे नारद जी, बहुत देर में लौटकर आये। भगवान ने पूछा कि नारद जी, आपने कितनी बार मेरा नाम लिया। नारद जी ने कहा— महाराज, मैं तो तेल के कटोरे को सभालने में लगा हुआ था। आपका नाम कैसे लेता। भगवान ने कहा कि अब आप उस किसान को देखिये जिसके पास पूरी गृहस्थी का बोझा है फिर भी मेरा बार बार नाम लेता है। आपके पास केवल तेल के सभालने का बोझा आगया तभी आप मुझे भूल गये। वह गृहस्थी के बोझा होने पर भी मुझे बार बार याद करता है। सोचकर आप ही बतलाइए कि वह भक्तराज है या आप।

२३१—ईश्वर देख रहा था

एक महात्मा जी के पास पांच व्यक्ति धर्म शिक्षा प्राप्त करने के लिए आए। महात्माजी ने कहा कि पहले तुम मेरा एक काम कर दो तब मैं तुम्हें अपना शिष्य बनाऊंगा। उन आदमियों ने कहा कि

महाराज क्या काम है ? महात्मा जी ने सभी को एक एक मिट्टी का खिलौना दिया और कहा कि इसे ऐसे स्थान पर फोड़कर ले आओ जहां पर कोई नहीं हो। सभी शीघ्र ही फोडकर ले आये ! परन्तु एक आदमी कई दिन बाद वापिस आया तथा बोला कि महाराज मुझे कोई भी स्थान ऐसा न मिला जहां कोई न हो। ईश्वर सब जगह है। ईश्वर देख रहा था। महात्मा जी ने कहा कि यही मेरा शिष्य हो सकता है। आप चारों नहीं हो सकते यह कह कर उन सभी को विदा कर दिया।

—❀—

२३२—दृढ़ प्रतिज्ञा

एक बार महाराज विक्रमादित्य शिकार खेलने गये। उन्होंने रास्ते में एक ब्राह्मण को घोर तपस्या करते देखा। कुछ दिनों बाद महाराज जब फिर शिकार खेलने गये तो वह ब्राह्मण उन्हें इसी प्रकार मिला राजा ने पूछा कि ब्राह्मण देवता यह आप क्या कर रहे हैं। ब्राह्मण देवता ने कहा कि मैं भगवान सूर्य को प्रसन्न करने के लिये ग्यारह बरस से तपस्या कर रहा हूँ परन्तु भगवान मुझ पर प्रसन्न नहीं होते हैं। विक्रमादित्य ने कहा कि अच्छा मुझे हवन सामिग्री दो मैं भगवान की पूजा करता हूँ। महाराज विक्रमादित्य ने यह दृढ़ प्रतिज्ञा करके कि एक बार आहुति देने पर भगवान सूर्य ने दर्शन नहीं दिये तो अपने सर की बलि दे दूंगा एक आहुति चढ़ाई। भगवान सूर्य शीघ्र ही सामने आगये और राजा से कहा कि राजा क्या माँगते हो ? राजा ने उत्तर दिया महाराज सिर्फ आपके दर्शन ही करने थे। ब्राह्मण ने सूर्यदेव को चले जाने के पश्चात् पूछा कि भाई तुमने भगवान को कैसे बुला लिया। राजा ने उत्तर दिया कि शुद्ध सच्चे हृदय से दृढ़ प्रतिज्ञा करने से भगवान को दर्शन देनें ही पड़ते हैं। वैसे हजारों वर्ष हवन यज्ञ करने से कुछ नहीं होता है।

२३३–जिसकी चोंच उसको चुगा

एक राजा जो बहुत घमण्डी था कहा करता था कि राजा ही प्रभु वह सबको भोजन देता है। एक पंडित जी भगवान के परम भक्त थे कहने लगे कि भगवान ही सबको भोजन देता है। राजा ने कहा अच्छा देख लीजिये। राजा ने एक डिबियाँ मंगाकर उसमें एक चींटी को वन्द कर दिया और कहा कि देखें इस चींटी को खाना कहाँ से मिलता है दूसरे दिन जब राजा ने चींटी को डिबिया में से निकाला तो उसके पास एक चावल का दाना रखा हुआ था राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया फिर उसे ध्यान आया कि मैं तिलक लगाये हुए था उसी का चावल इसमें बन्द करते समय गिर पड़ा है। सत्य है कि ईश्वर सभी को देता है।

२३४–जो कुछ होगा देखा जायगा

अनागत विधाता च प्रत्युत्पन्न मतिस्तथा
द्वावेतौ सुख मेधेते पद्भिवष्यो विनस्यति

एक तालाबमें अनागत विधाता (अर्थात् अपत्ति के बिना आये ही उसके लिये पहिले से काम तैयार रखने वाला) प्रत्युत्पन्न मति (हाल ही हाल सोचकर ठीक काम करने वाला) तथा यद् भविष्य (जैसा कुछ होगा भुगत लिया जायगा। इन नामों की तीन मछलियां रहती थीं। एक दिन शाम को कुछ मछुए उस तालाब को देखकर बोले कि इस तालाब में बड़ी अच्छी मछलियाँ हैं। कल इसी में से मछली पकड़ ले जायेंगे। इस बात को सुनकर अनागत विधाता ने कहा कि भाइयो, हमें यहाँ से दूसरे तालाब में चला जाना चाहिये। इस बात को सुनकर और मछलियों ने कहा कि पुरखों के तालाब को केवल उनकी बात करने से ही छोड़देना उचित नहीं है। प्रातःकाल से पूर्व ही अनागत विधाता तो एक दूसरे तालाब में चला गया। सुबह जब

मछुओं ने जाल डाला तो यह दोनों मछियाँ जाल में आगईं। प्रत्युत्पन्न माता को जब जाल में से निकाला तो इसने सांस बन्द करली मछुओं ने उसे मरा हुआ समझकर फेंक दिया और इस प्रकार से उसने अपनी जान बचाली। यदि भविष्य को मछुए घर ले गये और उसका जो कुछ होगा सो अच्छी प्रकार से हो गया।

—×—

२३५—अपना अपना अनुभव

हाथी के देखने की इच्छा से चार अन्धे अपने घर से चले। अन्धों ने हाथी के पास पहुँच कर उसे देखना प्रारम्भ किया एक ने उसका पांव देखा तो वह कहने लगा कि हाथी लट्ठा जैसा होता है। दूसरे ने उसका कान देखा तो वह कहने लगा कि हाथी सूप जैसा होता है तीसरे ने उसका पेट देखा तो वह कहने लगा कि हाथी घड़ा जैसा होता है। चौथे ने उसकी सूँड़ देखी तो वह कहने लगा कि हाथी लट्ठ जैसा होता है। चारों में विवाद चल रहा था। इतनी देर में ही वहां एक सूझता आ गया। वह बोला कि भाइयो, आप सभी लोग ठीक कर रहे हैं। हाथी के पांव खम्भे जैसे, कान सूप जैसे, पेट घड़ा जैसा तथा सूंड लटठ जैसी होती है। यह सभी बातें जिसमें होती हैं वही हाथी होता है।

अन्धों की भांति ही सांसारिक आदमी ईश्वर के विषय में भिन्न भिन्न कल्पना करते हैं। परन्तु अन्त तक उन्हें उन्हीं अन्धों की तरह ईश्वर के विषय में ठीक-ठीक ज्ञान नहीं हो पाता।

—०—

२३६—विद्या संवर्धन का ढंग

भोज बड़ा विद्या प्रेमी राजा था। चार अफीमचियों के पास जब अफीम खाने को पैसा नहीं रहा तो उन्होंने सोचा कि राजा भोज को चलकर कविता सुनाई जाय। वह प्रत्येक कविता बनाने वाले को पुरस्कार देता है अतः वह राजा भोज के यहाँ जाने की तैयारी करने

लगे। रास्ते में एक भैंस रंभा रही थी। पहिला बोला यार मेरी तो कविता बन गई। सुनो, और कहने लगा—काल भैंस रंभाय रही है। कुछ ही देर में एक इक्का वाला जा रहा था। दूसरा बोला यार, मेरी भी कविता बन गई—बुड्ढे ने रथ दियो है चलाय। तीसरे ने एक चिड़िया को उड़ते देखकर कहा कि यार मेरी भी कविता बन गई—या चिड़िया के हरे हरे पंख। चौथे ने मन्दिर से शंख की आवाज सुनकर बताया कि राजा भोज है डपोर शंख। जब राजा के यहाँ गये तो एक कवि ने जो कि राजा के यहाँ कविता सुनाने आया था इन चारों से पूछा कि भाइयो तुम यहाँ क्यों आये हो। यह चारों बोले कि हम कवि हैं। राजा को कविता सुनाने आये हैं। कवि ने कहा कि हमें भी कविता सुनाओ। सभी ने अपनी २ कविता सुनाई। कवि समझ गया कि यह बेवकूफ है परन्तु उसे आखीर वाले के शब्द कुछ बुरे मालूम हुए। उसने सोचा कि कहीं राजा नाराज होकर इसे कैद न कर ले अब उसने आखीर वाले से कहा कि तुम्हारी कविता में एक कमी है। तुम अपनी कविता को इस तरह बोला करो कि राजा भोज हैं पूर्ण मयंक। अब उन चारों ने भोज को कविता सुनाई तो राजा ने तीनों को १८० सौ रुपये दीये। परन्तु चौथे की बात राजा समझ गया कि यह मूर्ख ऐसे शब्द नहीं ला सकता। अतएव उसने कहा कि तुम्हारी कविता गलत है तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा। चौथा बोला महाराज बाहर एक कवि बैठे थे उन्होंने गलत करवा दी मैं तो बनाकर लाया था कि राजा भोज हैं डपोर शंख। राजा ने प्रसन्न होकर उसे भी इनाम दे दिया।

वास्तव में राज्य की ओर से साहित्य की सेवा करने वालों को जब पुरस्कार मिलते हैं तभी उन्नति होती है।

२३७—भाग्य का लिखा

यद्धात्रा निज भाल पट्ट लिखितुं प्रोज्झितुं कः समर्थः।

एक पंडित जी ने राजा के यहाँ कथा बाँची। राजा ने कथा की समाधि पर पण्डित जी को एक रुपया चढ़ा दिया। बेचारे पंडित जी

को एक महीने में एक रुपया मिला। पचास रुपये का भोजन सामान उधार लेकर खा गये। अब तो वह बड़ी चिन्ता में पड़ गए। रात्रि को जब राजा और रानी बात कर रहे थे तो रानी ने राजा से पूछा कि आपने पण्डित जी को क्या भेंट दी? राजा ने कहा कि एक रुपया। रानी ने कहा कि एक महीने में एक रुपया वह बेचारा क्या खायेगा। अतः सुबह राजा ने १०० मुहरें एक तरबूज में भरकर पंडितजी के यहाँ भेज दी। पंडितजी की स्त्री ने कहा कि इस तरह तरबूज में क्या होगा जाकर इसे बेच आओ और बनिये के पैसे जो उधार के हैं चुका दो। पंडित जी ने वह तरबूज उसी नौकर को राजा के यहाँ से लेकर आया था चार आने में दे दिया। अभी अधिक होने के कारण बेचारे पंडितजी ने भिक्षा मांगना प्रारम्भ कर दिया। एक दिन बाजार में राजा ने पंडितजी को पहिचान कर पूछा कि महाज उस दिन का तरबूज मीठा था न। पंडित जी सदैव सत्य बोलते थे। वह बोले कि महाराज वह तो हमने चार आने में आपके नौकर को बेच दिया था। राजा समझ गया कि वह रुपये इसके भाग्य में नहीं थे। और इसकी तकदीर में भीख मांगना अभी थोड़े दिनों को लिखा था इसके बाद राजा ने उसे काफी धन दे दिया।

२३८—मौत

एक लकड़हारा जो जीवन से बहुत दुःखी हो चुका था कहनेलगा कि हे ईश्वर मुझे मौत भी नहीं आती है। इतना कहते ही मौत उस लकड़हारे के सामने उपस्थित हो गई। उस लकड़हारे ने पूछा कि आप कौन हैं? मौत ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारी मौत हूँ। बेचारा बहुत घबड़ाने लगा। मौत ने कहा कि तुमने मुझे याद किया था। बतलाओ क्या काम है? लकड़हारा बोला कि मुझे यह लकड़ी का बोझा उठवादो। मुझे सहारे की आवश्यकता थी।

२३६–हरि इच्छा बलीयसी

होइहैं वही जो राम रच राखा।

एक राजा के राज्य पर शत्रुओं ने चढ़ाई कर दी। फलतः वह राजा हार गया। उस राजा की रानी अपने पुत्र को साथ में लेकर जिसके छः उङ्गलियां थीं पास के राज्य के मन्त्री के यहां चली गई जो उनका बड़ा विश्वास पात्र था। कुछ दिनों पश्चात् रानी का देहान्त हो गया। एक दिन एक ज्योतिषी मन्त्री के यहां आये। मन्त्री ने पूछा कि महाराज मेरी इस कन्या का विवाह कैसी जगह होगा। ज्योतिषी जी ने उस रानी के लड़के को देखकर कहा कि इस लड़के के साथ होगा। मन्त्री ने उसे अनाथ समझ उसे अपनी लड़की देना अनुचित समझा। तथा जल्लादों के साथ जङ्गल में भेज दिया। जल्लादों ने लड़के से कहा कि अब तुम अपने प्राण देने को तैयार हो जाओ। लड़के ने ईश्वर से प्रार्थना की। भगवान की कृपा से जल्लादों को दया आ गई और वह उसकी छठी अंगुली को काटकर ले गये। वह लड़का वहां जंगल में एक ऋषि के पास अध्ययन करने लगा और बड़ा विद्वान हो गया। एक राजा उसी बन में शिकार खेलने आया और इस लड़के की विद्वत्ता से प्रसन्न होकर उसे अपने साथ ले गया बुढ़ापे के कारण तथा कोई संतान न होने के कारण राजा ने उसे अपने राज्य का भार सोंपकर राजा बनाना चाहा। वह राज्य उस राजाको जिसके कि मन्त्री ने उस लड़के को मारने का षड़यन्त्र रचा था वार्षिक कर देता था। राज्याभिषेक की तैयारियों के कारण कर ठीक समय पर न पहुँच सका फलतः वह मन्त्री चढ़ाई करके आ गया। राजा ने उसे कर न भेजने का कारण बतलाया तथा लड़के से परिचय करा दिया। मन्त्री उसे पहिचान गया। मन्त्री ने कहा कि बिना राजा की आज्ञा के आप किसी को अपना राज्य नहीं दे सकते परन्तु मैं यहां से अपने पुत्र को पत्र लिखे देता हूँ वह इन्हीं को राजा बनने की आज्ञा राजा से दिलवा देगा। राजा को मन्त्री की बात पर विश्वास होगया तथा

उसने लड़के को आज्ञा लेने के लिये भेज दिया! मन्त्री ने एक पत्र अपने लड़के के नाम लिख, और उसमें यह लिख दिया कि उसे विष दे दिया जाय। जब वह लड़का वहाँ पहुँचा तो मन्त्री के बगीचे में जाकर उसने आराम किया। मन्त्री की पुत्री उसे देख कर विमोहित हो गई। यकायक उसकी दृष्टि जेब में रखे हुये पत्र पर पड़ी। पत्र को पढ़ कर उसने विष की जगह विवाह लिख दिया। जब पत्र उसके भाई ने पढ़ा तो उसकी शादी कर दी। मन्त्री को यह बात मालूम पड़ी तो बड़े चक्कर में पड़ गया। परन्तु उसने फिर भी लड़के को मारने का षड़यन्त्र रचा। उसने दुर्गा देवी के मन्दिर के पुजारी को आज्ञा भेजी कि कल जो मन्दिर में सर्व प्रथम प्रवेश करे उसकी उसी समय देवी की बलि दे दी जाय वह चाहे कोई भी हो। तथा उसने दामाद से कह दिया कि कल आप देवी के प्रातःकाल दर्शन करने अवश्य आना क्योंकि यह हमारे यहाँ रिवाज है। परन्तु सुबह ही वहाँ के राजा का एक नौकर आकर उसे राजा के पास बुला कर ले गया। इधर मन्त्री का बेटा प्रतिदिन सुबह दुर्गा देवी के दर्शनाथ जाया करता था। अतः पुजारियों ने उसका बध कर दिया राजा ने विद्वान समझ कर उस लड़के को ही अपना राज्य दे दिया। इस प्रकार से वह दो राज्यों का मालिक तथा उसीं कन्याका पति होगया। सत्य हरि इच्छा बलीयसी।

—×—

२४०—स्वार्थ और संगठन

चार कुत्तों ने विचार किया कि हम अब अपना संगठन करेंगे। बिना संगठन के हमें चाहे जो मार देता है। जो हमारा तनिक भी अपमान करेगा हम उस पर अपने कुत्तों की फौज की सहायता से चढ़ाई कर देंगे। हम आपस में एक दूसरे का साथ और सहयोग देंगे एक दूसरे से कभी लड़ेंगे झगड़ेंगे नहीं। इन बातों को पेड़ पर बैठा एक कौवा सुनरहा था। उसने एक गोश्त का टुकड़ा नीचे डाल दिया।

उस टुकड़े के पीछे चारों कुत्ते लड़ने लगे। सत्य है, जहाँ स्वार्थ होता है वहाँ संगठन नहीं हो सकता

(स्वार्थ के रहते हुए संगठन नहीं हो सकता)

२४१—तल्लीनता

मनुष्य जिसको प्राप्त करना चाहता है उसे प्राप्त करने के लिए उसमें तल्लीन हो जाना पड़ता है। परन्तु तल्लीनता भी तीन प्रकार की होती है। प्रथम जैसे पत्थर को पानी में डालने से पत्थर पानी में चारों ओर से डूब जाता है, परन्तु बाहर निकलते ही पानी का पता भी नहीं रहता। दूसरा कपड़े को पानी में पटक देने से कपड़ा भीग जाता है और निकालने पर पानी का घन्टों असर रहता है। तीसरे नमक को पानी में डालने से नमक और पानी एक ही हो जाता है। पानी में नमक का पता भी नहीं पड़ता। पानी और नमक एक ही वस्तु हो जाता है। यही नियम ईश्वर भक्ति का भी है। पत्थर की भांति क्षणिक कपड़े की भांति अचिर अस्थाई तल्लीनता और भक्ति सर्वथा त्याज्य है। नमक की भांति आत्मा को परमात्मा में आत्मभाव कर देना ही परम भक्ति है। सुना जाता है कि मीराबाई भगवान की पूजा करते करते अपनी पूजा करने लगती थी। वही परम भक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है और वास्तव में यही भक्ति सच्ची है। यहाँ पर योग और भक्ति दोनों मिल जाते हैं। आत्मा परमात्मा में कोई अन्तर नहीं है।

२४२—विद्या प्राप्ति

एक विद्यार्थी जो पढ़ने से बहुत डरता था और विद्वान होना चाहता था विचार करने लगा कि क्या किया जाय। सहसा उसने सरस्वती देवी की आराधना में गंगाजी के किनारे तपस्या आरम्भ

कर दी। एक दिन सरस्वती देवी उसे सच्चा मार्ग बताने के लिये वहां पर आई और नदी में रेती डालने लगी। रेती डालने की आवाज से तथा छींटों से उसकी ध्यान मुद्रा भंग हो गई। विद्यार्थी ने पूछा–कि यह तुम क्या कर रही हो ? सरस्वती देवी ने कहा कि मैं गङ्गाजी का पुल बांधना चाहती हूँ। विद्यार्थी ने कहा कि इस बालू से गंगाजी का पुल नहीं बँध सकता है। सरस्वती देवी ने कहा कि इसी प्रकार इस तपस्या से विद्या नहीं प्राप्त की जा सकती है। तुम विद्यार्थियों की जैसी कठिन परिश्रम की तपस्या करो तभी विद्या प्राप्त होगी। इस प्रकार उसे सत्य ज्ञान हुआ तथा वह संसारका प्रसिद्ध विद्वान बनगया।

२४३—पतिव्रता

एक सदाचारिणी ब्राह्मणी जो बहुत ही स्वरूपवती थी उसका पति साहूकार पर अपना रुपया जमा कर परदेश धन कमाने चला गया। एक दिन स्त्री को रुपये की आवश्यकता पड़ी तो उसने अपनी दासी को रुपया लेने भेजा। साहूकार ने बेईमानी की इच्छा से कह दिया कि अभी मेरी बही राजा के यहां गई है। जब वह आजायगी तब रुपया दे दूंगा। एक दिन जब वह स्त्री गंगा स्नान से लौट रही थी तो सेठजी की उस पर निगाह पड़ी। सेठजी ने उसकी सुन्दरता देखकर कहा कि पण्डितानी जी अगर आपको रुपयों की आवश्यकता हो तो आप मेरे घर से ले जाइए। पंडितानीजी सभी बात समझ गई। उन्होंने सेठ जी से कहा कि आज रात्रि को दस बजे मेरे घर पर आइयेगा। सेठजी अब तो बड़े प्रसन्न हुए। रास्ते में शहर का कोतवाल मिला जो स्त्री को बहुत छेड़ा करता था। ब्राह्मणी ने कोतवाल से कहा कि आज आप मेरे यहाँ ग्यारह बजे आइयेगा, कोतवाल की प्रसन्नता की सीमा न रही। एक दुष्ट मन्त्री भी उसे बहुत कुदृष्टि से देखता था मार्ग में उसे देखकर ब्राह्मणी ने कहा कि आज आप रात्रि को मेरे यहां बारह बजे आइयेगा। ब्राह्मणी ने घर पर तीन बड़े सन्दूक मँगा

लिये तथा हरा नीला और काला तीन रंग रख लिये। सर्व प्रथम जब साहूकार आया तो ब्राह्मणी ने कहा कि पहले आप स्नान कर शुद्ध हो जाइये तब मैं आपकी सेवा में आऊँगी। दासी ने उसे हरे रंग में स्नान कराया। इतनी देर में ही कोतवाल की आवाज सुनाई पड़ी। साहूकार ने ब्राह्मणी से पूछा कि यह कौन है ? ब्राह्मणी ने उत्तर दिया कि यह कोतवाल है। साहूकार ने कहा कि अब मुझे कहीं छिपाओ। ब्राह्मणी ने उसे सन्दूक में बन्द कर दिया। तथा कोतवाल से भी स्नान कर शुद्ध होने को कहा। दासी ने उसे नीला रंग दिया। इसी बीच मन्त्री की आबाज सुनाई पड़ी कोतवाल आबाज पहचान कर बोला कि मुझे कहीं छिपादो। ब्राह्मणी ने उसे भी एक सन्दूक में बन्दकर दिया। मन्त्री से ब्राह्मणी ने स्नान करने के लिये कहा। दासी ने उसे हरे रंग से स्नान करा दिये। इतने में वह ब्राह्मणी बोली कि शायद मेरी बड़ी बहिन आज दोपहर को ही आई है वह ऊपर आ रही है। कृपया आप इस सन्दूक में छिप जाइये। मन्त्री ने ऐसा ही किया। ब्राह्मणी ने उसे बन्द कर दिया तथा तीनों में ताले डाल दिये। दूसरे दिन प्रातःकाल राजा के यहाँ शिकायत कर दी कि मेरे यहाँ चोरी होगई है तथा चोर तीन सन्दूक भी छोड़ गये हैं। वह तीनों सन्दूक मेरे गबाह भी हैं कि मैंने अमुक सेठ के पास रुपया रखा है। राजा बड़े आश्चर्य में पड़ गया। उसने तीनों सन्दूकों को मँगाया। स्त्री ने साहूकार वाले सन्दूक से पूछा कि काले भूत बता मेरे रुपये साहूकार के पास हैं। इसमें से आवाज आई हाँ। कोतवाल वाले बक्स से पूछा कि नीले भूत मेरे रुपये साहूकार के पास हैं ? उसने कहा हाँ। मन्त्री वाले सन्दूक से पूछा कि, क्यों रे हरे भूत, मेरे रुपये साहूकार के पास हैं ? उसमें से आवाज आई, हैं। तब राजा ने सन्दूकों को खुलबाया और साहूकार मन्त्री व कोतवाल को देख कर सारा किस्सा पूछा स्त्री ने पूरा वृत्तान्त कह डाला। फलतः उन्हें उचित दण्ड मिला।

(यदि स्त्री चाहे तो कैसी भी भीषण परिस्थिति में सदाचारिणी रह सकती है।)

२४४—रोक

एक लालाजी रात्रि को सो रहे थे यकायक एक चूहा उनके ऊपर से निकल गया। लालाजी बड़े जोर से चीख मार कर रोने लगे मोहल्ले वाले लोग सभी इकट्ठे हो गये। लालाजी से रोने का कारण पूछा। लालाजी ने कहा एक चूहा मेरी छाती से निकल गया। लोगों ने कहा कि कोई सांप तो नहीं निकला है। लालाजी ने कहा कि चूहे के कारण नहीं रोता हूँ इस रास्ते के लिये रोता हूँ आज चूहा निकला है कल साँप निकल जायगा।

(सत्य है बुरे काम पहिली बार ही रोक देने चाहिये)

—०—

२४५—अनुभव

एक ज्योतिषी जी काशी में ज्योतिष पढ़ कर आये थे। वह एक सेठ के यहां गये। सेठ ने अपने हाथ में अँगूठी लेकर कहा कि बत-लाओ मेरे हाथ में क्या है ? ज्योतिषी ने गणित से हिसाब लगा कर कहा कि तुम्हारे हाथ में गोल वस्तु है और धातु की है और उसमें एक छेद भी है। ज्योतिषी सोचने लगे कि मेरी वस्तु क्या हो सकती है। ध्यान आया कि चक्की में यह सभी बातें होती हैं ज्योतिषी जी ने कहा कि चक्की का पाट सेठजी, आपकी मुट्ठी में है। सेठ ने कहा कि महाराज आप पढ़े तो हैं पर अनुभव नहीं है। चक्की का पाट मुट्ठी में नहीं आ सकता है।

———

२४६—विधवा का ईश्वर है

विधवा होने पर स्त्रियाँ सोने की चूड़ियां पहिन लेती हैं। एक बार झांसी वाली रानी लक्ष्मीबाई ने एक पण्डितजी को कथा में यह कहते सुना कि बिधवा स्त्रियां तो बड़ी चण्ट होती हैं पति के जीते

जी तो चार पैसे की कांच की चूड़ी पहिनती हैं और मरने के बाद सोने की। महारानी ने कहा कि पण्डित जी अभी आप समझे नहीं हैं कि इसका क्या मतलब है? इसका मतलब होता है कि अभी तक तो उनका सम्बन्ध कांच की भांति टूट कर नष्ट होने वाले पति से था अब इनका सम्बन्ध न टूटने वाले सोने की तरह प्रगतिभावन ईश्वर से है।

(वास्तव में ईश्वर भक्ति ही विधवाओं का परम सहारा है। हमारे भारतवर्ष में अनेकों देवियों ने सात्विकता पूर्वक अपना जीवन बिताकर आगे की संतान के सामने आदर्श उपस्थित कर दिया है।)

२४७—भंग

नहि मत्तो त्रिजा नाति वस्तुस्वं बिस्मृतं महत्।

एक चौबेजी भांग छान अपने तीनों बच्चों को साथ लेकर रामलीला देखने गये। उन्होंने एक बच्चे को एक हाथ से, दूसरे को दूसरे से पकड़ लिया तथा तीसरे बच्चे को कन्धे पर बिठा लिया। जब मेले से लौटे तो चौबेजी को दो ही बच्चे दिखलाई दिये। चौबे जी ने कोतवाली में रिपोर्ट कर दी कि मेरा बच्चा खो गया है। कोतवाल ने कहा कि अच्छा चौबेजी आप अन्दर बैठ जाइये। मैं अभी फोन से पूछ लेता हूँ कि मेले में कोई लड़का तो नहीं मिला है जैसे वह भीतर-घुसने लगे लड़के का सर दरवाजे से टकराया और वह रोने लगा। चौबेजी बोले अरे तू यहां बैठा है। सभी लोग चौबेजी की बात पर हँसने लगे। चौबेजी बोले सरकार भांग चढ़ रही थी।

२४८—राक्षस

एक पंडितजी कथा बांचा करते थे। एक परम भक्त भी रामायण की कथा सुनने आया करते थे और कथा समाप्त होने पर पण्डित जी

की प्रशंसा के पुल बांधा करते थे। सदैव यही कहते थे कि आज तो कथा में बड़ा रस आया। बड़े योग्य पण्डित हैं। रामायण की कथा समाप्त हुई तो उस श्रोता ने पूछा कि महाराज पूरी रामायण तो समझ में आपकी कथा सुनने से आगई। परन्तु एक बात समझ में नहीं आई कि राम राक्षस था कि रावण राक्षस था। पंडित जी ने कहा कि राक्षस तो पंडितजी हैं जो आप जैसे विद्वानों को कथा सुनाते हैं।

२४६—पाप का फल

एक मियाँजी रोजः रहा करते थे। वे दिन में पानी नहीं पी सकते थे क्योंकि सभी मुसलमान जो पास में रहते थे उन्हें काफिर समझने लगते। उन्होंने एक उपाय निकाला। वे प्रतिदिन तालाब में स्नान करने चले जाया करते थे तथा डुबकी लगाते समय पानी पी जाया करते थे। वे सोचने लगे कि यह बड़ा अच्छा हुआ। खुदा भी नहीं देख पाता है और मैं पानी पी लेता हूं। एक दिन पानी के साथ में मछली गले में जाकर अटक गई बेचारे मियाँजी हिचकियाँ लेते २ अपने साथियों के पास आये। साथियों ने उसे निकालकर बाहर किया और कहने लगे कि ठीक है रोजों के दिनों में तू तालाब पर जाकर मछलियाँ खाया करता है। अगर ऐसा नहीं तो मछली मुँह में कैसे चली गई क्योंकि पानी के मुँह में चले जाने के कारण मुँह तो बन्द रहता है। बेचारे मियाँजी को बड़ी शर्म हुई।

२५०—पतिव्रत की शक्ति

अबला जनों का आत्मबल संसार में था नया।
चाहा उन्होंने तो अधिक क्या, रवि उदय भी रुक गया॥

एक योगी जब भिक्षा माँगने आरहे थे तो रास्ते में एक कौवे ने उनके ऊपर बीट करदी। योगी ने कौवे की ओर देखा योगी की

क्रोधाग्नि से वह कौवा जल कर भस्म हो गया। योगी जब भिक्षा माँगने गये तो एक स्त्री चुल्लू में पानी भर कर एक ओर छींटे मार रही थी। योगी ने कहा कि मुझे भिक्षा दे। स्त्री ने कहा कि महाराज अमुक ग्राम में आग लग गई है मैं उसे बुझा रही हूँ। योगी ने समझा कि यह मेरा मजाक बना रही है। योगी बोले कि तू मेरे प्रभाव को नहीं जानती तू मेरी हंसी करती है। स्त्री ने उत्तर दिया महाराज यह कौवा नहीं है जो भस्म हो जायगा। महात्मा ने पूछा कि यह तुम्हें कैसे पता लग गया ? स्त्री ने कहा कि मैं अपने सदैव पति परमेश्वर की इच्छा का पालन करती हूँ। इसी कारण से यदि आपको पति-व्रताओं की शक्ति देखनी है तो उस गाँव की अग्नि शाँत हो गई, देख आइये।

वास्तव में नारी के लिये पतिव्रत धर्म से ऊंची कोई भी आराधना दुनियाँ में नहीं है।

—०—

२५१—ईश्वर भक्त

फकीर अर्मद के विषय में यह बात प्रसिद्ध थी कि वह नमाज नहीं पढ़ता। औरंगजेब जो अपने आपको बड़ा कट्टर मुसलमान मानता था उसने काबुल की भांति हिन्दुस्तान में भी यह कानून बना दिया कि जो मुसलमान नमाज नहीं पढ़ेगा उसे सजा मिलेगी। फकीर अर्मद के नमाज न पढ़ने की खबर औरंगजेब के कानों तक पहुँच गई। एक दिन औरंगजेब ने फकीर को बुलाया और उसने कहा कि तुम मेरे साथ आज नमाज पढ़ने चलना। बादशाह के हुक्म को मान कर फकीर बादशाह के साथ जुम्मा मसजिद में नमाज पढ़ने के लिये गया। वहाँ जाकर वह बादशाह के ही पास खड़ा हुआ। जैसे ही पेश नमाज (नमाज पढ़ने वाला मुल्लाह) ने अपने मुंह से अल्लाह शब्द उच्चारण किया वैसे ही फकीर अहमद बोला कि तेरा अल्लाह तेरे पाँव के नीचे है। यह कहकर फकीर वहाँ से भग आया। यह बात औरंगजेब को बुरी मालूम पड़ी जैसे ही वह नमाज से वापिस आया

वैसे ही उसने फकीर को बुलाया और इस्लाम का अपमान करने के विरोध में उसे मार डालने की सजा दी। फकीर ने राजा से कहा कि मैंने तो ठीक ही कहा था। अगर इस पर विश्वास न हो तो अपने फकीर को बुलाकर पूछ लो। परन्तु धर्मान्ध राजा ने फकीर की एक न सुनी और उसका सर कटवा दिया। उस निर्दोष आत्मा को अनुचित दंड देने का यह फल हुआ कि औरंगजेब तब से अपनी मौत के दिनों तक दिल्ली में न रह सका।

फकीर अर्मद की मृत्यु के पश्चात् पेश नमाज को एक सपना दिखलाई दिया जिसमें उस एक फरिश्ता (देवदूत) उसके बिछौने के पास खड़ा होकर बड़ी दुख भरी आवाज में यह कहता हुआ दिखलाई दिया कि तुमने सत्य बात को छिपा कर साधु के प्राण क्यों जाने दिये। जिस समय तू अल्लाह का पाक नाम अपने मुंह से निकाल रहा था उस समय तेरे मन में क्या विचार आ रहे थे। तूने उन विचारों को बादशाह के सामने स्पष्ट क्यों नहीं किया तथा जहाँ पर तू खड़ा हुआ था वहाँ की पत्थर की शिला हटा कर तूने क्यों नहीं देखा जिस पाक आदमी की सांस अल्लाह का नाम रटतीं थी जिसके रोम-रोम से अल्लाह शब्द निकलता था उसका तूने इन दुराचारी आदमियों से वध करवाया।

व्याकुल होकर पेश नमाज एक दम उठ पड़ा और जुम्मा मसजिद के उसी पत्थर को जाकर उखाड़ कर देखा तो वहाँ पर उसे सोने की मोहरों से भरा हुआ एक घड़ा दिखलाई दिया। अचानक उसके दिमाग में उस समय जो कुछ सोच रहा था बात आगई। उसे ध्यान आया कि मैं उस समय अपनी लड़की की शादी के बारे में सोच रहा था कि इसके लिये रुपया कहां से आवेगा। वह समझ गया कि इतने महा पुरुष की हत्या मेरे ही कारण हुई है। यह बात उसके हृदय में चुभ गई और वह तभी से फकीर बनकर घर बार छोड़कर चला गया।

(ईश्वर को जोर जोर से चीखने वाले ईश्वर भक्त नहीं होते बल्कि आत्मा से उसका चिन्तन करने वाले ही सच्चे भक्त होते हैं।)

२५२–पुरोहित

महाराणा प्रतापसिंह व उनके छोटे भाई शक्तिसिंह एक दिन शिकार खेलने के लिये जंगल में गये। महाराज ने तथा उनके भाई ने एक शिकार पर निशाना मारा और निशाने के लग जाने के कारण वह शिकार गिर पड़ा। अब दोनों में विवाद होने लगा कि यह मेरे भेद के कारण गिरा है। दूसरा कहता था कि मेरे निशान के कारण से यह गिरा है आपके निशान के कारण नहीं गिरा है। यह विवाद धीरे धीरे इतना उग्ररूप धारण कर गया कि दोनों भाइयों में तलवार नपने की नौवत आगई। महाराणा प्रतापसिंह बोले कि अब मालूम पड़ जायगा। किसके बाण से शिकार हत हुआ है। शक्तिसिंह की धमनियों में भी क्षत्रिय रक्त प्रवाहित हो रहा था उसने भी इसका बीरोचित उत्तर ही दिया। इस गरम वातावरण के कारण दोनों ने तलवारें खींचली और युद्ध आरम्भ हो गया शक्तिसिंह ने अपने बड़े भाई की चरण रज को मस्तक से लगाया तथा प्रत्युत्तर स्वरूप राणा प्रतापसिंह ने उन्हें आशीर्वाद दिया दोनों का करारा युद्ध हो रहा था। सैकड़ों व्यक्ति चहुँओर एकत्रित थे। किसी की हिम्मत उन्हें रोकने की नहीं पड़ती थी। सभी इन क्रोधाग्नि में अपने राजकुल को भस्म होते हुए प्रत्यक्ष देख रहे थे। अचानक पीछे से शान्त हो! शान्त ह ! की आवाज़ सुनाई पड़ी। सभी जन समुदाय पीछे की ओर देखने लगा उनकी दृष्टि मेवाड़ के राजपुरोहित के ऋषि सदृश शरीर पर पड़ी उसने दोनों भाइयों से युद्ध न करने की प्रार्थना की। परन्तु वह दोनों अपने क्रोध के कारण लड़ते ही रहे। पुरोहित ने अन्य कोई चारा न देख कर कहा कि ज्ञात होता कि हमारे देश का दुर्भाग्य आने वाला है हमारा प्रिय देश शत्रु हों का रंग स्थली बनने वाला है। मैं अपने देश के दुर्भाग्य को अपने इन चर्म चक्षुओं से देखने में सर्वथा असमर्थ हूँ, अतः मेरा इस दुर्भाग्य पूर्ण अवसर से पूर्व ही अन्त हो सके यही अच्छा है। इन शब्दों के साथ पुरोहित ने अपने वक्षस्थल

में कटार मार ली और दोनों भाइयों के बीच में उसकी लाश छट-पटाने लगी। दोनों भाई ब्रह्महत्या को देखकर भौचक्के हो गये। दोनों ने युद्ध शान्त कर दिया। अज्ञान का अन्धकार अब उन लोगों के सामने से नष्ट हो गया तथा उनकी आँखें खुल गईं। प्रतापसिंह ने उनका यथावत अन्त्येष्टि सत्कार किया तथा जिस स्थान पर उन पुरोहित महोदय ने अपने प्राणों का त्याग अपने देश, समाज और अपने धर्म की रक्षा के हेतु किया था उस स्थान पर अब भी प्रतापसिंह के द्वारा बनवाया हुआ स्मारक का स्तम्भ पुरोहितों को एक सन्देशा दे रहा है।

(कहावत है कि जो कर पर का हित वही पुरोहित।)

२५३—स्त्री

शरा-महाशर तमोस्ति को क्या
मनोज बाणै व्यथितो न यस्तु
प्राज्ञोस्ति धीर च चभोंस्नि को वा
प्राप्तो न मोह ललना कटाक्षै

संसार में सबसे बड़ा शूरवीर कौन है। जो काम वाणों से पीड़ित नहीं हैं। प्राज्ञ, धीर और समदर्शी कौन है। जिसे स्त्री कटाक्षों का मोक्ष नहीं है।

रामायण के रचियता गोस्वामी तुलसीदासजी अपनी स्त्री पर अत्यन्त प्रेम करते थे एक दिन वह स्त्री पीहर चलीगई। गोस्वामीजी की इच्छा स्त्री से मिलने की हुई। प्रेम वश वह रात्रि के समय ही अपनी स्त्री से मिलने को चल दिये। रास्ता आजकल की तरह सुविधा जनक नहीं था। रास्ते में एक बड़ी वेगशालिनी नदी पड़ती थी। गोस्वामी जी ने रात्रि में उस नदी को तैर कर पार किया और नदी के दूसरी पार पहुँच गये। जब गोस्वामीजी ससुराल पहुँच गये तो दरवाजे को बन्द पाया। गोस्वामीजी ने अब घर में अन्दर जाने की तरकीब सोची। जैसे ही वह मकान के पीछे हिस्से की ओर चले तो

उन्हें एक रस्सी लटकी हुई दृष्टिगत हुई। गोस्वामी जी रस्सी को पकड़ कर चढ़ने लगे और अपनी स्त्री के सोने के स्थान पर आकर प्रकट हुए। स्त्री ने ज्यों ही गोस्वामी जी को देखा तो वह आश्चर्य में पड़ गई और कहने लगी पति देव, इस वर्षा ऋतु की अंधियारी में जब कि चारों ओर बादलों की गड़गड़ाहट और बिजली की कड़कड़ाहट से हृदय कांप उठता है और रास्ते में नदी बड़े वेग से बह रही है आप यहाँ तक किस प्रकार आ पहुँचे है। गोस्वामी जी ने कहा कि हे प्रिये, मैं तुम्हारे ही कारण इस अन्धियारी रात्रि में नदी को पार कर पीछे दीवाल पर पड़ी हुई रस्सी की सहायता से चढ़कर आया हूं। स्त्री रस्सी का नाम सुनकर बड़े अचम्भे में पड़ी और जाकर देखा तो वहाँ एक सर्प लटका हुआ था। स्त्री समझ गई कि "कामातुराणां न भयो न लज्जा" अतः उसने अपने पतिदेव से कहा—महाराज, आपका मेरे प्रति महान प्रेम है जिसके वशीभूत होकर आपने मुझे इस समय दर्शन देकर कृतार्थ किया है। परन्तु हे मेरे देव, जितना प्रेम मुझसे है उतना यदि भगवान से हो तो आपका निश्चित ही उपकार हो।

जितना प्रेम आपका मुझसे, उतना हरि से होय।
चला जाय बैकुण्ठ को, पला न पकड़े कोय॥

इन शब्दों के सुनते ही तुलसीदास जी को ज्ञान हुआ तथा उन्होंने संसार को त्यागकर संसार के लिये अपने ज्ञान की ज्योति से नवीन प्रकाश दिया।

२५४—सच्चा प्रेम

जब आर्य संस्कृत का ही हमारे देश में बोल वाला था और आर्येतर जातियों ने हमारे देश में पैर भी न रखा था। उसी स्वतंत्र भारत के स्वर्णयुग में महात्मा गौतम बुद्ध अपने ज्ञान की गङ्गा सारे देश में बहा रहे थे। वास्तवदत्ता नामक एक युवती जो अत्यन्त

स्वरूपवती थी तथागत के पास उपस्थित हुई और उसने तथागत से अपने गृह को चरण कमलों की रज से कृतार्थ करने के लिये प्रार्थना की। महात्मा गौतम बुद्ध ने भी उसका निमन्त्रण स्वीकार किया और उसके घर की राह ली।

जब महात्मा गौतम बुद्ध बासवदत्ता के घर पहुँचे तो उस रूप यौवनवती वासवदत्ता को अत्यन्त सुन्दर पाया। वह सुन्दर सुन्दर वस्त्र और आभूषण से युक्त थी उसकी उन्नति कुच कलशी वेधते हुये तेरे सरीखी दृष्टिगत होती थी, उसकी कोमलता छुई मुई के वृक्ष को भी प्रतिद्वन्दता में हरा चुकी थी, उसके विशाल नेत्र एक नवीन सन्देह सा सुना रहे थे, ओठ कुछ कहने को तत्पर थे। अचानक एक मृदुल वीणा की झंकार की भांति एक वाक्य सुनाई दिया। अतिथिदेव, यह यौवन इस चरण कमलों में अर्पित है। इसे स्वीकार कर मेरा जीवन सफल बनाइये।

गौतम ऋषि इस सारी माया को देखकर अवाक रह गये। रूप की, यौवन की, प्राणों के कम्पन की और सिहरन की लीला देखने लगे परन्तु महात्मा साधु बोले देवि, क्या कहती हो ? मैं आज इस घर में अतिथि नहीं बनूँगा। इन शब्दों को सुनकर वासवदत्ता अपने अज्ञान पर, दुर्भाग्य पर और नीचता पर रोती रही। गौतम आदि जिन्होंने कि एक मनुष्य का हृदय धरा था बोले—देवि, मैं फिर निश्चित ही आऊंगा जब आपको वास्तव में मेरी आवश्यकता होगी और मेरी तुम बाट जोह रही होगी।

इस आशा में बासवदत्ता का सारा जीवन व्यतीत हो गया। परन्तु तथागत नहीं आये। आज वह निर्धन दीन हीन दुर्बल रोग ग्रस्त अवस्था में पड़ी हुई है। सारे अंग प्रत्यंग सड़ रहे हैं। दुर्गन्ध उसके शरीर से आ रही है आँखें आधी धसी हुई और खुली हुई हैं।

ऐसे अवस्था में वह आधी मूर्छित सी पड़ी हुई है।

महात्मा गौतम बुद्ध अचानक इसी समय उसके घर पर आ

पहुंचे। बासवदत्ता ने पूछा कौन है ? गौतम बुद्ध ने उत्तर दिया—मैं हूँ तथागत। आज मैं तुम्हारे घर. अतिथि बनकर आया हूँ। गौतम बुद्ध ने उसकी सेवा की। सारे शरीर के वस्त्रों को स्वच्छ किया। बासवदत्ता में एक साथ प्राणों का संचार हुआ। तब तथागत ने कहा—देवि आज तुम्हें मेरी वास्तविक आवश्यकता थी अतः मैं आज तुम्हारा अतिथि बना हूँ।

(भारतीयता वास्तविक प्रेम सिखाती है ऐन्द्रिक प्रेम को भारतीयता निकृष्टकोटि का ही सदैव से मानती रही है।)

२५५—स्त्री प्रेम

एक लालाजी ने अपने पुत्र को क्रोध के कारण घर से निकाल दिया। पुत्र के साथ में उसकी स्त्री भी चलने लगी। तब पुत्र ने कहा कि मैं तुम्हें तुम्हारे मातृगृह में पहुँचाये देता हूँ। अभी मेरा क्या पता मुझे कहाँ २ भटकना पड़े। स्त्री ने पति की बात का उत्तर देते हुए कहा कि हे पतिदेव, बिना पति के पत्नी का जीवन व्यर्थ है। मैं बिना आपके किस प्रकार से अपना जीवन व्यतीत करूँगी। पति ने उसके अनुरोध के कारण अपने साथ ही में ले लिया और परदेश की तैयारी करदी।

रास्ते में जब वह दोनों जा रहे थे तो रात्रि होने के कारण जंगल में एक साधू की कुटिया में रुक गये। साधू बहुत सुन्दर और युवक था। स्त्री उस पर आसक्त हो गयी। साधू भी उससे आकर्षित हो गया फलतः जब उन्होंने आपस में वार्तालाप किया तो साधू ने उस साहूकार पुत्र की स्त्री से कहा कि तुम सुबह अपने पति को कुए में ढकेल देना और हम तुम फिर शहर में चलकर सुखमय जीवन व्यतीत करेंगे प्रातःकाल जब साहूकार पुत्र स्नान करने के लिए कूए में से पानी निकाल रहा था तभी उसकी स्त्री ने पति को कूए में धक्का दे दिया। अब साधु और सेठानी का रास्ता खुल गया तथा वे दोनों शहरमें चले

गये। शहर में जाकर उन्होंने नाचने का काम प्रारम्भ कर दिया। सेठानी नाचने में प्रवीण थी तथा सुन्दर थी। इस कारण उसका नृत्य सभी को पसंद आता था यहाँ तक कि वह राजा के यहाँ भी बुलाई जाने लगी। साधू ने उसके साथ में रह कर साज बजाने का काम अपने हाथ में ले लिया था।

इधर उस सेठ का पुत्र जो कुए में पड़ा हुआ था एक बंजारे ने जो वहाँ पानी खींचने के लिए आया था बाहर निकाल दिया। वह भी घूमता हुआ उसी नगर में पहुँच गया जहां वे दोनों रहते थे। सेठ के पुत्र ने राजा के यहां नौकरी करली। एक दिन राजा ने अपने यहां नृत्य करने के लिए उन्हें बुलाया। नृत्य करते समय अचानक सेठ के पुत्र की निगाह अपनी स्त्री पर पड़ी और वह अपनी स्त्री को पहिचान गया। कुछ समय पश्चात् जब स्त्री की निगाह अपने पति पर पड़ी तो वह भी उसे पहिचान गयी। जब नृत्य समाप्त हुआ तो राजा ने प्रसन्न होकर उस नर्तकी सेठानी से इनाम मांगने के लिये कहा। उसने कहा कि नौकर मेरा चोर है। अतः आप इसे फांसी दिलवा दीजिये। राजा ने जब उसे बुलाया और चोर के जुर्म में फांसी की आज्ञा दी तो सेठ ने सारा किस्सा राजा को सुनाया। तथा बंजारे को बुलाकर उस बात की पुष्टि भी करवा दी। राजा सत्य को समझ गया व उन दोनों को फांसी देदी।

२५६—स्वाभिमान

रहिमन रहिल की भली जो दे चित्त लाय।
परसत मन मैलो करे सो मैदा हूँ जरि जाय॥

पहिले समय के राजा विद्वानों का सम्मान करना अपना परम धर्म समझते थे। पेशवा राजाओं के यहां श्रावण के महीने में एक विशाल विद्वत सम्मेलन होता था और वाद विवाद में जो पंडित सर्व श्रेष्ठ होता था उसे पुरस्कार स्वरूप सवा लाख रुपया मिलता था।

पेशवा राजा स्वयं विद्वानों के लिए अपना सम्मान प्रदर्शित करने की भावना से तीन कदम उस विद्वान की पालकी को लेकर चलता था। ऐसा करने में वे अपने आपको बड़ा भाग्यशाली समझते थे।

परम्परा के अनुसार यह प्रथा बहुत समय तक चलती रही। नाथराव पेशवा ने सदा की भांति सभा की। परंतु उसकी श्रद्धा विद्वान ब्राह्मणों के लिए नहीं थी। एक ब्राह्मण जो इस सभा में विजयी हुआ था उसके व्यवहार से पेशवा अप्रसन्न था अतएव पेशवा ने कहा कि यह पंडित जी इस सभा में विजयी अवश्य हुए हैं परन्तु इनमें नम्रता तनिक भी नहीं है इसलिए इन्हें एक रुपया इनाम कम मिलेगा, तेजस्वी ब्राह्मण ने कहा कि एक रुपया कम लेना मेरी इज्जत के लिये कलंक की बात है मैं यहां पर आदर प्राप्त करने के लिये आया हूं न कि इस सम्मान पूर्ण व्यवहार के लिए। मैं इसे कदापि स्वीकार नहीं कर सकता हूँ।

राजा ने उत्तर दिया—मेरे द्वारा दी गई आज्ञा वापिस नहीं हो सकती है। आप यही स्वीकार कर लीजिये। आपको मुंह से ऐसे शब्द नहीं निकालने चाहिये। इतना धन आपको कहीं नहीं मिल सकता।

विद्वान ने उत्तर दिया श्रीमान्! इस प्रकार के हुक्म को वापिस लेने में कोई दोष नहीं लगता है। किन्तु उसके स्थान पर आपको यश ही मिलेगा। जिस प्रकार से इतने धन को देने वाले बिरले ही मिलते हैं उसी प्रकार से इतने धन को त्यागने वाले ब्राह्मण भी संसार में नहीं।

पेशवा राजा ने अपनी आज्ञा को वापिस नहीं लिया और विद्वान् सवा लाख रुपया ठुकरा कर चला गया। अपने स्वाभिमान के लिए इतने धन को त्याग कर अपमान को तनिक भी पास नहीं आने दिया और दरिद्रता का कष्ट सहन करना ही अच्छा समझा।

रहिमन हमें न सुहाय, अमिय पियावत मान बिन।
जो विष देय बुलाय, प्रेम सहित मरिबो भलो॥

२५७—साधु संग

गंगा पाप शशिताप, धेस्य कल्पतरुस्तथा।
पापं तापच दैन्मंच, हैरत साधु समागम ॥

एक वैश्य अपने दूकान के लिये सामान लेने एक कस्बे में जाया करता था। यह बहुत धनवान था अतः जहाँ वह सामान लेने जाया करता था इस कस्बे के आदमियों को उसने काफी धन उधार दे रखा था! एक दिन जब वह उनसे रुपये का तकाजा करने गया तो मालूम हुआ कि सभी उधार लेने वाले कस्बे में एक स्थान पर कथा होरही है, वहाँ कथा सुनने के लिये गये हैं वह वैश्य भी वहाँ जाकर पहुंच गया। कथा की समाप्ति में रात्रि हो गई। अपने सभी कर्ज वालों से बातचीत कर लेने के पश्चात् जब वह चलने लगा तो सामान का बोझा उठाने के लिये एक मजदूर की आवश्यकता थी परन्तु उस समय जाने वाला वहां कोई नहीं था। पंडितजी ने एक मैले कपड़े पहिने हुए व्यक्ति को देखकर कहा कि भाई तुम इन सेठजी के बोझ को रख आओ तुम्हें मजदूरी मिलेगी। उसने पंडितजी की बात मानकर सेठजी से कहा कि महाराज मैं भी इधर की ओर चलने वाला हूँ मुझे मजदूरी की आवश्यकता नहीं है मैं आपके सामान को ले जाऊंगा। सेठजी ने लोक लाज के कारण कहा कि नहीं तुम्हें मजदूरी तो लेनी ही पड़ेगी परन्तु जी चाह रहा था कि यह न ले तो अच्छा है।

मजदूर एक महात्मा था उसको सेठ की इस कृपणता पर अत्यन्त दया आई रास्ते में उसने इस वैश्य को उपदेश देना आरंभ कर दिया और कहा कि साधुजी एक घंटे तक सत्संग कर लेता है। उसे हजार घंटे लाभ मिलता है। वैश्य ने कहा कि मैं अवश्य साधु संग करूंगा। परन्तु घर पर आकर वह पहिले की भांति फिर निन्यानवे के फेर में पड़ गया!

जब उस वैश्य की मृत्यु हुई तो यमराज ने कहा कि तुमने एक

घंटे साधु का संग किया है अतः तुम्हें एक हजार घंटे स्वर्ग मिलेगा और बाकी तुम्हें सभी पापों के फल भोगने पड़ेंगे वैश्य के हृदय पर अब उस साधु की महानता का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। यह सोचने लगा कि उसने मेरी गठरी उठाकर मुझे एक हजार घंटे का स्वर्ग दिलवाया कुछ भी न लिया तथा मुझे स्वर्ग में रहने का मार्ग बतलाया अतः पहिले साधुओं से ही स्वर्ग मिलना ठीक है। बाद में आकर पापों का फल भोग लूंगा।

वैश्य ने स्वर्ग में जाकर अनेकों महात्माओं के बीच में उस अपने मजदूर को भी देखा। सभी स्वर्ग सिंहासन पर बैठे हुए थे। उसने उन सभी से जाकर उपदेश ग्रहण किये और ब्रह्म चिन्तन में लग गया। उसे अपनी दुष्कृति पर बड़ा दुःख हुआ। यमराज के दूतों ने समय समाप्त हो जाने पर उसे बुला लाने की यमराज से आज्ञा माँगी तो यमराज ने उत्तर दिया कि स्वर्गलोक में जाकर अपनी दुष्कृतियों पर पश्चात्ताप करने वाला मनुष्य यमराज के बन्धन से मुक्त हो जाता है। वहाँ वह साधु संगत साधुकृति और ईश्वर चिन्तन में मग्न है हमारा उस पर कोई अधिकार नहीं है।

एक घड़ी आधी घड़ी आधी में पुनि आधि।
तुलसी संगत साधु की हरै कोटि अपराध॥

२५८—दीन की पूजा दीनबन्धु की पूजा है।

विश्वनाथ का मन्दिर काशी के ही नहीं वरन् हिन्दुस्तान के मन्दिर में एक प्रसिद्ध मन्दिर है। वहाँ के बारे में एक कथा प्रसिद्ध है कि एक बार स्वर्ग से उस मन्दिर में एक सोने का थाल गिरा। उस थाल में यह लिखा हुआ था कि प्रभु से सच्चा और सबसे अधिक प्रेम करता होगा वही उस थाल का अधिकारी है। मन्दिर के पुजारियों ने सभी भक्तों को यह बात बतलादी। धीरे-धीरे यह खबर सारे नगर में पहुँच गई। नगर के बड़े २ धनी मानी अपनी दान शीलता की

परीक्षा लेने के लिये वहाँ पर आये। परन्तु वह थाल जिसके भी हाथ में आता था तुरन्त ही शीशे का हो जाता था। अन्त में पुजारी ने किसी को भी इसके लिए ठीक न समझ कर उसे रख दिया। अब तो बहुत से धनी पुरुषों ने ईश्वर के सच्चे भक्त होने का सार्टीफिकेट लेने के लिये प्रतिदिन दान देना प्रारम्भ कर दिया और उस दिन की प्रतीक्षा करने लगे जब फिर ईश्वर भक्त प्रतियोगिता होने वाली थी। परन्तु वह थाल जिस किसी के भी पास जाता था शीशे में परिणित हो जाता था।

मन्दिर से थोड़ी ही दूर पर रोगी वृद्ध बड़ी बुरी दशा में पड़ा हुआ रो रहा था परन्तु सभी अपने आपको भक्तराज बनाने की कोशिश में लगे हुए थे किसी ने भी उसकी ओर दृष्टिपात तक नहीं किया। एक निर्धन किसान जो कि बिलकुल ही मूर्ख था अपनी थाली में विश्वनाथ की पूजा की सामिग्री संजोये पूजा करने के लिये आ रहा था। उसने भी यह कोलाहल सुना। परन्तु किसान ने विचार किया कि हमें इससे क्या मतलब है जो कोई श्रेष्ठ भक्त होगा बाद में मालूम पड़ ही जावेगा हम तो अपनी पूजा करने आये हैं इस समय शान्ति से अपनी पूजा करलें। इतने में ही उसकी दृष्टि उस रुग्ण व्यक्ति पर पड़ी जो कि पड़ा हुआ कराह रहा था किसान दौड़कर उसके पास पहुँचा और पूजा के लिये जो जल लाया था वह जल उसने उस रोगी के गले में डाल दिया जब रोगी को शांति मिली तो उसने कुछ खाने की इच्छा प्रकट की। किसान ने अपना दूध व भोग जो कि वह पूजा के लिए लाया था सभी उस व्यक्ति की भूख की शांति के लिये उसे अर्पण कर दिया और उसकी सेवा सुश्रूषा करने के लिए उसे अपने घर ले आया। पुजारी इस सभी वृत्तान्त को देख रहा था। अतएव दूसरे दिन जब वह किसान आया तो पुजारी ने वह थाल उसे दिया। किसान के हाथ में आते ही थाल की ज्योति और भी चमकने लगी जब यह सारा किस्सा सभी को मालूम पड़ा तो वह सभी जो

कि जबरदस्ती भगवान के भक्त बनना चाहते थे मन में बड़े लज्जित हुए और सभी की आत्मा कहने लगी कि वास्तव में यही व्यक्ति ही इस ईश्वरीय पुरष्कार के योग्य था।

(आडम्बर युक्त पूजा से भगवान कभी प्रसन्न नहीं होते हैं और न धनिकों के धन देने से ही, वरन भगवान वास्तविक निस्वार्थ भाव और शुद्ध भावना की इच्छा ही अपने भक्त से रखते हैं।

—×—

२५६—कर्त्ता के मन कछु और

एक महाराजा के त्रिस्तनी (तीन कुचों वाली) कन्या पैदा हुई। जब वह कन्या बड़ी हुई तो कोई भी उससे शादी करने के लिये तैयार नहीं होता था। सभी कहते थे कि यह त्रिस्तनी कन्या तो पति के लिये अशुभ होती है। जान वूझ कौन अपनी मौत बुलाना चाहता है। महाराज जो अत्यन्त धनवान और योग्य था उसने बहुत सा धन देकर एक अन्धे के साथ उस कन्या की शादी कर दी। कन्या भी बेचारी अपना उस अन्धे के साथ दुखमय जीवन व्यतीत करती रही परन्तु मन की प्रबल इच्छा का दमन अधिक समय तक नहीं किया जा सकता है। उस अन्धे के पास तो रहने से कन्या का संसार भी अन्धा बन गया। वह अन्धा संसार की सुन्दर वस्तुओं के स्वाद से बंचित था। इसी प्रकार वह अपनी स्त्री को भी रखना चाहता था। परन्तु एक नव युवती युवावस्था में सभी वस्तुओं की आशा करती है। अतएव अन्धा चालाक था। वह सदैव दरबाजे पर ही बैठा रहता था और जब कभी आता था तो दरबाजे का ताला बन्द करके आया करता था इस प्रकार वह स्त्री किसी अन्य से प्रेम करने में भी असमर्थ थी।

अन्धे का एक मित्र था जो लंगड़ा था। वह प्रायः अन्धे के पास आया करता था वह उसकी स्त्री की सुन्दरता पर मोहित हो गया।

वास्तव में वह स्त्री बहुत ही सुन्दर थी। उसमें केवल लिस्तनी होना एक मात्र दोष था। आकर्षण दोनों ही ओर से आरम्भ हुआ और फलतः एक दूसरे ने अपना प्रेम देने का वायदा कर लिया। परन्तु अन्धा सदैव अपने मित्र को भी अपने ही पास बिठाये रखता था। अचानक लंगड़े को एक तदवीर सूझ पड़ी उसने अन्धे से कहा कि भाई इतने दिन तुम्हारी शादी को हो गये परन्तु हमने कभी भाभी के हाथ से भोजन नहीं किये। मित्र, कभी तो हमारे लिये भी दावत का निमन्त्रण हो। अन्धा इस बात से बड़ा प्रसन्न हुआ और बोला कि कल ही आपका निमन्त्रण है। अवश्य ठीक समय पर आइये। स्त्री ने इस समय ठीक मौका सोचा और पति से कहा कि कल के लिये सामान लाने के पैसे इन्हें ही दे दिये जांय ताकि यह सभी सामान ले आयेंगे। अन्धे ने अपनी स्वीकृति दे दी। जब वह स्त्री लंगड़े को पैसे दे रही थी तो उसने कहा कि तुम जहर ले आना ताकि यह अन्धा मर जायगा और हम तुम मौज से रहेंगे।

लंगड़ा जब जहर खरीदने बाजार गया तो उसे रास्ते में एक सांप दिखलाई दिया। लंगड़ा बहुत कंजूस था उसने सोचा कि सांप से ज्यादा जहर तो किसी में भी नहीं होता। वह सांप को उठा कर ले आया और अन्धे की स्त्री को दे दिया। स्त्री ने सांप को काटकर उसके टुकड़े कर दिये और एक बर्तन में रख कर चूल्हे पर चढ़ा दिया अन्धे को उसके पास यह कह कर बिठाल दिया कि मैं पूड़ियों के लिये आटा मांड रही हूं। आप तब तक इस तरकारी को चलाते रहिये। इधर इन दोनों का अच्छा मौका मिल गया। यह दोनों इधर प्रणाय क्रियायें करने लगे। साँप का जहरीला धुआँ अन्धे की आँखों में लगा फलतः उसकी आंखों पर जो जाला चढ़ा हुआ था वह हट गया और अंधे को साफ-साफ दिखलाई देने लगा तो उसने साँप के टुकड़े देखे। जैसे ही वह क्रोध में वहाँ से उठा वैसे ही उसकी निगाह अभिसार करती हुई अपनी स्त्री पर पड़ी। अन्धा क्रोध से आग बबूला हो उठा।

उसने लंगड़े की टांग पकड़ कर जोर से घुमा कर स्त्री के मारा लंगड़े का सर स्त्री के वक्षस्थल पर लगा और फल स्वरूप लिस्तनी का एक स्तन कुच) अन्दर दब गया और लंगड़े को टांग पकड़ कर घुमाने के कारण उसकी टांग ठीक हो गई। अब तीनों अपने को अपने दोष से रहित देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए।

२६०—इज्जत

एक फकीर के बारे में यह बात प्रसिद्ध थी कि वह अल्लाह का नाम कतई नहीं लेता था। इस बात से धर्मान्ध मुसलमान बहुत चिढ़ा करते थे। एक बार चुगल खोर ने शिकायत औरंगजेब से जाकर कर दी। औरंगजेब अपने आपको बड़ा पक्का मुसलमान समझता था। वह इस हिमाकत को कैसे भी बरदास्त नहीं कर सकता था। औरंगजेब ने इस बात को सुनते ही अपना एक परवाना फकीर के पास भेजा और उसे इस बात का उत्तर देने को कहला भेजा। वह फकीर भी बड़ा योग्य था उसने औरगजेब के आदमी से कहा कि इसका उत्तर हम कल दरबार में आकर बादशाह को देंगे।

दूसरे दिन फकीर बादशाह के पास दरबार में पहुँचा और बिना सलाम झुकाये ही औरंगजेब के सामने जा खड़ा हुआ। औरंगजेब ने क्रोधित होकर कहा कि फकीर, तुम बड़े ही घमंडी हो जा कि अल्लाह को भी नहीं मानते। तुम काफिर हो, तुम्हें फांसी की सजा मिलनी चाहिये। फकीर बोला कि औरंगजेब, तुम इतने नाराज क्यों हो ? यह मेरी इच्छा है, जैसा मैं चाहूँगा करूँगा। इस बात पर चापलूस लोग बोले, देखिये हुजूर यह कितना बदतमीज है कि बाद-शाह सलामत का भरे दरबार में नाम लेता है। इस तरह यह आपकी तौहीन भी करता है। फकीर ने कहा कि हुजूर यही मेरा

जबाब है। जब इस छोटे से दरबाजे के बादशाह का नाम लेने से उसकी बेइज्जत होती है तो उस संसार के मालिक का इन छोटे छोटे आदमियों के सामने नाम लेने से तो उसकी बेइज्जती अवश्य ही होती है। मैं अपने अल्लाह पाक का नाम इन अदने से लोगबागों के सामने इस बदतमीजी से नहीं ले सकता चाहे आप मुझे काफिर ही क्यों न कहें। दुनियां के बनाने वाले और दुनियां के बचाने वाले की बेइज्जती करने वाले की बनिस्बत काफिर कहलाना कहीं अच्छा है। औरंगजेब इस पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने उन चापलूसों को ऐसे महान् आदमी की शिकायत करने पर बहुत फटकार लगाई।

२६१—गुरुभक्ति

विद्यार्थी उपमन्यु आयोद धौम्य का शिष्य था। गुरुजी की आज्ञानुसार वह प्रतिदिन गुरुजी की गाय चराने वन में जाया करता था। प्राचीन प्रणाली की शिक्षा देने में उस समय गुरू किसी विद्यार्थी से आजकल की भांति भीख इत्यादि कुछ भी नहीं लेते थे। शिष्य भी भिक्षा माँग कर ही अपनी उदर पूर्ति करते थे।

गुरुजी ने शिष्य की हृष्टपुष्टता देखकर एक दिन शिष्य से प्रश्न किया कि बेटा, तुम इतने मोटे कैसे होते जा रहे हो? तुम क्या खाते हो? शिष्य ने उत्तर दिया महाराज मैं भिक्षा मांगकर लाता हूं और वही खाता हूँ। गुरूजी ने कहा कि तुम्हें मेरी बिना आज्ञा के भिक्षा नहीं माँगनी चाहिये और मेरी आज्ञा प्राप्त करने पर जो कुछ भी तुम्हें मिले वह गुरु की भेंट करना चाहिये—यह शास्त्र का नियम है।

शिष्य ने गुरु की आज्ञा का पूर्ण रूप से पालन किया व भिक्षा गुरुजी को लाकर देना प्रारम्भ कर दिया। परन्तु गुरुजी भिक्षा में से कुछ भी शिष्य को नहीं देते थे फिर भी शिष्य की तन्दुरुस्ती प्रतिदिन बढ़ती जाती थी। गुरुजी ने शिष्य से पूछा कि बेटा, तुम क्या भोजन

करते हो ! शिष्य ने उत्तर दिया कि महाराज मैं एक बार की भिक्षा तो आपको दे जाता हूँ और दूसरी बार जो कुछ मांगकर लाता हूँ वह स्वयं खा लेता हूँ। गुरुजी ने कहा कि यह तो तुम और विद्यार्थियों के साथ भी अन्याय करते हो तुम्हें ऐसा नहीं करना चाहिये। भिक्षा केवल एकबार उतनी ही मांगनी चाहिये जिससे एक आदमी का पेट भर जाय। शिष्य ने गुरुजी की आज्ञा मानली।

कुछ दिनों के पश्चात् जब गुरुजी ने देखा कि शिष्य तो अब भी मोटा ही होता जा रहा है। इसका कारण पूछा। शिष्य ने उत्तर दिया कि महाराज बछड़ा के पी लेने के पश्चात् जो गाय के थनों में दूध बचता है मैं उसे पी लेता हूँ। इस बात से गुरुजी ने नाराज होकर कहा कि मेरी बिना आज्ञा के तुम्हें गाय का दूध नहीं पीना चाहिये। शिष्य ने ऐसा ही किया।

शिष्य की बढ़ती हुई पुष्टता से गुरुजी को पुनः शंका हुई और उन्होंने शिष्य से उसकी पुष्टता का कारण पूछा। शिष्य ने कहा कि महाराज बछड़े जो दूध पीकर फेन निकालते हैं उन्हें मैं खाता हूँ। गुरुजी ने कहा कि तू बड़ा दुष्ट है। इस प्रकार से मेरे बछड़ों को नुकसान होता है। तेरे प्रेम के कारण वह ज्यादा फेन बनाते होंगे। अब आगे से तुम कभी ऐसा मत करना।

सभी खाने के साधनों के बन्द हो जानेके कारण वह शिष्य भूख से व्याकुल होकर आक के पत्ते खाकर ही अपना जीवन व्यतीत करने लगा। आक के पत्तों के फलस्वरूप उसकी आंखों की ज्योति नष्ट होगई और एक दिन रात्रि को वह एक कुए में गिर पड़ा। प्रातःकाल गुरूजी ने यह समझकर कि मैंने उसे सभी प्रकार के भोजन करने से मना कर दिया है अतः वह दुखी होकर मुझसे नाराज होकर चला गया मालूम पड़ता है. अतः गुरुवर शिष्य की खोज में निकल दिये और जंगल में जोर जोर से नाम लेकर पुकारने लगे। शिष्य ने कुए में से आवाज लगाई और कहा कि गुरूजी मैं कुए में हूं। गुरूजी

ने उसे कुए में से निकाला और अन्धे होने का कारण पूछा। शिष्य ने स्पष्ट बता दिया।

गुरुजी ने शिष्य से अश्विनी कुमारों की प्रार्थना करने को कहा शिष्य ने प्रार्थना की और प्रार्थना का फलस्वरूप शिष्य की आंखें पूर्ववत होगई।

—o—

२६२—स्वाद

आये नाग न पूजिये, बाँबी पूजन जाँय

एक महात्मा बड़े ही तपस्वी थे। संसार का पूर्ण रूप से त्याग-कर चुके थे। बेकार की बातों में समय नष्ट न कर केवल भगवान का चिंतन ही किया करते थे एक बार एक सेठजी जो कि निस्संतान थे महात्मा जी के पास आये और अत्यन्त दुखी होकर अपने दुख का निवेदन करने लगे। महात्माजी ने कहा कि जाओ, भगवान ने चाहा तो तुम्हारे अवश्य सन्तान होगी। भगवान की कृपा से सेठ जी के कुछ दिनों पश्चात् एक पुत्र हुआ। सेठ जी अत्यन्त प्रसन्न होकर सभी गांव वालों को दावत देने का विचार किया। जिस दिन दावत थी उस दिन सेठ जी ने महात्मा जी से प्रार्थना की! आप कृपया हमारे घर चलिए और वहां पर भोजन करिए। महात्माजी ने स्पष्ट मना कर दिया कि हम किसी के यहाँ भोजन करने नहीं जाते हैं। सेठ जी वापिस लौटकर आये और जब भोजन तैयार हो गया तो महात्माजी के लिए एक बड़े थाल में रखकर ले गये। महात्माजी ने सेठ को फट-कार कर कहा कि हम साधु हैं हमको स्वाद की क्या आवश्यकता है। और थाल सेठ के हाथ में से लेकर फैंक दिया। बेचारा सेठ वहां से लौट आया। सारे सामान को कुत्ते इत्यादि खाकर साफ कर गये परंतु दो तीन मिठाइयां राख में पड़ी हुई रह गई थी। महात्मा जी ने अब वह मिठाई खाई तो उन्हें बड़ी अच्छी लगीं व जी चाहा कि अब तो अवश्य ही यह सामान खाना चाहिए। रात्रि का समय था।

साधु ने गृहस्थों के जैसे कपड़े पहिन कर सेठ के घर का रास्ता लिया।

सेठ के दरवाजे में ज्यों ही महात्माजी घुस रहे थे इतने में ही सेठ कुछ कार्यवश दीपक लेकर बाहर आरहा था। महाराज जी ने भय के कारण पीछे खसकना प्रारम्भ किया कि कहीं सेठ पहिचान न ले। पीछे खसकते २ महात्माजी बहुत पीछे अन्धेरे में खसक गये और अचानक उनका पाँव एक कीच के भरे हुए बड़े गडडे में पड़ा और बेचारे महात्माजी उसी में डूब गये। गड्ढा जरा गहरा था। बाबाजी डूबने के डर के कारण उसमें छटपटाने लगे। छटपटाने की आवाज सुनकर आदमी वहाँ रोशनी लेकर आये और महात्माजी को वहाँ से निकाला। महात्मा जी को देखकर सेठ ने आने का कारण पूछा। महात्माजी बोले कि भाई यह तो सभी इस जीभ की महिमा है।

(जीभ बड़ी स्वार्थी है। इसके अनुसार मनुष्य को नहीं चलना चाहिए बल्कि अपने अनुसार इसे चलाना चाहिए।)

२६३-श्रद्धा

औरंगजेब ने गुरु तेग बहादुर को कत्ल करवा कर उनकी लाश को बीच चौराहे पर सड़ने के लिये पटकवा दी थी। उस लाश की रक्षा के लिए कुछ पहरेदार भी वहाँ पर बादशाह ने तैनात कर दिये थे। गुरु गोविन्दसिंह की उस समय उम्र लगभग चौदह वर्ष की थी पिता की मृत्यु का दुःखद समाचार सुनकर उन्हें बड़ी ठेस पहुँची परन्तु वीर पिता का वीर पुत्र कभी हिम्मत नहीं हारता। उसने औरंगजेब की इस आज्ञा को सुनकर कि लाश किसी को नहीं दी जावेगी स्वयं जा कर लाश लाने का विचार कर लिया। गोविन्दसिंह जिस समय अपने पिता की लाश लेने के लिए जा रहे थे तभी एक गाड़ीवान ने गुरु गोविन्दसिंह को अकेले जाते देखकर प्रणाम करके पूछा कि आप इस समय कहाँ जा रहे हैं। गुरु गोविंदसिंह ने गाड़ीवान से कहा कि एक स्वाभिमानी पुत्र यह कदापि सहन नहीं कर सकता है कि

उसके पिता की लाश चौराहे पर पड़ी सड़ती रहे और वह मूँछें ऊँची किए हुए सिक्खों का गुरु बन आनन्द मनाया करे। मैं अपने पिता की लाश लेने जा रहा हूँ और अब तभी घर वापिस लौटूँगा जब मैं अपने पिता की लाश ले आऊंगा। गाड़ीवान ने जब तेगबहादुर की लाश के बारे में यह किस्सा सुना तो गुरु गोविन्दसिंह से बोला कि महाराज जब तक आपके शिष्य उपस्थित हैं तब तक आपके वहाँ जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। आज सारा समाज आपकी ओर ही दृष्टि जमाये बैठा है। आप ही हमारे पथ प्रदर्शक हैं। आपके जीवन का मूल्य अति महान् है। आप कृपया हमारे लौटनेकी प्रतीक्षा कीजिये और हम गुरुवर की लाश को लेकर आते हैं।

गुरु तेगबहादुर की लाश को पहरे में से निकाल कर लाने का अर्थ जान बूझकर काल के गाल में ही जाना था। दोनों पिता पुत्र गुरु की लाश लेने को चल दिये। उन्होंने लाश को देखा कि उससे बदबू आ रही थी और वह लाश बीच चौराहे पर पड़ी थी। पहरेदार उसकी देखभाल के लिये खड़े हुए थे। लाश के उठाने का कोई चारा न जाना दोनों पिता पुत्रों ने रात्रि में उठाने की योजना बनाई।

रात्रि के सन्नाटे में पहरेदार जो इतने दिन से पहरा लगाते-लगाते थक चुके थे लाश से काफी दूर जाकर सो रहे। इस समय इन दोनों पिता पुत्रों ने चलना ठीक समझ कर लाश के पास पहुँच कर विचारने लगे कि हम दोनों लाश को उठा कर तो ले जायेंगे। परन्तु जब यह पहरेदार जाग जायेंगे तो यह शीघ्र ही पता लग जावेगा कि लाश यहाँ से कहीं चली गई है। अतः वे हमें अवश्य पकड़ लेंगे इस प्रकार से न तो लाश ही मिल सकेगी और हमारे प्राण भी व्यर्थ ही में जावेंगे। अतः अब यही उचित है कि हम तुम दोनों में से एक यहाँ पर मार लिटा दिया जाय यही अच्छा है क्योंकि पहरेदारों को लाश पड़ी हुई दिखलाई पड़ेगी और गुरु की लाश भी अच्छी प्रकार से पहुचायी जा सकती है।

अब पिता और पुत्र दोनों में विवाद चलने लगा। पिता कहता था कि मैं मर जाऊं और तुम लाश को ले जाओ और पुत्र कहता था कि मैं मर जाऊं और तुम लाश को ले जाओ। अन्त में पिता के समझाने से पुत्र ने पिता की हत्या कर गुरु की लाश के स्थान पर पिता की लाश को रखकर पुत्र चल दिया और गुरु गोविन्दसिंह को उनके पिता की लाश दे दी।

२६४—छल

एक सन्यासी बन में बैठ कर सदैव तपस्या किया करते थे वह सांसारिक आदमियों से संभाषण करना ठीक नहीं समझते थे। अतएव उन्होंने मौनव्रत धारण कर लिया। एक दिन सन्यासी जी भोजन के लिए भिक्षा माँगने गये तो उन्होंने एक गृहस्थी की नवयुवती कुमारी को देखा। भिक्षा देते समय उनकी निगाह उस कुमारी पर जम गई। मौन साधु उसकी सुन्दरता को देखकर मुग्ध हो गया। उस समय उस गृहस्थ की कथा को देखकर वह सन्यासी हाय हाय करके चीखने लगा और अपने स्थान को वापिस आ गया। जब यह समाचार सारे नगर में फैल गया कि सन्यासी ने अपना मौन व्रत तोड़ दिया है तब वह गृहस्थ सन्यासी के पास में आया और बोला कि महाराज आपने मेरे घर पर अपना व्रत क्यों तोड़ा? इसका क्या कारण है? सन्यासी ने उत्तर दिया कि बेटा, तुम्हारी कन्या चांडालनी है। जब उसकी शादी होगी तब तुम्हारे कुटुम्ब का सर्वनाश हो जावेगा। गृहस्थी इस बात को सुनकर अत्यन्त दुःखी हुआ। महात्मा जी से पूछा कि महाराज इस अनिष्ट के निवारण का कोई उपाय है सन्यासी ने कहा कि इसका केवल एक ही उपाय है वह यह है कि तुम उस कन्या को एक काठ के सन्दूक में रखकर रात्रि के १२ बजे एक दीपक उसके ऊपर जला कर नदी में बहा देना तभी तुम सर्वनाश से बच

सकते हो अन्यथा संसार की कोई शक्ति तुम्हें नहीं बचा सकती। धर्मान्ध गृहस्थी को मौनी संन्यासी पर पूर्ण विश्वास था। उ ने ऐसा ही किया।

इधर सन्यासी ने अपने सभी चेलों को नदी के किनारे बैठकर संदूक की राह देखने के लिए भेज दिया और उसने कहा कि तुम संदूक को मत खोलना चाहे उसमें से कैसी भी आवाज क्यों न आये मैं उस संदूक पर एक मंत्र की सिद्धि करूंगा। अतः आप लोग आज रात्रि को उस संदूक को मेरे रहने के स्थान में रखने के पश्चात् आवें भी नहीं। यह सभी खबर राजा के गुप्तचरों द्वारा राजा के पास पहुँच गई। राजा ने उस कन्या को सन्दूक में से निकलवा लिया और उसके स्थान पर एक खूब तगड़ा सा बन्दर बन्द कर दिया।

जब वह सन्दूक तैरता हुआ शिष्यों के पास आया तो शिष्यों ने सन्दूक को निकाल कर गुरुजी के पास पहुँचा दिया और गुरुजी से कहा कि गुरुजी यदि आपकी आज्ञा हो तो हम आपकी आगे की किवाड़ों की कुन्डी भी बन्द करदें ताकि आपको यहाँ से कहीं गया हुआ जानकर कोई आने भी न पाये गुरुजी ने शीघ्र ही अपनी स्वीकृति दे दी। शिष्यों के पश्चात् कामातुर सन्यासी ने सन्दूक को जैसे ही खोला वैसे ही बंदर जो सन्दूक में बंद रहने के कारण खीज गया था संयासीके ऊपर झपट पड़ा। वेचारे सन्यासी बहुत रोये चीखे परन्तु वहाँ कौन सुनने वाला था। बन्दर ने सन्यासी के नाक कान मुँह आदि सभी काट लिये। प्रातःकाल जब शिष्यों ने गुरुजी की कुण्डी खोली तो गुरुजी की यह दुर्दशा देखी। कुछ समय पश्चात् राजा के सिपाही सन्यासी को लेने के लिये आ गये। राजा ने इस सन्यासी की दुष्टता का उसे ठीक-ठीक दण्ड दिया।

२६५—गुरु की आज्ञा

गुरुकुल परम्परा भारतवर्ष में बहुत प्राचीन है। एक बार एक बालक अपने गुरु के यहाँ पढ़ने गया। उसके माता-पिता ने उसे यह

बतला दिया कि बेटा गुरु की आज्ञा का पालन करना चाहिए। जब वह बालक गुरू जी के पास आकर जंगल में रहने लगा तो एक दिन उसके गुरु आयोदधौम्य ने शिष्य से कहा कि पुत्र, तुम मेरे खेत पर चले जाओ। देखो बरसात का समय है। खेत की मेंढ़ बाँध दो ताकि पानी न निकलने पाये। शिष्य गुरु की आज्ञा प्राप्त कर खेत की मेंड़ बाँधने के लिये खेत पर गया जब शिष्य सभी मेंड़ बाँध चुका था और थोड़ा सा हिस्सा मेंड़ बाँधने को बाकी रह गया था तभी बड़ी जोर से मेह बरसने लगा। शिष्य ने विचार किया कि यदि मेह का पानी खेत में से निकल गया तो गुरुजी का बड़ा नुकसान होगा। अतः वह उस स्थान पर अपनी पीठ जमा कर पड़ गया। रात्रि का समय हो गया। परन्तु वह शिष्य तो वहाँ पर पानी रोके हुये पढ़ा था गुरुजी ने शिष्य को आया हुआ न देखकर स्वयं खेत को संभाला। खेत पर गुरुजी ने शिष्य का नाम लेकर आवाज लगाना प्रारंभ किया तो शिष्य बोला कि गुरुजी मैं अमुक स्थान पर हूँ गुरुजी जब वहाँ पर पहुँचे तो शिष्य को कीच में पड़ा हुआ देखकर कारण पूछा। शिष्य ने ठीक ठीक बात कह दी। गुरुजी इसकी गुरुभक्ती पर अत्यन्त प्रसन्न हुये और इसका नाम उद्दालक रख दिया।

२६६—सहृदयता

एक कालेज में दो विद्यार्थी साथ-साथ शिक्षा प्राप्त करतेथे प्रत्येक परीक्षा में इन दोनों का स्थान प्रथम व द्वितीय रहता था। इनमें से एक विद्यार्थी जो गरीब था उसकी मां परीक्षा से कुछ समय पूर्व बीमार होगई और उसका स्वर्गवास हो गया। इस बेचारे विद्यार्थी का जो एक मात्र सहारा था वह भी चला गया। इधर स्कूल में भी वह बहुत दिन तक न जा सका अतः सभी को विश्वास हो गया कि यह विद्यार्थी प्रथम नहीं उत्तीर्ण हो सकता है। परन्तु परीक्षा में यह विद्यार्थी प्रथम ही उत्तीर्ण हुआ तथा दूसरा विद्यार्थी दूसरी

श्रेणी में पास हुआ। उन दोनों की उत्तर पुस्तिकायें फिर से जाँची गई तो मालूम पड़ा कि दूसरे विद्यार्थी ने सारे सवाल ठीक करके उन सभी की अन्त की एक लाइन नहीं लिखी थी मास्टर ने जब विद्यार्थी से इसका कारण पूछा तो उसने उत्तर दिया कि यह लड़का मुझसे ज्यादा होशियार है परन्तु इसकी माता की मृत्यु के कारण इसकी पढ़ाई में बड़ा विघ्न आया है। यदि मैं इस बार प्रथम आ जाता तो मुझे कोई विशेष लाभ नहीं होता परन्तु इसके प्रथम न आने से कालेज की ओर से जो इसे पारितोषिक मिलता है वह बन्द हो जाता। अतः मैंने यह जान बूझ कर किया है कृपया आप इस बात को किसी को मत बतलाइयेगा। शिक्षक विद्यार्थी की इस सहृदयता पर बड़ा प्रसन्न हुआ।

२६७—बेकारी का उपाय

एक निर्धन विद्यार्थी ने जो अमेरिका का रहने वाला था ग्रेजूएशन कर लिया था। परन्तु उसे कहीं भी कोई सरकारी नौकरी नही मिली। निर्धनता के कारण उसे पैसे की बड़ी आवश्यकता थी। अतएव उसने एक व्यापारी के कार्यालय में जाकर नौकरी के लिये प्रार्थना की। व्यापारी ने उसकी शकल और कपड़ों को देखकर कहा कि मेरे यहाँ आपके लायक कोई स्थान नहीं है। परन्तु भूखा क्या न करता वाली कहावत यहाँ चरितार्थ हो रही थी। उसने उत्तर दिया कि मुझसे आप कोई भी काम करवा लीजिये परन्तु आप मुझे नौकरी दे दीजिये। व्यापारी बोला कि प्रारंभ में सभी नौकरी करने वाले यही कहते हैं परन्तु जब काम मिलता है तो घबड़ाता है। विद्यार्थी बोला कि मेरे भी विचार इस प्रकार थे परन्तु अब उनमें बहुत परिवर्तन हो गया है। व्यापारी को विद्यार्थी की बात पर यकीन आ गया और उसे व्यापारी ने अपने यहाँ नौकर रख लिया। व्यापारी ने उस युवक की परीक्षा लेने के लिये उसे मजदूरों के साथ रास्ता खोदने के लिये भेज दिया।

युवक उनके साथ बड़ी प्रसन्नता से गया। और उनके कुदाली फावड़ा अपने कन्धे पर रख कर सड़क खोदने की तैयारी कर दी सभी को काय करने का स्थान बतला दिया गया। इस युवक के लिये जो स्थान बतलाया गया था वह सबसे खराब था। परंतु युवक ने अपने कार्य को सफाई के साथ अन्य मजदूरों की अपेक्षा शीघ्र ही समाप्त कर दिया तथा और अपने काम करने लगा। मालिक ने उसकी इस बात को देखकर उसे मजदूरों का मुखिया बना दिया और उसका वेतन भी बढ़ा दिया। वह मजदूरों के साथ में अच्छा व्यवहार करता था। जहां उन से भूलें हो जाती थीं वहाँ पर उन्हें डाट फटकार बतला कर समझाकर उन्हें बतला देता था। इस प्रकार के व्यवहार व मेहनत से वह सड़क बड़ी अच्छी बन गई और व्यापारी को लाभ भी हुआ। सड़क देखने वाले आफीसरों ने व्यापारी की बहुत बड़ाई की। अब तो व्यापारी को बहुत ठेके मिलने लगे। उसने थोड़े ही दिनों में उसे अपना मैनेजर बना लिया व ईमानदारी और मेहनत के साथ काम करने के कारण उस व्यापारी ने अपना साझीदार (हिस्सेदार) बना लिया।

(सभी को काम प्यारा होता है। चाम किसी को प्यारा नहीं होता है।) भारतवर्ष का प्रत्येक पढ़ा लिखा नवयुवक यही चाहता है कि वह पढ़ने के पश्चात् किसी स्थान पर क्लर्क हो जाय। वह प्रवृत्त समाज व देश के लिये घातक है। पढ़ने का आशय केवल लिखने का काम करना ही नहीं होता। वरन् अपनी योग्यता के अनुसार कार्य को सुचारु रूप से चलाना होता है।

२६८—साधु की शिक्षा

एक साहूकार का पुत्र धन कमाने की इच्छा से परदेश के लिये जा रहा था। मार्ग में उसे एक साधु मिला। रात्रि होने के कारण दोनों ने एक ही स्थान पर विश्राम किया। रात्रि को जब वे दोनों बातें कर रहे थे तो वैश्य पुत्र ने साधु से पूछा कि महाराज कोई रुपया प्राप्त

करने का साधन बतलाइए। साधु ने उत्तर दिया कि हमारे एक २ श्लोक की कीमत १०००) है यदि तुम दे सको तो तुम्हें अवश्य धन प्राप्ति होगा। साहूकार के पुत्र ने १०००) साधु को दिया और श्लोक बतलाने की प्रार्थना की। तब साधु ने बतलाया कि बेटा कोई भी नहीं जानता कि मनुष्य का भाग कब उदय हो जाय। साहूकार के बेटे ने साधु को १०००) और दिया तथा कहा कि महाराज और बतलाइए साधु ने कहा कि किसी की लज्जा नहीं भंग करनी चाहिए बल्कि उसकी रक्षा ही करनी चाहिये। अब की बार साहूकार के बेटे ने साधु को २०००) देकर दो बातें और बतलाने को कहा। साधु ने बतलाया कि बेटा शत विधय भोक्तव्य अर्थात् सौ काम छोड़कर पहिले खा लेना चाहिये और जहाँ शत्रुता हो वहां विश्वास नहीं करना चाहिये और न रहना ही चाहिये।

प्रातःकाल साधु अपने रुपए सम्भाल कर चला गया तथा यह साहूकार का बेटा शहर के पास एक ग्राम में ठहर गया। उसने अपने नौकर को रसोई का सामान खरीदने के लिये शहर को भेज दिया। शाम हो जाने के कारण शहर के प्रवेश के फाटक बन्द कर दिये गये थे अतः वह नौकर शहर जाकर सामान लाने में असमर्थ रहा। नौकर ने बिना सामान लिए लौटना उचित न समझ कर वह रात्रि भर वहीं फाटक पर ठहरा। भाग्यवश उस नगर के राजा का देहान्त होगया। उसके कोई उत्तराधिकारी भी नहीं था। अतएव नगर निवासियों ने निश्चय किया कि प्रातःकाल जो फाटक पर खड़ा मिलेगा वही राजा होगा। ज्योंही फाटक खुला तो नगर की सम्पूर्ण प्रजा ने उस नौकर के गले में पुष्पहार डालकर राजा की भांति उसका स्वागत करना प्रारम्भ कर दिया बेचारा नौकर हक्का बक्का रह गया और कहने लगा कि महाराज मैं तो आटा दाल खरीदने आया हूँ। प्रजा ने सारा हाल उस नौकर को कह सुनाया। अब नौकर बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने अपने नौकरों को आज्ञा दी कि पास वाले गाँव में एक हमारा

वैश्य नौकर है उसे हमारे बाग में लाकर ठहरा दो और उसकी आव भगत भी करो तथा उसे जो कुछ आवश्यकता हो वह सभी चीजें उसे खजाने से दिलवा दिया करो। वह हमारा पुराना नौकर है।

नौकर ने राजा की आज्ञा मानकर वैसा ही किया! परन्तु वैश्य पुत्र इस बात को नहीं जानता था कि उसका नौकर ही राजा होगया है। अचानक जब दोनों का एकदिन संयोग हुआ तो वैश्य पुत्र को बड़ी हँसी आई। राजा ने जो कि वैश्य का पहिला नौकर था कहा था कि तुम इस बात को किसीसे मत कहना नहीं तो मैं तुझे बड़ा दंड दूँगा। तुम ही अपने को मेरा नौकर बतलाना। वैश्य ने यह बात मान ली। एक दिन राजा की स्त्री को वैश्य ने एक सेठ के साथ संयोग करते हुए देखा। वैश्य पुत्र ने साधु की बात का ध्यानकर उसके ऊपर अपना डुपट्टा डाल दिया। रानी ने दुष्टता वश वह डुपट्टा राजा को दिखलाया व कहा कि आपका दुष्ट नौकर मेरे साथ बलात्कार करना चाहता था। इसकी गवाही के लिये उसका वह डुपटटा मेरे पास है। राजा ने विचार किया कि इसे प्रत्यक्ष फांसी देने से तो मेरी व रानी की बद-नामी होगी अतः इसे गुप्तरूप से मरवाना चाहिए। उसने एक पत्र में लिखकर कि इसे आते ही मार देना वैश्य को बुलाकर दे दिया और उनसे कहा कि यह मेरी एक गुप्त चिट्ठी है। इसी कारण मैं आपको कष्ट दे रहा हूँ। आप इसे पहुंचा दीजिये। जब वैश्य पुत्र जाने की तैयारी कर रहा था तो उसे ध्यान आया कि साधु ने कहा था कि शांत बिहाय भोक्तव्य। अतः पहिले भोजन करना चाहिये। वह कपड़े उतार कर भोजन करने लगा। सईस ने राजा को चिट्ठी देते समय देख लिया था। अतः वह उस चिट्ठी को वैश्य के कपड़ों में से निकाल कर उस स्थान पर ले गया और फलतः अपनी जान दे बैठा। इधर वैश्य पुत्र जब राजा के पास जिन्दा पहुँच गया तो उसे बड़ी चिंता हुई और राजा ने अपने मंत्रियों की एक सभा बुलाकर उसके मारने का योजना

बनाने का विचार करने लगे। वैश्य के एक मित्र ने यह सूचना उसे दी। वैश्य ने साधु की बात का ध्यान कर तुरन्त कोष से सदा की भांति रुपया लेकर अपने घर की ओर कूँच किया।

(बड़ों की शिक्षाओं का फल भी बड़ा ही होता है। उन शिक्षाओं का अनुकरण करने से प्रत्येक मनुष्य आपत्तियों के बीहड़ में रास्ता निकालता हुआ अपने जीवन को सुखमय बना सकता है।)

२६९–जो परकू खड्ढा खनै ताकौ कूप तयार

एक महात्माजी जो तीर्थयात्रा करने के लिये निकले थे द्वारकापुरी जाने वाले जहाज में बैठे। उनके पास काफी अशर्फियाँ थीं। जहाज वाले का जी उन अशर्फिबों पर ललचाया। जहाज वाले ने महात्माजी को एक अलग कोठरी में ठहरा दिया जो जहाज के सबसे ऊपर की मंजिल में थी। दैववश जहाज वाले के पुत्र को गर्मी लगी और वह ऊपर की मंजिल में चला गया। उसने महात्मा जी को नीचे अपने कमरे में भेज दिया वे आप स्वयं महात्मा जी के कमरे में सो गया। अर्धरात्रि के समय जब जहाज वाला महात्माजी को मार कर उनका धन प्राप्त करने के लिए आया तो उसने झट से तलवार का वार कर उसके दो टुकड़े कर दिये। बाद में जब उसने देखा कि यह मर गया या जिन्दा है तब उसने रोशनी की ओर देखा कि यह तो मेरे ही पुत्र का सर है। वह महात्मा जी के पास गया तथा अपनी बुरी भावना के लिए उनसे क्षमा मांगने लगा। महात्माजी भी ईश्वर की इस कृपा के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने लगे।

२७०–सामाजिक व्यवस्था

कुसमावती नगरी में सुविचार नामक राजा के एक चन्द्रप्रभा नामक पुत्री थी। जब वह यौवन सपन्न हुई तो एक दिन बसन्त ऋतु में सखियों के साथ बाग में गई। वहाँ पर मनस्वी नामक एक ब्राह्मण

का पुत्र जो बहुत ही सुन्दर था एक वृक्ष के नीचे सो रहा था। ज्यों ही घूमते घूमते वह राज कन्या उस ब्राह्मण पुत्र के पास से निकली तो उसकी नींद खुल गई और वह उठ बैठा। जब राजकन्या व ब्राह्मण पुत्र दोनों की निगाह एक दूसरे से मिली तो दोनों एक दूसरे पर मोहित होकर मूर्छित हो गये। राजकन्या की सखियां राज कन्या को तुरन्त महल में ले गई। परन्तु वह ब्राह्मण पुत्र वहाँ ज्यों का त्यों पड़ा रहा कुछ समय उपरांत दो ब्राह्मण पुत्र मूलदेव व शशि नामक वहाँ से गुजरे मूलदेव ने शशि से पूछा कि शशि, यह मूर्छित क्यों पड़ा हुआ है? शशि ने उत्तर दिया कि यह किसी स्त्री के नेत्ररूपी बाणों से बिंध गया है। इस बात को सुनकर मूलदेव ने उसे पानी छिड़क कर होश में लाने का प्रयत्न किया। जब ब्राह्मण पुत्र होश में आगया तो उसने मूर्छित होने का कारण पूछा। ब्राह्मण पुत्र ने स्पष्ट सारा वृतान्त कह दिया। मूलदेव नें उसे एक गुटका दिया जिसके मुँह में रखने से वह ३२ वर्ष की सुन्दर कन्या बन गया और उसने उस ब्राह्मण पुत्र को बतलाया कि इसको मुंह में से निकाल लेने पर तुम फिर आदमी बन जाओगे। इस बात को बतला कर मूलदेव उस स्त्री रूपी ब्राह्मण पुत्र को अपने साथ लेकर राजा विक्रमादित्य के सामने आकर उपस्थित हुये और कहा कि जब मैं गङ्गा से पार अपनी पुत्र बधू को लेने गया था तो मेरे गाँव में भागी पड़ गई और मेरी स्त्री व पुत्र दोनों खो गये हैं। यह मेरी पुत्र वधू मैं अपने स्त्री पुत्र को ढूँढ़ने जा रहा हूँ। तब तक कृपया आप इसकी देखभाल करिये। जब मैं लौट कर आऊंगा तो इसे ले जाऊंगा। राजा विक्रमादित्य ने इस ब्राह्मण-बधू को रखना अपना पवित्र कर्तव्य समझ कर अपनी पुत्री को बुलाया और बहू रूपी ब्राह्मण पुत्र पुत्री को सौंप दिया व उसकी देख भाल की विशेष चिन्ता रखने को कहा। रात्रि को जब वह दोनों सो रही थीं तो ब्राह्मण बधू ने राजपुत्री से उसकी उदासी का कारण पूछा कन्या ने स्पष्ट कह दिया कि मुझे एक ब्राह्मण

पुत्र से प्रेम हो गया है। ब्राह्मण बधू रूपी ब्राह्मण पुत्र ने कहा कि यदि मैं उससे तुम्हें मिला दूं तो तुम मुझे क्या दोगी। राजकन्या ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारी जन्मभर दासी रहूँगी'। उसने अपने मुंह से गुटका निकाल लिया तथा ब्राह्मण पुत्र बन गया। जब कन्या को बड़ी प्रसन्नता हुई निदान कुछ दिन पश्चात राज कन्या गर्भवती हुई। एक दिन मन्त्री के यहाँ दावत थी। राजा अपने सारे कुटुम्ब के साथ दावत में गया ब्राह्मणवधू भी साथ में थी। मन्त्री का पुत्र उस पर मोहित हो गया। उसने खाना आदि सभी छोड़ दिया। राजा ने मन्त्री के पुत्र को बहुत समझाया परन्तु वह न माना। अन्त में इस भय से कि मन्त्री के पुत्र के मरने से मंत्री की भी मृत्यु हो जायगी व राज्य के लिऐ ऐसा मन्त्री मिल नहीं सकता है, उसने उस ब्राह्मण पुत्र वधू को मन्त्री पुत्र को दे दिया। परन्तु वधू ने कहा कि महाराज मैं आपकी आज्ञा को मानकर इसके साथ तो चली जाऊंगी। परन्तु यह क्षत्री और मैं ब्राह्मण अतः पहले इसे तीर्थ यात्रा कर लेने की आज्ञा दीजिये। इसके पश्चात् शुद्ध होने पर मैं इसके साथ रहूँगी। मन्त्री के बेटे ने मान लिया और तीर्थ यात्रा को चला गया। इधर जब यह ब्राह्मण वधू मंत्री के घर रही थी तो मंत्री के बेटे की वहू ने जो इसके पास ही रहती थी एक दिन अपने कामातुर होने की बात इससे कही। वधू ने कहा कि अच्छा यदि मैं तेरा यह काम करदूं तो तू मुझे क्या देगी। मंत्री के बेटे की बहू ने कहा कि मैं आजन्म तेरी दासी रहूँगी। उसने अपने मुंह से गुटका निकाल कर उसकी काम वासना शांत की और वे अपना सुखमय जीवन बिताने लगे। जब मन्त्री का पुत्र लौट कर आया तो यह अपने मुंह से गुटका निकाल ब्राह्मण पुत्र बनकर खिड़की के रास्ते निकल गया और शशि ब्राह्मण के निकट पहुँच कर सारा किस्सा सुना दिया। शशि ब्राह्मण मूलदेव को अपने साथ में ले और ब्राह्मण का स्वरूप बनाकर अपनी पुत्रवधू मांगने आ गया। राजा ने सारा सच्चा सच्चा किसा कह दिया ब्राह्मण ने कहा यदि ऐसा है तो अपना पुत्री मेरे बेटे को देदो। राजा ने अपनी

बेटी की शादी शशि से करदी। बाद में जब वह ब्राह्मण लड़का आया तो उसने कहा कि इसे तो मेरे द्वारा गर्भ रह गया है अतः यह मेरी बधू है अन्त में इस प्रश्न का निर्णय कराया गया और वह स्त्री शशि के साथ में शादी होने से उसकी ही रही।

(विवाह एक सामाजिक बन्धन है, तथा समाज की इकाई होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति समाज के बन्धन में है। अतः सामाजिक नियम पालने में सभी समाज के आधीन हैं। इस विषय में स्वतंत्रता करने का आशय है कि वह व्यक्ति समाज के नियमों को तोड़ता है और पशुता फैलाना चाहता है। समाज का प्रत्येक नियम प्राणी के लाभ के लिए ही है।

२७१—गुड़ खाये पर गुलगुलों से परहेज करें

एक दुष्ट स्त्री अपने जेठ पर आसक्त थी। एक दिन जब वह स्नान कर रही थी तो देवर ने उसे स्नान करते हुए देख लिया। वह क्रोधित हो बैठी और कहने लगी कि या तो इस दुष्ट देवर को निकालो या मैं भूखी मर जाऊंगी। सभी घर वाले परेशान थे। उसकी ननद जो उसे रात्रि में खाट पर चढ़कर छींके पर पांव रखकर जेठ के पास जाती देख चुकी थी। बोली कि भाभी जी देवर भी दूसरा वर यानी पति के बराबर ही होता है। भाभी जी ने बड़े शान से कहा कि मेरी इतनी जिंदगी हो गई मेरी किसी ने शकल भी नहीं देखी है। मैं तो हया के कारण मरी जारही हूँ। अब ननद से न रहा गया वह बोली कि भाभी जी, नंगी भली कि छींके पाँव। अब तो भाभी जी ने ननद के पाँव छूए और चुपके से खाना शुरू कर दिया।

२७२—पूरबी

ग्रामीण पूर्व देशीयः यह कहावत बहुत प्रसिद्ध है। एक राजा एक

बार रात्रि को वेश्याओं का नृत्य देख रहा था। उसने उत्तर वाली से पूछा कि रात्रि कितनी रही है उसने कहा कि थोड़ी ही रही है। राजा ने पूछा कि तूने यह कैसे जाना। उसने उत्तर दिया कि दीपकों की ज्योति मन्द हो रही है। पश्चिम वाली से पूछा तो उसने भी यही कहा कि थोड़ी ही रही है राजा ने इसका कारण पूछा यह तुमने कैसे जाना। उसने उत्तर दिया कि नथ के मोती ठंडे लगते हैं। दक्षिण वाली ने भी यही कहा। राजा ने पूछा कि आपने यह कैसे जाना। दक्षिण वाली ने उत्तर दिया कि पान मीठा लगता है। अब पूरब वाली का नम्बर आया तो राजा ने यही प्रश्न उससे किया। पूरब वाली ने कहा कि हाँ रात्रि थोड़ी ही रह गई है। राजा ने पूछा कि यह आपने कैसे जाना। पूरब वाली ने स्पष्ट कह दिया कि (मोहिका हँगास लागी है इससे जाना रात थोड़ी ही है) सारी सभा पूरब वाली की योग्यता समझ गई।

(असलियत छिपाने से नहीं छिपती वह किसी न किसी प्रकार से स्पष्ट हो जाती है।

२७३—प्रेम

प्रेम प्रेम सब कोई कहे, प्रेम न चीन्हे कोय।
आठ पहर मौनी रहे, प्रेम कहावे सोय॥
जौ लगी जब जानिये, छूट न कबहू जाय।
जीवन लौ लागी रहे, मूहा माहि समाय॥

एक मियाँजी जाँनमाज बिछाकर नमाज पढ़ रहे थे। उसी समय एक स्त्री अपने प्रियतम के पास जा रही थी तथा रास्ते में उसी के विचारों में लीन थी। वह प्रेम में इस प्रकार डूबी हुई थी कि मियांजी के जाँनमाज पर होकर निकल गई। मियाँ जी ने क्रोधित होकर उसे दो चार गालियां सुनादीं। स्त्री ने उत्तर दिया लानत है आपके ईश्वर प्रेम

पर जो आपने मुझे देख लिया। प्रेम तो मेरा जैसा होना चाहिये जो न आपी मुझे दीखे और आपकी जाँनमान ही।

इसी प्रकार

कहा जाता है कि गोपी यशोदा के यहाँ दीपक जलाने आई। वहां कृष्ण को देखकर इतनी मोहित हो गई व प्रेम में पग गई कि उसने अपनी उँगली को बत्ती से नहीं हटाया और एक टक कृष्ण की ओर देखती रही। जब किसी ने उसे आकर बतलाया कि तेरी उंगली जल रही है तब उसे ध्यान आया। सत्य है दाग कवि ने कहा भी है।

कमाल इश्क है ऐ दाग महव हो जाना।
मुझे खबर नहीं नफा क्या जरर कैसा॥

मैं प्रेम में तन्मय हूँ अतः मुझे घाटे और लाभ की फिक्र तो क्या खबर भी नहीं है।

(प्रेम में जो तन्मय हो जाते हैं उन्हीं का प्रेम प्रेम है।)

२७४—उपमान

साहित्यकारों के मत के अनुसार उपमान उपमेय से अधिक बड़ा माना जाता है।

एक साहित्यज्ञ जी के यहां उनके मित्र पधारे। उन्होंने अपनी कंजूसी के कारण उन्हें खिचड़ी का भोजन कराया। मित्र भी बड़े स्पष्टवादी थे। उन्होंने साहित्यज्ञ जी से कहा कि श्रीमान जी, न तो आपने रोटी ही बनाई और न आप मुझे खिचड़ी ही खिलाना चाहते हैं। साहित्यज्ञजी बोले—अरे भाई, मैंने तो तुम्हारी खातिर में इतनी मेहनत और अपना इतना नुकसान किया है। तुम्हें यह पता नहीं कि यदि ये ही दाने खेत में बोये जाते तो मुझे कितना अनाज प्राप्त होता। तथा उसके बेचने से मुझे कितना धन मिलता। मैंने तो तुम्हारे सामने खिचड़ी रख दी है। आप इच्छा पूर्वक भोजन करिये। मित्र ने उत्तर दिया कि आखिर इस खिचड़ी को मैं किसके साथ खाऊं। कृपया आप

थोड़ा सा घी ही ले आइये जिसके साथ में खिचड़ी खा सकूं" लाचार होकर बेचारे साहित्यज्ञजी को घी लेने जाना पड़ा। जब वे घी वाले के पास पहुँचे तो कहा कि बढ़िया घी देना। घी वाले ने उत्तर दिया महाराज घी ऐसा लीजिये जैसी कि चरबी की जात। साहित्यज्ञ को ध्यान आया कि उपमान उपमेय से बड़ा होता है अतः चरबी खरीदने चाहिये। साहित्य जी ने घी वाले से मना कर चरबी वाले की दूकान का रास्ता संभाला। चर्बी वाले की दूकान पर जाकर वह बोला कि चरबी बढ़िया दीजिये। दूकानदार बोला कि ऐसी चरबी लो जैसी कि बरफ। साहित्यज्ञजी अब चरबी को छोड़कर बरफ लेने चल दिये। बरफ वाले से कहा कि बढ़िया बरफ देना। बरफ वाले ने उत्तर दिया कि बरफ क्या है खांड है। अब साहित्यज्ञजी ने खांड की दूकान की ओर कूंच किया। खांड वाले से साहित्यजी ने पूछा कि बढ़िया खांड है? खांड वाले ने उत्तर दियाकि खांड क्या है बस अमृत हैं साहित्यज्ञ जी यह जानते थे कि अमृत तो इस लोक में दुर्लभ है। साहित्यजी ने पूछा कि भाई अमृत कैसे बनता है, उसको जैसी और कोई वस्तु भी संसार में है। दूकानदार बोला महाराज ठंडे जल में खांड डाल लिजिए वस अमृततुल्य हो जायगा साहित्यज्ञजी ने बस यही अमृत अपने मित्र के सामने जाकर रख दिया। मित्र की इतनी देर में खिचड़ी ठन्डी हो चुकी थी वह उसे वहाँ बैठा २ गालियाँ दे रहा था। अब तो इस शर्वत को देखकर वह आग बबूला हो गया। साहित्यज्ञ ने उत्तर दिया कि तुम्हारी खातिर मैं बड़ी देर की मेहनत के पश्चात् तो इसे ले आया हूं तुम अभी नहीं जानते हो। (उपमत्स्रोषमेयोरुपमानवतीयः) आप इस अमृत तुल्य शर्वत को पीकर मानसिक शान्ति प्राप्त करिये।

(विशेषयोग्यता क्रियात्मक रूप से अनभिज्ञ रहने वालों को हानिकर होती है।)

२७५—विद्या की निन्दा

एक संतजी एक पंडितजी के द्वार पर भिक्षा मांगने आये। पंडितजी ने कहा, 'कहो संत जी, कुछ पढ़े लिखे हो ?' संतजी ने कहा, 'अरे बच्चे, पठितव्यं तदपि मर्त्तव्यं. न पठितव्यं तदपि मर्त्तव्यं फिर दन्त कटाकटेति कि कर्त्तव्यं ?' तो पंडितजी ने कहा, 'यदि यही माना जाय, तो खातव्यं तदपि मर्त्तव्यं न खातव्यं तदपि मर्त्तव्यं, फिर अन्न भसा भसेति कि कर्तव्यं ?' संतजी क्रोधित होकर चल दिये।

२७६–विद्या–दम्भ

'विद्यादम्भ क्षणस्थायी धनदम्भ दिनत्रयम् ।'

एक साहब केवल दो शब्द सीख आये, एक 'वले' और दूसरा 'नमे गोयम्' बस अब तो इनसे जो कोई बोलता था, ये अपने इन्हीं दो शब्दों को इस्तेमाल किया करते थे और अपने गांव में इन्हीं दो शब्दों की बदौलत मौलाना साहब बन रहे थे।

एक दिन अरब के रहने वाले मौलाना साहब का ऊंट खो गया था और वह अपना ऊंट ढूंढ़ते ढूंढ़ते इन दुलफजी पास मौलाना के गाँव से आ निकले। अरब के मौलाना साहब ने इन दुलफजी पास मौलाना से पूछा, शुतुर में दीद मेरा ऊंट देखा है ? इन्होंने कहा, 'वले'=हाँ देखा है। अरब के मौलाना ने कहा, कुजा रफ्त = किधर गया ? इन्होंने कहा, नमे गोयम्=न बताऊंगा। तब अरबवाले मौलाना ने कहा, जब तूने देखा है तो क्यों नहीं बतायेगा ? और अरब के मौलाना को इस बात पर बड़ा गुस्सा आ गया कि देखा है और कहता है कि नहीं बताऊंगा। बस गुस्से में आकर अरब के मौलाना ने दुलफजी मौलाना को खूब पीटा। यह वही लफज मार खाने पर भी रटते जाते थे, 'वले नमे गोयम्=देखा है नहीं बतावेंगे, देखा है नहीं

बतावेंगे तब अरब के मौलाना ने जान लिया कि यह दो ही लफ्ज जानता है।

२७७—खूबसूरती और बुद्धि

एक तहसीलदार बड़े ही बुद्धिमान थे। यहाँ तक कि उनसे बड़े-बड़े अफसर, बड़े-बड़े मामलों में राय लिया करते थे, लेकिन वे कुछ बदसूरत थे। यह देखकर कलेक्टर साहब ने उनसे एक दिन मखौल किया कि क्यों तहसीलदार साहब, जिस समय खुदा के यहाँ खूब-सूरती बंट रही थी, तब आप कहाँ थे? तहसीलदार ने उत्तर दिया—"उस समय मैं जहाँ बुद्धि बंट रही थी, वहाँ था।" यह सुन कलेक्टर साहब शरमिन्दा हो गये।

—×—

२७८—बच्चों को हमीं बुरा [illegible]ते हैं

पैदा होने के समय सम्पूर्ण बच्चों की [illegible]यें शुद्ध और पवित्र हुआ करती हैं। माँ-बाप ही चाहे बच्चों [illegible] सत्यवक्ता, चाहे झूंठा, चाहे चोर; चाहे शाह चाहे व्यभिचारी और चाहे सदाचारी बना दें। यथा—

एक मनुष्य को कुछ झूंठ बोलने तथा चाल से बात करने की आदत थी। अतः उसके बच्चे की भी आदत जैसी ही पड़[illegible]। [illegible] कि बाप ने सोचा कि बच्चा भी हमारा वैसा ही हुआ जाता है। इस भय से उसने उसे उसकी ननसाल भेज दिया। जब कुछ दिन के बाद यह मनुष्य अपनी ससुराल बच्चे के पास गया, तो इसने सोचा कि भला बच्चे की परीक्षा तो लें कि इसका झूंठ बोलना कहाँ तक छूट[illegible] अतः इसने कहा—"बेटा, आज गंगाजी में एक बड़ी भारी [illegible]को फट कर गिर गई।" बच्चा बोला—"दादा, छींटें तो मेरे ऊपर आईं थीं।"
